

अमृतांकुरं विद्युत्प्रदीपं
॥ श्रीः

॥ वालबोधव्योति
प्रहगोचरेण।

गुर्ज गुडलानवर्ति अपद
माजोह तालमुत ज्योति
लिखित गुर्जर श्री

अपा री परिं
भन्दे भाई उमेह
बुक्कनेलर, शीक्षीराह-

(सर्व हक १

श्री “सत्यनारायण” भिन्नि
कर्मास स छाप्यो. “नामा
संख्या १९३३”
नामांति २ श्री
किल्लत ३

यापीठ ग्रंथालय

पीराजिन विभाग

वार्षिक

५ अक्टूबर २०१६

॥ श्रीः ॥

॥ बालबोधज्योतिषसारसंग्रहः ॥

गुर्जरमण्डलान्तर्वर्ति अमदावादनिवासि भट्टे पाह
माणेकलालसुत ज्योतिर्विद् वृन्दावनभट्ट
लिखित गुर्जर टीका सहितः ।

प्रसिद्ध कर्ता,
झवेरभाई उमेदभाई पटेल,
बुकसेलर, रीचीरोड—अमदावाद.

(सर्व हक स्वाधोन).

श्रा “सत्यनारायण” प्रिन्टिंग प्रेसमां पटेल मोतीलाल/
काढीदासे छाप्यो. पानाभाईनी वाडीमां—अमदावाद.

संख्या १९७२



सन १९९६.

आवृत्ति २ जी.

प्रत २१००.

किम्पत चार आना.

૧૨૮, ૬

પિલાપીઠ ગ્રંથાલિલ પ્રસ્તાવન

યથા શીર્વા મગુરાણાં નાગામું બળયો· યથામાં અગાહ,
તદ્વદેદાંગ શાસ્ત્રાણાં જ્યોતિપ મૂર્ધનિ સ્થિતમું ॥ ૧ ॥
અપત્યક્ષાળિ શાસ્ત્રાણિ વિવાદસ્તેષુ કેવલમું ॥

પ્રત્યક્ષણ જ્યોતિષં શાસ્ત્ર ચંદ્રાકૌ યત્ર સાક્ષિણૌ ॥ ૨ ॥

આ વિપયના અંથો અનેક જગ્યાએ પ્રસિદ્ધ થયા છે પરંતુ તે અંથમાં ક્રમવિરુદ્ધતા તથા જે વિપય યોગ્ય છે તે વિજય ન હોયાના કારણથી આ “વાલબોધ ઝાંનિપ સારસગ્રહ” અંથ શુર્જર દીકા સહિત લાભીને પ્રકાશિત કર્યો છે. આ અંથ અમદાવાદ જ્યોતિષ પાડશાળાના સુપ્રય શાસ્ત્રી ગુરુવ્ય જ્યોતિલિંગ ફરસુખરામ હીરાલાઠને ગતાવવાથી તથા તેમની અનુમતિથી છપાવીને પ્રકાશિત કર્યો છે. આ બાળબોધ અંથમાં મંવત્સરાદિ ક્રમથી સર્વ વિપયો આપેલા છે. પાંચ રત્નોથી વિભૂષિત આ બાળબોધ અંથ જ્યોતિપ શાસ્ત્રાધ્યયનાલિલાબિયોને પ્રથમ લખુવા યોગ્ય છે.

કુલવિશેષ વિજ્ઞાસ-આ અંથની પ્રથમાવૃત્તિ અપી જવાથી તથા વિશેષ માંગણી હોવાથી પ્રથમાવૃત્તિમાં ગંડેલા હોપો જ્યોતિઃશાસ્ત્રના ઘણા અંથાદ્વારા હુર કરી તથા તેમાં ઘણું જ સુધારો વધારો કરી આ અંથ પુનઃ પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવ્યો છે. તે પ્રથમાવૃત્તિ સાથે અરખાવનાં મંમળ શકાશે. વિશેષ જ્યોતિઃ-શાસ્ત્રાનુરાગી મલદાશયો આ અંથનો સ્વિકાર કરી લાભ મેળવશે તો મન થયેલો અમ નક્કા થયેલો સમજુ કૃતાર્થ થઈશ.

સર્વહિતંપી.

જ્યોતા થુક ૩ } જોશી વૃન્દાવન મુણેકલેલ.

ખૌમ ૧૦/૬૪ } \ કૃલલુપૂર નવાદરવાજા-અમદાવાદ.

विषयानुक्रमणिका.

| विषय. | पृष्ठांक. | विषय. | पृष्ठांक. |
|----------------------|-----------|---------------------|-----------|
| संज्ञारत्न १. | | | |
| मंगलाचरण | १ | राशि स्वामी | १२ |
| संवत्सरज्ञान | ” | तिर्यङ्गमुख नक्षत्र | ” |
| संवत्सरनाम | २ | अधोमुख नक्षत्र | १३ |
| अयन ज्ञान | ३ | ऊधोमुख नक्षत्र | ” |
| ऋतुज्ञान | ४ | नक्षत्र संज्ञा | १४ |
| मास भेद ज्ञान | ” | पंचक ज्ञान | १५ |
| मास प्रयोजन | ” | योग ज्ञान | १६ |
| मास ज्ञान | ५ | करण ज्ञान | १८ |
| पक्ष तिथिज्ञान | ” | भद्रा ज्ञान | १९ |
| तिथि स्वामि | ६ | करण चक्र | २० |
| नंदादि संज्ञा | ” | भद्रा नाम | २१ |
| वार ज्ञान | ७ | भद्रा वास ज्ञान | ” |
| नक्षत्र ज्ञान | ” | भद्राङ्ग ज्ञान | २२ |
| नक्षत्र स्वामी | ८ | भद्राङ्ग फल | ” |
| अवकहडचक्र | ९ | भद्रा प्रयोजन | २३ |
| गांशि ज्ञान | १० | चन्द्रपात्रवास | २४ |

| योगरत्न २. | | दुष्टयोग परिहार | ३८ |
|-------------------|----|-----------------------|----|
| सिद्धियोग ज्ञान | २५ | आनंदादि योग चक्र | ३९ |
| विरुद्धयोग ज्ञान | २७ | पुष्कर योग | ४१ |
| सिद्धियोग | २९ | कपिलाष्टीयोग | " |
| अमृतसिद्धियोग | " | अर्धोदय योग | " |
| संवर्तक योग | ३० | खर्परयोग | ४२ |
| ऋक्तच योग | " | राज्य भंग योग | " |
| यमघट योग | " | युगांड | ४३ |
| यमदंष्ट्र योग | ३१ | मुहूर्तरत्न ३. | |
| मृत्यु योग | ३२ | वर्ज्य योग | ४३ |
| दग्ध योग | ३३ | घात चन्द्र | ४४ |
| मुशल वज्र योग | " | स्त्रीघात चन्द्र | ४५ |
| रवियोग | ३४ | घात चन्द्र परिहार | " |
| त्रिपुष्कर योग | " | चन्द्र फल | ४६ |
| ज्यालामृत्वी योग | ३५ | तारा फल | ४८ |
| उत्पदादि योग | ३६ | नूतन वस्त्र धारण | ४९ |
| उत्पदादि चक्र | " | स्त्री वस्त्र धारण | ५० |
| आनंदादि योग | ३७ | देव प्रतिष्ठा मुहूर्त | " |
| आनंदादि योग ज्ञान | " | गृहारंभे भूमि शयन | ५१ |

| | | | |
|---------------------|----|------------------------|----|
| गृहारभेद्वष चक्र | ५२ | हवन चक्र | ६३ |
| गृहारंभ मुहूर्त | „ | अग्नि वास | ६४ |
| खात मुहूर्त | ५३ | ऐषज्य कर्म मुहूर्त | „ |
| स्तंभ चक्र | ५४ | रोगमुक्त स्नान | ६५ |
| मोभ चक्र | „ | उत्पन्न रोगे शुभाशुभ | „ |
| द्वारशाखा चक्र | ५५ | सर्प दंशे शुभा शुभ वि. | ६६ |
| कपाड चक्र | ५६ | वाणिज्य कर्म | „ |
| वास्तु पूजन मुहूर्त | „ | क्रय विक्रय मुहूर्त | ६७ |
| गृहपवेश मुहूर्त | ५७ | तैलाभ्यंग | „ |
| कलश चक्र | ५८ | पशुक्रय विक्रय मुहूर्त | ६८ |
| जलाशयारंभ मुहूर्त | „ | संक्रान्ति पुण्य काल | „ |
| कूप चक्र | ५९ | अस्तमां वर्जनीय कर्म | ६९ |
| हल प्रवाह मुहूर्त | ६० | शुक्र विचार | „ |
| हल चक्र | „ | यात्रा मुहूर्त | ७० |
| बीजोसि मुहूर्त | ६१ | दिवशूल | ७२ |
| चुल्ही चक्र | „ | नक्षत्र शूल | ७३ |
| कोलहू चक्र | „ | शूलदोष निवारणार्थ अ. | „ |
| चूड़ी धारण मुहूर्त | ६२ | काल वास | ७४ |
| चूड़ी चक्र | „ | काल राह | „ |

| | | | |
|-----------------------|----|-----------------------|-----|
| योगिनी वास | ७५ | दत्तक युत्र मुहूर्त | ९२ |
| चन्द्रमा वास | ७६ | ज्येष्ठ विचार | ९३ |
| कालवेला विचार | ७७ | संगल विचार | ९५ |
| संस्कार रत्न ४. | | वरकन्ययोः प्रीतिविचार | ९५ |
| ऋतुमतीस्नान | ७८ | वर्ण ज्ञान | ९६ |
| गर्भाधान मुहूर्त | " | वश्य विचार | " |
| पुंसवन सीमंत मुहूर्त | ७९ | ताराबल विचार | ९७ |
| प्रसूती स्नान मुहूर्त | ८० | योनि विचार | ९८ |
| नाम करण मुहूर्त | ८१ | वैर योनि | ९९ |
| दोलारोहण मुहूर्त | ८२ | राशि स्वामी | " |
| अञ्जप्राशन मुहूर्त | " | ग्रह मैत्रि विचार | १०० |
| कर्णवेध मुहूर्त | ८४ | ग्रह मैत्रि चक्र | १०१ |
| मुण्डन मुहूर्त | ८५ | गण मैत्रि | १०२ |
| क्षौरकर्म मुहूर्त | " | भकूट विचार | १०३ |
| अक्षरारंभ मुहूर्त | ८७ | मृत्युषडष्टक | " |
| विद्यारंभ मुहूर्त | ८८ | प्रीतिषडष्टक | १०४ |
| व्रतबंध मुहूर्त | " | द्विद्वादश | १०४ |
| विवाह मुहूर्त | ९२ | नव पंचक | १०५ |
| पुनर्विवाह मुहूर्त | „ | नाडी विचार | " |

(७)

| | | | |
|--------------------|-----|---------------------|-----|
| नाढी फल | १०६ | क्रान्तिसाम्यदोष | १२० |
| वर्ग विचार | १०७ | दग्धा तिथि | „ |
| वर्ग चक्र | „ | बधु प्रवेश मुहूर्त | १२२ |
| कर्त्तरी दोष विचार | १०८ | द्विरागमनमुहूर्त | १२३ |
| सूर्य बल विचार | „ | मिश्रस्तन ५. | |
| गुरु बल विचार | १०९ | जन्मपत्रलेखनप्रकार | १२४ |
| दशमहा दोष विचार | १११ | लग्न प्रमाण | „ |
| पंचशङ्काकाचक्र | „ | जन्मपत्रलेखनोदाहरण | १२५ |
| लक्षा दोष | ११२ | द्वादश भाव | १२८ |
| लक्षा फल | ११३ | दृष्टि विचार | १२९ |
| पात दोष | „ | उच्चनीचग्रह | १३० |
| पात फल | ११४ | पुरुषजातक | १३१ |
| युति दोष | ११५ | वर्षप्रवेशज्ञान | १४० |
| वेध विचार | „ | वर्षदशाज्ञान | १४१ |
| वेध परिहार | ११६ | रविवार कर्म | १४२ |
| यामित्र दोष | „ | सोमवार कर्म | „ |
| पंचक विचार | ११७ | भौमवार कर्म | १४३ |
| एकुर्गल विचार | ११८ | बुधवार कर्म | „ |
| उपग्रह दोष | ११९ | गुरुवार कर्म | „ |

| | | | |
|-------------------|-----|----------------------|-----|
| શુક્રવાર કર્મ | ૧૪૪ | સર્વ મહર્ઘ વિચાર | ૧૪૯ |
| શનિવાર કર્મ | ” | ગર્ભિણી પ્રશ્ન | ૧૫૦ |
| કાર્યકાર્ય પ્રશ્ન | ૧૦૫ | નેત્ર સ્ફુરણ | ” |
| પંથ પ્રશ્ન | ” | અંગ સ્ફુરણ | ૧૫૧ |
| કાર્યસિદ્ધ પ્રશ્ન | ૧૪૬ | રાશિ પ્રધાનતા | ” |
| પણ પ્રશ્ન | ” | જન્મસ્થ ચંદ્ર વર્જ્ય | ૧૫૨ |
| નષ્ટ વસ્તુ પ્રશ્ન | ૧૪૭ | ગ્રંથ સમાપ્તિ સમય | ” |

તૈયાર છે. જ્યોતિષનો અમૂલ્ય અંથ. તૈયાર છે.

વર્ષદળ અનાવવાનો તથા તેનું ઇણાદેશ જોવાનો
અત્યુત્તમ અદ્વિતીય અંથ.

તાજિકસારસંગ્રહ.

શુદ્ધ ગુજરાતી ટીકા અને સ્પષ્ટ ઉદાહરણ સહિત.

આ અંથમાં ત્રણ અધ્યાય પાડવામાં આવ્યા છે.

પહેલા ગણિતાધ્યાયમાં વર્ષદળ અનાવવાનું ગણિત સ્પષ્ટ ઉદાહરણ સાથે, બીજા ભાવાધ્યાયમાં ચણિ ગેઠેલા સ્ર્યુટિંગ રહેનું ઇણ તથા ત્રીજા ઇણાધ્યાયમાં વર્ષદળનું સર્વાલ્પટ્રિય ઇણાદેશ આપવામાં આવ્યું છે. આ અંથનો સંગ્રહ કરવાથી પોતાના લાયોજ પોતાનું વર્ષદળ અનાની શક્યા છે તથા તેનું ઇણાદેશ નેટ્રી શક્યા છે. આ અંથનાં પ્રસિદ્ધ વિદ્વાનોનાં ઉત્તમ સર્ટિફિકેટ મળ્યાં છે. કીમત
૧ ઇંફોઓ. રૂપાલ ખર્ચ ર આના. અંથ ભગવાનું ડેકાલુ.

અંથકર્તા—જોશી વુંદાવનું માણ્ણેકલાલ

કાળુપૂર નવાદવાળ—અમહાવાદ.

॥ श्री गणेशायनमः ॥
 ॥ बालबोध ज्योतिष सारसंग्रहः ॥
 ॥ गुर्जर भाषानुवाद सहितः ॥

॥ मंगलाचरणम् ॥
 गणाधिपं नमस्कृत्य ज्योतिःसारसुसंग्रहम् ॥
 भद्रुचन्द्रावनः कुर्वे लोकानां हितकाम्यया ॥ १ ॥
 गणपतिने नमस्कार करीने ज्योतिषथात्रना सुंदर सारने
 संग्रह भद्र वृंदावन लोडाना हीत डाभनाने वास्ते करे छे. १

प्रथमं संज्ञारत्नं प्रारभ्यते.

संवत्सर ज्ञान.

संवत्कालो अहयुतः कृत्वाशून्यरसैर्दृष्टिः ॥
 शेषाः संवत्सराङ्गेयाः प्रभवाद्याबुधैः क्रमात् ॥ २ ॥
 निकमीय संवत्सरा अ डाभां नव युक्ता द्वी साठने भाग
 आपवाथीन्जे शेष २ हेते प्रभवादि संवत्सरनां नाम अंडितोच्चे
 क्लैपूर्वक अणुवा. २.

(२)

संवत्सर नाम.

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ॥
अङ्गिराः श्रीमुखो भावोयुवाधाता तथैवच ॥ ३ ॥
ईश्वरोबहुधान्यश्च प्रमाथीविक्रमोवृषः ॥
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवोव्ययः ॥ ४ ॥
सर्वजित्सर्वधारीच विरोधी विक्रतिः खरः ॥
नन्दनोविजयश्चैव जयोमन्मथ दुर्मुखौ ॥ ५ ॥
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरी प्रवः ॥
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसु पराभवौ ॥ ६ ॥
प्रवंगः कीलकः सौम्यः साधारण विरोधकृत् ॥
परिधावी प्रमादीच ह्यानन्दोराक्षसोनलः ॥ ७ ॥
पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थीरौद्रुर्मती ॥
दुंडुभी रुधिरोद्धारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ८ ॥

१ प्रभव, २ विलव, ३ शुक्ल, ४ प्रभेऽद, ५ प्रजपति,
६ अङ्गिराः, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ युवा, १० धैता, ११
ईश्वर, १२ अङ्गिरान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम, १५ वृष, १६

चिन्तानु, १७ सुलानु, १८ तारणु, १९ पार्थिव, २० व्यय,
 २१ सर्वजित, २२ सर्वधारी, २३ विरोधी, २४ विक्ती, २५
 घर, २६ नंदन, २७ विजय, २८ जय, २९ भनभय, ३०
 हुम्मेष, ३१ हेमलंघी, ३२ विलंघी, ३३ विकारी, ३४ थार्वरी,
 ३५ खेव, ३६ शुभकृत, ३७ शोभन, ३८ क्रोधी, ३९ विश्वावसु,
 ४० परालव, ४१ खेवंग, ४२ क्षीलक, ४३ सौभ्य, ४४ साधारण,
 ४५ विरोधकृत, ४६ परिधावी, ४७ प्रभादी, ४८ आनंद, ४९
 राक्षस, ५० नल, ५१ पिंगल, ५२ कालयुक्त, ५३ सिङ्घाथी,
 ५४ रैद्र, ५५ हुम्मती, ५६ हुंडुली, ५७ इविरोहगारी,
 ५८ रक्ताक्षी, ५९ क्रोधन, ६० क्षय. ३-८.

अयन ज्ञान.

मकराद्राशिषट्केर्के प्रोक्तं चैवोत्तरायणम् ॥

षट्सुकर्कादितिर्ज्ञेयं दक्षिणं ह्ययनं रवेः ॥ ९ ॥

મકરादि ५७ રાશિના સૂર્યને ઉત્તરાયણ કહે છે અને ફરજિદિ
 ५ રાશિના સૂર્યને દક્ષિણાયન કહે છે. ८.

ऋતु ज्ञान.

मीन मेषगते सूर्ये वसंतः परिकीर्तिः ॥

वृषभेमिथुने श्रीष्ठो वर्षा सिंहे-थकर्कटे ॥ १० ॥

(४)

कन्यायां च तुलायां च शरद्वतुरुदाहृतः ॥
हेमंतो वृश्चिक द्वंद्वे शिशिरोमृगकुंभयोः ॥ ११ ॥

भीन अने भेषनो सूर्य होय तो वसांतऋतु, वृषभ अने भिथुननो सूर्य होय तो व्रीणऋतु, उर्क अने सिंहनो सूर्य होय तो वर्षाऋतु, इन्या अने तुणानो सूर्य होय तो शरदऋतु, वृश्चिक अने धननो सूर्य होय तो हेमंतऋतु तथा भक्त अने कुंभनो सूर्य होय तो शिशिरऋतु जाणुवी. १०-११.

मास येद् ज्ञान.

मासोदर्शावधिश्चान्द्रः सौरः संक्रमणाद्रवेः ॥
त्रिंशद्विनः सावनिको नाक्षत्रोविधु संब्रमात् ॥ १२ ॥

शुक्लपक्षनी प्रतिपदाथी अभावास्या सुधी चांदभास क-
हेवाय छे. सूर्यनी एक राशि लोगववाथी सौरभास कहेवाय छे,
कृष्णपक्षनी प्रतिपदाथी पूर्णिमा सुधी सावनभास कहेवाय
छे तथा चांद्र नक्षत्र पर्यंत नाक्षत्र भास कहेवाय छे. १२.

मास प्रयोजन.

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनः स्मृतः ॥
पितृकर्येषु चान्द्रस्यादार्क्ष दान व्रतेषु च ॥ १३ ॥

(५)

विवाहादि कार्योभां सैरभास कहेलो छे, यशादि कार्योभां
सावनभास कहेलो छे, पितृकार्यभां चांद्रभास अने दानत्रतभां
नाक्षत्रभास अहणु करवो अवुं पंडितो कहे छे. १३.

मास ज्ञान.

मासश्चैत्रोथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढ संज्ञकः ॥
ततस्तु श्रावणो भाद्रपदाथाश्विन संज्ञकः ॥ १४ ॥
कार्तिको मार्गशीर्षश्च पौषो माघोथ फाल्गुनः ॥ १५ ॥

१ चैत्र, २ वैशाख, ३ ज्येष्ठ, ४ आषाढ, ५ श्रावण,
६ भाद्रपद, ७ अश्विन, ८ कार्तिक, ९ भागशीर्ष, १० पौष,
११ माघ, १२ फाल्गुन आ आर भासनां नाम छे. १४-१५

पक्षतिथि ज्ञान.

शुक्ल कृष्णावुभौ पक्षौ देव पित्रे च कर्मणि ॥
प्रतिपञ्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम् ॥ १६ ॥
चतुर्थी पंचमी पष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा ॥
नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशी ततः ॥ १७ ॥
त्रयोदशी ततोङ्गेया ततः प्रोक्ता चतुर्दशी ॥
पौर्णिमा शुक्लपक्षेतु कृष्णपक्षेत्वमासमृता ॥ १८ ॥

(૬)

દેવકમ્ભાં શુક્લપક્ષ અને પિતુકમ્ભાં કૃષ્ણપક્ષ એમ બે
પક્ષ છે. તિથિઓનાં નામઃ—પ્રતિપદા, દ્વિતીયા, તૃતીયા, ચતુર્થી,
પંચમી, ષષ્ઠી, સપ્તમી, અષ્ટમી, નવમી, દશમી, એકાદશી,
દ્વાદશી, ત્રૈયાદશી, ચતુર્દશી અને શુક્લપક્ષમાં પૂર્ણિમા
તથા કૃષ્ણપક્ષમાં અમાવાસ્યા કહી છે. ૧૬-૧૮.

તિથિ સ્વામી.

ક્રમાન્તિથીનાં પતયોડમિધાતૃ ગૌરી ગણેશોડહિ ગુહો
રવિશ્ર || મહેશ દુર્ગાન્તક વિશ્ર વિષ્ણુ કામેશ
સોમાઃ પિતરોહિદર્શ || ૧૯ ||

પ્રતિપદાનો સ્વામી અજિન, દ્વિતીયાનો સ્વામી અજાલ,
તૃતીયાનો સ્વામી પાર્વતી, ચતુર્થીનો ગણેશ, પંચમીનો સર્પ,
ષષ્ઠીનો કાર્તિકસ્વામી, સપ્તમીનો સૂર્ય, અષ્ટમીનો શીવ, નવ-
મીની દુર્ગાદેવી, દશમીનો યમ, એકાદશીનો વિશ્વદેવ, દ્વાદશીનો
વિષ્ણુ, ત્રૈયાદશીનો કામદેવ, ચતુર્દશીનો શીવ, પૂર્ણિ-
માનો ચંદ્ર અને અમાવાસ્યાનો પિતૃદેવ આ પ્રમાણે તિથિ-
યોના સ્વામીઓ કહેલા છે. ૧૬

નન્દાદિ સંજ્ઞા.

નન્દાભદ્રા જયા રિક્તા પૂર્ણાશ્રતિથયઃ ક્રમાત् ||
વારત્રયં સમાવર્ત્ય તિથયઃ પ્રતિપન્મુખાઃ || ૨૦

(૭)

પ્રતિપદાથી આરંભીને તણું તણવાર ગણવાથી નંદા આદિ
તિથિઓની સંજ્ઞા હોય છે. ૧-૬-૧૧ નંદા, ૨-૭-૧૨
લદ્રા, ૩-૮-૧૩ જ્યા, ૪-૯-૧૪ રિક્તા, ૫-૧૦-૧૫
પૂર્ણાનિથિ કહેવાય છે. ૨૦

વાર જ્ઞાન.

આદિત્યશ્વન્દ્રમાભૌમો બુધશ્વાથ બૃહસ્પતિઃ ॥

શુક્રઃ શનૈશ્વર શ્વૈતે વાસરાઃ પરિકીર્તિતાઃ ॥ ૨૧ ॥

આદિત્ય (સૂર્ય), ચંદ્રમા, ભૌમ (મંગળ), બુધ, બૃહસ્પતિ
(ગુરુ), શુક્ર અને શનિ આ સાત વાર કહેલા છે. ૨૧.

ગુરુશ્વન્દોબુધઃ શુક્રઃ શુમાવારાઃ શુભે સ્મર્તાઃ ॥

કૂર્ગસ્તુ કૂર્કુલ્યેષુ ગ્રાદ્યા ભૌમાર્ક સૂર્યજાઃ ॥ ૨૨ ॥

ગુરુ, ચંદ્ર, બુધ અને શુક્ર આ શુલવાર કહેલા છે તે શુલ
કાર્યભાં શુલ કરુને આપે છે. તથા મંગળ, સૂર્ય અને શનિ
આ કૂર્ગવાર કહેલા છે તે કૂર્ગકર્મભાં આદ્ય છે. ૨૨

નક્ષત્ર જ્ઞાન.

અશ્વિની ભરણીચૈવ કૃતિકા રોહિણી મૃગઃ ॥

આદ્રી પુનર્વસુઃ પુષ્યસ્તતોઽશ્લેષા મઘા તથા ॥ ૨૩ ॥

पूर्वाकाल्युनिका तस्मादुत्तराकाल्युनी ततः ॥
 हस्तश्रित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनंतरम् ॥ २४ ॥
 अनुराधा ततोज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥
 पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजिच्छूवणस्तथा ॥ २५ ॥
 धनिष्ठा शतताराख्यं पूर्वाभाद्रपदा ततः ॥
 उत्तरा भाद्रपदैव रेवयेतानि भानिच ॥ २६ ॥

१ अधिनी, २ भरणी, ३ कृतिका, ४ रेहिणी, ५ भृग-
 शीर्ष, ६ आद्री, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १०
 भधा, ११ पूर्वाकाल्युनि, १२ उत्तराकाल्युनि, १३ हस्ता, १४
 श्रित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा,
 १९ भूषा, २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा, २२ अभिजित, २३
 श्रवण, २४ धनिष्ठा, २५ शतभिष्ठा, २६ पूर्वाभाद्रपद, २७
 उत्तरा भाद्रपद, २८ रेवती आ अष्टावीस नक्षत्रो छે।

नक्षत्र स्वामि.

दस्योयमोऽनलो धाता चन्द्रोरुद्रोऽदितिर्गुरुः ॥
 भुजंगमश्चपितरे भगोर्यम दिवाकरौ ॥ ५७ ॥

त्वष्ट्रावायुश्च शक्राग्नि मित्रः शुक्रश्चनिर्झितिः ॥
जलं विश्वेविधिर्विष्णु वासवो वरुणस्तथा ॥ २८ ॥
अजैकपादहिंसुध्यः पुषेति कथितोबुधैः ॥
अष्टाविंशति मंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ॥ २९ ॥

अश्विनीनो स्वाभी अश्विनीकुमार, लरणीनो यम, कृतिनो अग्नि, रेखिणीनो अक्षया, मृगरीषीनो अंद्रभा, आद्रीनो शीव, पुनर्वसुनो अदिति, पुष्यनो बहुस्पति, आश्वेषानो सर्प, भधानो पितृहेव, पूर्वाङ्कालगुनिनो अग्नेव, उत्तराङ्कालगुनिनो अर्यभा, हस्तनो सूर्य, चित्रानो विश्वकर्मा, स्वातीनो वायु, विशाखानो ईंद्र अने अग्नि, अनुराधानो सूर्य, ज्येष्ठानो ईंद्र, भूषनो निर्झिति, पूर्वापादानो ज्येष्ठ, उत्तरापादानो विश्वहेव, अलिङ्गतरो विधि, अवणुनो विष्णु, धनिष्ठानो वसु, शतभिषानो वरणु, पूर्वाभाद्रपदनो अजयरणु, उत्तरा भाद्रपदः नो अहिंसुध्य अने रेततीनो पुष्पा; आ प्रभाषे अठावीश नक्षत्रोना स्वाभीच्छा पंडितोच्चे कडेला છે. ૨૭-૨૮. .

चूचेचोला अश्विनी, लीलूलेलो भरणी, आ-
ईऊर-कृत्तिकं, ओवावीवू रोहिणी, वेवोकाकीमृग-
रीष, कुघड़च्छ आद्रा, केकोहाही पुनर्वसु, हूहेहोडा

पुष्य, ढीङ्गडेडो आश्लेषा; मामीमूमे मघा, मोयटी-
दृ पूर्वाफाल्गुनि, टेटोपापी उत्तराफाल्गुनि, पूषणठ
हस्त, पेपोरारी चित्रा, रुरेरोता स्वाती, तीतूतैतो
विशाखा, नानीनूने अनुराधा, नोयायीयू ज्येष्ठा,
येयोभाभी मल्, भूधाफाढा पूर्वाषाढा, भेभोजाजी
उत्तराषाढा, जूजेजोखा अभिजित, खीखूखेखो
श्रवण, गागीगूगे धनिष्ठा, गोसासीमू शतभिषा,
सेसोदादी पूर्वाभाद्रपद, दूथज्ञत्र उत्तराभाद्रपद, देदो-
चाची रेवती.

એક નક્ષત્રના ચાર ચરણુ હોય છે અને તે દરેક ચરણુમાં
જુદા જુદા અક્ષરો આવે છે જીવી રીતે ચૂચેચોલા અશ્વિની,
લીલુલેલો ભરણી આ પ્રમાણે દરેક નક્ષત્રના ચરણુના અક્ષરો
ઉપર પ્રમાણે સમજુ લેવા.

રાશિ જ્ઞાન.

सप્તવિંશતિ ભાનાંચ નવભર્નવભિ:પદૈ: ॥

અશ્વિની પ્રમુખાનાં ચ મેષાદ્યા રાશય: સ્મૃતાઃ ॥ ૩૦

અભિજિતને છોડીને અશ્વિની આદિ સત્તાવીસ નક્ષત્રાનાં
નવ નવ ચરણો ભળીને મેપાદિ બાર રાશિયો કહી છે. ૩૦.

अश्विनी भरणी कृत्तिका पादमेकं मेषः ॥ १ ॥
 कृत्तिकायास्त्रयः पादारोहिणी मृगशिरार्द्धं वृषभः ॥ २ ॥
 मृगशिरार्द्धमाद्रा पुनर्वसु पादत्रयं मिथुनः ॥ ३ ॥
 पुनर्वसु पादमेकं च पुष्यमाश्लेषान्तं कर्कः ॥ ४ ॥
 मघा पूर्वाउत्तराफाल्गुनी पादमेकं सिंहः ॥ ५ ॥
 उत्तराफाल्गुनित्रयः पादाः हस्तश्चित्रार्द्धं कन्या ॥ ६ ॥
 चित्रार्द्धं स्वाती विशाखा पादत्रयं तुला ॥ ७ ॥
 विशाखा पादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ॥ ८ ॥
 मूलं च पूर्वाषाढोत्तराषाढा पादमेकं धनुः ॥ ९ ॥
 उत्तरायास्त्रयः पादाः श्रवण धनिष्ठार्द्धं मकरः ॥ १० ॥
 धनिष्ठार्द्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा पादस्त्रयः कुंभः ॥ ११ ॥
 पूर्वाभाद्रपदा पादमेकमुत्तराभाद्रपदा रेवत्यन्तं मीनः ॥ १२ ॥

अश्विनीना चार चरणे तेभज भरणीना चार चरणे अने
 कृत्तिकानो एक चरणे एवां नव चरणे भणी एक भेष राशि
 थष. कृत्तिकाना नाण चरण, रौद्रिणीना चार चरणे अने मृग
 शीषानां ऐ चरणे मणी वृषभ राशि थष. आ प्रभाषे मिथुन
 आदि राशियोने नीचेना चक्रां सप्त समंज्ञ लेवी.

आलाई मेष, बावाऊ वृषभ, कालाघा मिथुन,
डाहा कर्क, माया सिंह, पात्रण कन्या, राता तुला,
नोया वृश्चिक, भाधाफाढा धन, खाजा मकर, गोसा
कुंभ, दाचाज्ञाथाक्षा मीन.

राशि स्वामि.

मेष वृश्चिकयो भौमः शुक्रोवृष तुलाधिपः ॥
बुधः कन्या मिथुनयोः कर्कस्याधिपतिर्विधुः ॥३१॥
स्यान्मीन धनुषोर्जीवः शनिर्मकरुंभयोः ॥
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥३२॥

मेष अने वृश्चिकनो स्वामी भंगण, वृषभ अने तुलानो
स्वामी शुक्र, कन्या अने मिथुननो स्वामी धनुष, कर्कनो स्वामी
चंद्रभा, मीन अने धननो स्वामी गुरु, भक्त अने कुंभनो
स्वामी शनि तथा सिंहनो स्वामी सूर्य छे. ३१-३२.

तिर्यङ्गमुख नक्षत्र.

रेवती युगलं ज्येष्ठा मैत्रं हस्त त्रयं मृगः ॥
पुनर्वसुश्च विज्ञेयो गणस्तिर्यङ्गमुखो बुधैः ॥ ३३ ॥

(१३)

बीजरोपंच वाणिज्यं सर्वसिद्धं च कारयेत् ॥
वाहनानि च यंत्राणि गमनं च विधियते ॥ ३४ ॥

રેવતી, અશ્વિની, ન્યેષા, અતુરાધા, હરત, ચિત્રા, સ્વાતી,
મૃગશીર્ષ અને પુનર્વસુ આ તિર્યંગમુખ નક્ષત્રો જાણુંાં. આ
નક્ષત્રોમાં બીજરોપણ, વાણિજ્યકર્મ, વાહન, યંત્ર અને ગમન
આ સર્વ સિદ્ધિકારક છે. ૩૩-૩૪.

અધોમુખ નક્ષત્ર.

પૂર્વાત્રયં મઘાશ્લેષા વિશાખા કૃત્તિકા યમઃ ॥
મૂલં ચાધોમુખોજ્ઞેયો નવકોયં ગણોબુધૈઃ ॥ ૩૫ ॥
ભૂકાર્યમુગ્રકાર્ય ચ ખનનં વિવરસ્ય ચ ॥
યુદ્ધં ચાધોમુખં યચ્ચતકાર્ય કારયેદબુધઃ ॥ ૩૬ ॥

પૂર્વાશાદ્ગુનિ, પૂર્વાખાદા, પૂર્વાભાદ્રપદ, આશ્લેષા, વિશાખા,
કૃત્તિકા, ભરણી અને ભૂળ આ અધોમુખ નક્ષત્રો જાણુંાં. આ
નક્ષત્રોમાં ભૂમિ આમાહિ કામ, ઉત્કામ, ઓદવાનું કામ, ગુરું
તથા યુદ્ધકાર્ય કરવું શે. ૩૫-૩૬.

ઉધ્ર્વમુખ નક્ષત્ર.

ઉત્તરાત્રિતયં પુષ્યો રોહિણ્યાર્દ્દ શ્રुતિ ત્રયમઃ ॥
ઉધ્ર્વ વકો ગણો જ્ઞેયો નક્ષત્રાણાં મનીષિભિ: ॥ ૩૭ ॥

**प्रासादच्छत्र गेहानि प्राकार्थ्वज तोरणम् ॥
नानाभिषेकमश्वं च कुर्यादृध्वमुखे गणे ॥ ३८ ॥**

ઉत्तराशाल्यगुनि, ઉત्तराखादा, ઉત्तराभाद્રપદ, પુષ्य, રોહिणી,
આર્ડ્રા, અવણ, ધનિષ્ઠા અને શતભિષા આ નક્ષત્રો જિદ્વિમુખ
ખણુંબાં. આ નક્ષત્રોને વિષે દેવમહિર ખાંધવું, ધત્ર ધારણ કરવું,
ધર ખાંધવું, ડોટ ખાંધવો, ધવળ તોરણ ખાંધવાં, રાજ્યાભિષેક
કરવો, તથા અથ્વ ઉપર આરોહણ કરવું શુલ છે. ૩૭-૩૮.

નક્ષત્ર સંજા.

चરं ચલં સ્મૃતં સ્વાતી પુનર્વસુ શ્રુતિત્રયમ् ॥
કૂરમુગ્રં મધા પૂર્વા ત્રિતયં ભરણી તથા ॥ ૩૯ ॥
ધ્રુવં સ્થિરં વિનિર્દિષ્ટં રોહિણી ચોત્તરાત્રયમ् ॥
તીક્ષ્ણ દોરુણમશ્લેષા જ્યેષ્ઠાર્દ્રમૂલમેવચ ॥ ૪૦ ॥
લઘુક્ષિપ્તં સ્મૃતં પુષ્યં હસ્તોશ્વિન્યભિજિત્તથા
મૃદુમૈત્રં સ્મૃતં ચિત્રાનુરાધા રેવતી મૃગઃ ॥ ૪૧ ॥
મિશ્રં સાંધારણ પ્રોક્તં વિશાખા કૃતિકાત્થાં ॥
નક્ષત્રેષ્વેષુ કર્માણિં નામતુલ્યાનિ કાર્યેત ॥ ૪૨ ॥

સ્વાતી, પુનર્વસુ, અવણ, ધનિષ્ઠા, અને શતભિષા આ નક્ષત્રો ચર અને ચળ સંજ્ઞક છે. મધા, પૂર્વિકાલગુનિ, પૂર્વિખાદ્રપદ અને ભરણી આ નક્ષત્રો કૂર અને ઉત્ત્ર સંજ્ઞક છે. રોહિણી, ઉત્તર ક્રાલગુનિ, ઉત્તરાખાદા અને ઉત્તરાભાદ્રપદ આ નક્ષત્રો ધ્રવ અને સ્થિર સંજ્ઞક છે. આશ્લેષા, જ્યેષ્ઠા, આદ્ર્ણ અને ભૂળ આ નક્ષત્રો તીક્ષ્ણ અને દારણ સંજ્ઞક છે. પુષ્ય, હુસ્ત, અધિની અને અભિજિત્ આ નક્ષત્રો લધુ અને ક્ષિપ્ર સંજ્ઞક છે. ચિત્રા, અનુરાધા, રેવતી અને ભૃગશીર્ષ આ નક્ષત્રો મૃહુ અને મૈન સંજ્ઞક છે. વિશાખા અને હૃત્યિકા આ નક્ષત્રો મિશ્ર અને સાંવારણ સંજ્ઞક છે. આ નક્ષત્રોનું સંજ્ઞાકળ નામાનુસાર સમજી તે તે નક્ષત્રોભાં ઉક્ત કાર્ય કરવું. ૩૬-૪૨.

પંચક જ્ઞાન.

**વાસવોત્તરદલાદિ પંચકે યામ્યદિગ્ગમનગેહ ગોપનમ્ર
પ્રેતદાહ તૃણ કાષ સંગ્રહ શય્યકાવિતતનં ચ વર્જયેત्**

ધનિષ્ઠા નક્ષત્રના ઉત્તરાધીથી આરંભીને રેવતી પર્યંત પાંચ નક્ષત્રોને પંચક કહે છે. અર્થાત્ કુંલ અને મીનના ચંદ્રમા પંચક કહેવાય છે. તેમાં દક્ષિણ દિશાની યાત્રા, ગૃહાસ્થાદન, પ્રેતુદાહ, ધાંસ અને કાષનો સંબંધ તથા શય્યા (ખાટદો) ભૂર્વો ઈત્યાદિ વર્જિત છે. ૪૩. *

(१६)

योग ज्ञान.

**वाक्पतेरकं नक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेव च ॥
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादक्षशेषतः ॥ ४४ ॥**

पुण्य नक्षत्रथी सूर्य नक्षत्र सुधी गण्णी अने श्रवण नक्षत्रथी चंद्र नक्षत्र सुधी गण्णी ते घने संभ्याएने युक्त इरी सत्तावीसनो भाग आपवाथी जे शेष २हे ते विष्टुभादि योग जाणुवा. उदाहरण—संवत् १६६५ना इश्वरुन सुधी पूर्णिमा अने शनिवारनो योग जाणुनो छे तो सूर्य नक्षत्र पूर्वाभाद्रपद छे. पुण्य नक्षत्रथी पूर्वाभाद्रपद सुधी गण्णवाथी १८ संभ्या थर्द अने श्रवणथी दिन नक्षत्र पुर्वाइश्वरुनि सुधी गण्णवाथी १७ संभ्या थर्द, ते घनेनो योग इरवाथी ३५ संभ्या थर्द; तेने २७नो भाग आपवाथी शेष ८ रही ते विष्टुलथी गण्णवाथी आठमो धूति योग आवेंछे. अ प्रभाण्ये सत्तावीसे योगो जाणी लेवा. ४४.

**विष्टुभः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥
अतिगण्डः सुकर्माच धृतिः शूलस्तथैव च ॥ ४५ ॥
गण्डो वृद्धिर्धुकश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ॥
वज्र सिद्धिं व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥ ४६ ॥**

सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रोवैधृतिः क्रमात् ॥
सप्तविंशति योगास्तु कुर्युनाम समं फलम् ॥ ૪૭ ॥

૧ વિષકંલ, ૨ પ્રીતિ, ૩ આયુષ્યમાન, ૪ સૌલાગ્ય, ૫
શોભન, ૬ અતિગંડ, ૭ સુકર્મા. ૮ વૃત્તિ, ૯ શળ, ૧૦ ગંડ,
૧૧ વૃદ્ધિ, ૧૨ ધૂન. ૧૩ વ્યાધાત, ૧૪ હર્ષણ, ૧૫ વજ, ૧૬
સિદ્ધિ, ૧૭ વ્યતીપાત, ૧૮ વરીયાન, ૧૯ પરિધિ, ૨૦ શિવ,
૨૧ સિદ્ધ, ૨૨ સાધ્ય, ૨૩ શુલ, ૨૪ શુદ્ધિ, ૨૫ અનુ. ૨૬
~દ્ર, ૨૭ વૈવૃતિ આ સત્તાવીસ યોગો નામના તુલ્ય ઇણ
આપે છે. ૪૫-૪૭.

વિરુદ્ધસંજ્ઞા ઇહ યેચ યોગાસ્તે પામનિષ્ટઃ ખલુપાદ આદ્ય:
સવैધृતિસ્તુવ્યતિપાતનામા સર્વોપ્યનિષ્ટઃ પરિઘસ્ય
ચાર્ધમ् ॥ ૪૮ ॥ તિસ્સસ્તુ યોગે પ્રથમે ચ વબ્રે વ્યા-
ધાત સંજ્ઞે નવપંચ શૂલે ॥ ગણદેડતિગણદે ચ ષડે
વનાદ્યઃ શુભેષુ કાર્યેષુ વિર્જનીયાઃ ॥ ૪૯ ॥

પૂર્વોક્ત યોગો ભાંથી ને વિરુદ્ધ યોગ હોય તેનો પ્રથમનો
ચતુર્થાંશ (ચ્યાયાભાગ) વર્જિંત છે, વ્યતીપાત અને વૈવૃતિ સં-
પૂર્ણાંવર્જિંત છે, પરિધિ યોગ અડધો વર્જિંત છે, વિષકંલ અને
વજની ત્રણ ત્રણ ધડી, વ્યાધાતની નવ ધડી, શળની પાંચ

ધરી અને ગંડ તથા અતિગંડની છ છ ધરી શુલ કાર્યાં
વર્જિંત છે. ૪૮-૪૬.

કરણ જ્ઞાન.

ગતાશ્રતિથયોદ્ભયાંનિમાઃ શુક્ળાદિતઃ ક્રમાત् ॥
બવાચ કરણ પૂર્વેજ્ઞેય સૈકં પરેદલે ॥ ૫૦ ॥

શુક્લપક્ષની પ્રતિપદાથી આરંભીને ગત તિથિયોની
સંખ્યાને એથી ગણી સાતનો ભાગ આપવાથી જે શેષ રહે તે
પૂર્વાહ્ની વિષે ખવાહિ કરણેં અણુવા, તથા તેમાં એક ઉમેરવા-
થી બીજી દલને વિષે ખવાહિ કરણેં આને છે. ૫૦.

બવશ્ર બાલવશૈવ કૌલવસ્તૈતિલ સ્તથા ॥
ગરશ્વાવણિજો વિષ્ટઃ સસૈતાનિ ચરાણિચ ॥ ૫૧ ॥
કૃષ્ણ પક્ષે ચતુર્દશ્યાં શકુનિઃ પશ્ચિમે દલે ॥
ચતુર્ષષ્પદશ નાગશ્ચ અમાવાસ્યા દલેદયે ॥ ૫૨ ॥
શુક્લ પ્રતિપદાયાશ્ચ કિંસ્તુમ્રઃ પ્રથમેદલે ॥
સ્થિરાણ્યેતાનિ ચત્વારિ કરણાનિજગુર્બુધાઃ ॥ ૫૩ ॥
શુક્લપ્રતિપદાંતે ચ બવાખ્યઃ કરણોમવેત્ ॥
એકાદશૈવ જ્ઞેયાનિ·ચર સ્થિર વિભાગતઃ ॥ ૫૪ ॥

(૧૬)

૧ ખવ, ૨ ખાલવ, ૩ ડોલવ, ૪ તૈતિલ, ૫ ગર, ૬ વિષુજ, ૭ વિષિ આ સાત કરણું ચર સંજ્ઞક જાણુવા. કૃષ્ણપક્ષની ચતુર્દશીના ભીજ દલને વિષે શકુની નામ કરણું હોય છે. અમાવાસ્યાના પૂર્વદલમાં ચતુર્પદ કરણું તથા પચ્ચિમ દલમાં નાગ કરણું હોય છે. શુક્લપક્ષની પ્રતિપદાના પ્રથમ દલમાં કિંસુન્ધ કરણું હોય છે. પંડિતોએ આ ચાર કરણુંને સ્થિર સંજ્ઞક કહેલા છે. શુક્લ પ્રતિપદાના અંતમાં બન કરણું હોય છે. આ પ્રમાણે અગ્નીઆર કરણેં ચર અને સ્થિર લેદથી એ પ્રકારના હોય છે તે પૂછ ૨૦ નીચેના શુક્લ અને કૃષ્ણ પક્ષનાં ડોષ્ટો ઉપરથી સ્પષ્ટ સમજ લેવા. ૫૧-૫૪.

ભદ્રા જ્ઞાન.

દશમ્યાંચ તૃતીયાયાં કૃષ્ણે પક્ષે પરેદલે ॥
 સસમ્યાં ચ ચતુર્દશ્યાં વિષિઃ પૂર્વેદલેસ્મૃતા ॥ ૫૫ ॥
 એકાદશ્યાં ચતુર્થ્યાંચ શુક્લેપક્ષે પરેદલે ॥
 અષ્ટમ્યાં પૂર્ણિમાયાંચ ભદ્રા પૂર્વેદલેસ્મૃતા ॥ ૫૬ ॥

કૃષ્ણપક્ષમાં દથભી અને તૃતીયાના ભીજ ભાગમાં ભદ્રા હોય છે, તેમજ સપ્તમી અને ચતુર્દશીના પહેલા ભાગમાં હોય છે. શુક્લપક્ષમાં એકાદશી અને ચતુર્થીના ભીજ ભાગમાં તથા અષ્ટમી અને પૂર્ણિમાના પહેલા ભાગમાં લંદ્રા કષી છે. ૫૫-૫૬.

॥ शुक्लपश्चकरणचक्र ॥

| | | | | | | | |
|--------------|----------|---------|---------|----------|----------|----------|----------------|
| पतिपदा | द्वितीया | चतुर्था | पंचमी | षष्ठी | सप्तमी | अष्टमी | तिथिः |
| किंस्तुत्प्र | बालव | तेतिल | वणिज | वन | कालव | गर | विष्टि पूर्वदल |
| वन | कौलव | गर | विष्टि | बालव | तेतिल | वणिज | वन परदल |
| नवमी | दशमी | एकादशी | द्वादशी | त्रयोदशी | चतुर्दशी | पूर्णिमा | तिथिः |
| बालव | तेतिल | वणिज | वन | कौलव | गर | विष्टि | पूर्वदल |
| कौलव | गर | विष्टि | बालव | तेतिल | वणिज | वन | परदल |

॥ कृष्णपश्चकरणचक्र ॥

| | | | | | | | |
|--------|----------|---------|---------|----------|---------------|--------------|---------|
| पतिपदा | द्वितीया | चतुर्था | पंचमी | षष्ठी | सप्तमी | अष्टमी | तिथिः |
| बालव | तेतिल | वणिज | वन | कौलव | गर | विष्टि बालव | पूर्वदल |
| कौलव | गर | विष्टि | बालव | तेतिल | वणिज | वन कौलव | परदल |
| नवमी | दशमी | एकादशी | द्वादशी | त्रयोदशी | चतुर्दशी | अमावास्या | तिथिः |
| तेतिल | वणिज | वन | कौलव | गर | विष्टि शक्कनी | चतुर्दश नागा | पूर्वदल |
| गर | विष्टि | बालव | तेतिल | वणिज | वन | कौलव | परदल |

(२१)

મદ્રા નામ.

કરાલી નન્દની રૈદ્રી દુર્મુહી સુમુહી તથા ॥
 મિશ્રી ચ વૈષ્ણવી હંસી હૃષ્ટાનામાનિ ભદ્રયા ॥ ૫૭॥
 ૧ કરાલી, ૨ નન્દની, ૩ રૈદ્રી, ૪ દુર્મુહી, ૫ સુમુહી,
 ૬ મિશ્રી, ૭ વૈષ્ણવી, ૮ હંસી. આ આઠ ભદ્રાનાં નામ છે. ૫૭.

ભદ્રાવાસ જ્ઞાન.

મીને મેષે ચ સિંહે અલિનિ નિવસતે સ્વર્ગલોકે ચ
 ભદ્રા । કન્યાયાંતૌલિસંસ્થે ધનુષિ ચ મકરે નાગલોકે
 સ્થિતિશ્ચ ॥ કર્કે કુંભેવૃષેસ્યાન્મિથુનહિમકરે વર્તતે
 મર્ત્ય લોકે । જ્યોતાચન્દ્રપ્રવાહાત્રિભુવનવિજયા મર્ત્ય
 સંસ્થાવિવર્જયા ॥ ૫૮ ॥

મીન, મેષ, સિંહ અને વૃથિકના ચંદ્રમા હોય તો ભદ્રાનો
 વાસ સ્વર્ગ લોકમાં જાણુંબો. કન્યા, તુણા, ધન અને મકરના
 ચંદ્રમા હોય તો ભદ્રાનો વાસ પાતાળ લોકમાં જાણુંબો. તથા
 કર્ક, કુંભ, વૃષભ અને ભિથુનના ચંદ્રમા હોયતૌ ભદ્રાનો વાસ
 ભૂત્યુલોકમાં જાણુંબો. આ પ્રકારે ચંદ્રમાની ગતિથી ગમન કરવા-
 વાળી ભદ્રાત્રિભુવનને વિષે વિજય કરે છે. મનુષ્ય લોકમાં
 રહેલી ભદ્રા શુભ કાર્યમાં વર્જિંત છે. ૫૮.

(२२)

ભદ્રાજ્ઞાન.

નાભ્યસ્તુપંચવદનેથગલે તથૈકા
 વક્ષોદરૈકસહિતં નિયતંચતસ્થઃ ॥
 નાભ્યાંકટૌષડથ પુચ્છલતાચતિસ્થો
 વિષ્ટેબુધૈરમિહિતોઽઙ્ગ વિભાગએષઃ ॥ ૫૯ ॥

ભદ્રાસ્થિતિનું પ્રમાણુ ૩૦ ધડીનું છે. તેમાં ૫ ધડી ભૂખમાં,
 ૧ ધડી કંઠમાં, ૧૧ ધડી વક્ષઃસ્થળમાં, ૪ ધડી નાલિમાં અને
 ૬ ધડી કમરમાં તથા ૩ ધડી પુચ્છમાં; આ પ્રમાણુ ૫ હિતોએ
 ભદ્રાના અંગ વિભાગ વર્ણન કર્યા છે. ૫૮.

ભદ્રાજ્ઞફલ.

મુખેકાર્યધ્વસ્તિર્ભવતિ મરણ ચાથગલકે
 ધનેહાનિર્વક્ષસ્યથકટિતટે બુદ્ધિવિલયઃ ॥
 કળિનાભૌદેશો વિજયમથ પુચ્છેચજગદુ:
 શરીરે ભદ્રાયા: પૃથગિતિફલંપૂર્વમુનયઃ ॥ ૬૦ ॥

ભદ્રાના ભુંખવાળી ધડીમાં કાર્ય કરે તો કાર્યનો નાશ થાય,
 કંઠવાળી ધડીમાં કાર્ય કરે તો ભરણ થાય, વક્ષઃસ્થળની ધડીમાં
 કાર્ય કરે તો ધનની હાનિ થાય, કમરની ધડીમાં કાર્ય કરે તો -
 બુદ્ધિનો નાશ થાય, નાલિના ધડીમાં કાર્ય કરે તો કલેશ થાય...-

(२३)

પુણ્યની ધડીમાં કાર્ય કરે તો વિજય થાય. આ પ્રમાણે ભદ્રાના શરીર વિભાગથી સર્વ મુનિયોએ પૃથ્વે પૃથ્વે કહેતું છે. ૬૦

સ્વર્ગ ભદ્રા શુભ્મકાર્ય પાતાલે ચ ધનાગમમ્ ||
મૃત્યુલોકે યદાવિષ્ટ સર્વકાર્ય વિનાશિની ॥ ૬૧ ॥
દિવાભદ્રા યદા રત્નૌ રત્નિભદ્રા યદાદિવા
તદા વિષ્ટકૃતં દોષં ન ભવેત્સર્વસૌખ્યદઃ ॥ ૬૨ ॥

સ્વર્ગમાં ભદ્રા હોય તો તે શુભ જાણવી. પાતાળમાં ભદ્રા હોય તો ધનનો લાભ કરે અને મૃત્યુલોકમાં ભદ્રા હોય તો સર્વ કાર્યનો નાશ કરવાવાળી જાણવી. દ્વિસની ભદ્રા રત્નિને વિષે હોય અને રત્નિની ભદ્રા દ્વિસમાં હોય ત્યારે ભદ્રાનો દોષ જાણવો નહિ અને તે સર્વ પ્રકારનું સુખ આપે છે. ૬૧-૬૨

ભદ્રા પ્રયોજન.

યુદ્ધે ભૂપતિર્દર્શને ભયવને ઘાતેચ પાઠે હઠે
વૈદ્યસ્વાગમને જલપ્રતરણે શત્રોસ્તથોચાટને ॥
સિંહોષ્ટેસ્વર માહિષે અજમૃગે અશ્વેગૃહે. પાતને
સ્વીસેવા ઋતુમર્દનેષુ શકટે ભદ્રાસદા ગૃહ્યતે ॥૬૩॥

• યુદ્ધ, રાજકીયન, લય, વન, ધાત, પાઠ, હઠ, વૈદ્યસભન,
જળપ્રતરણ, શત્રોસ્તથોચાટન, સિંહ, જાંટ, ગધેડું, લેંશ, મેષ,

(२४)

भृग, अश्व, गृहपातन, स्त्रीसेवन, जटुभर्द्धन, गाडी, ६५२
कडेलां सर्वं कार्येभिं हमेशां लद्रा अहणु करवी. ६३
चन्द्रमावास.

मेषेच सिंहे धनु पूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च
याम्ये ॥ युग्मेतुले कुंभ सुपश्चिमायां कर्कालिमी-
नेषु तथोत्तरायाम् ॥ ६४ ॥

मेष, सिंह अने धननो चंद्रभा पूर्व दिशाभां जाणुवो.
वृषभ, कन्या अने मकरनो चंद्रभा दक्षिण दिशाभां जाणुवो.
मिथुन, तुणा अने कुंभनो चंद्रभा पश्चिम दिशाभां जाणुवो.
कर्क, वृश्चिक अने भीननो चंद्रभा उत्तर दिशाभां जाणुवो. ६४
अलौमेष सिंहैरुण्णेयुद्धकारी वृषेकर्कटे तौलिके-
श्वेतसिद्धिः ॥ धनुर्मीन युग्मेषु पीते च लक्ष्मी मृगे-
कुंभकन्या शशीश्याम मृत्युः ॥ ६५ ॥

वृश्चिक, मेष अने सिंहनो चंद्रभा २क्तवर्णु अने युद्धकारी
जाणुवो. वृषभ, कर्क अने तुणानो चंद्रभा श्वेतवर्णु अने सिद्धि-
कारक जाणुवो. धन, भीन अने भिथुननो चंद्रभा पीतवर्णु
अने लक्ष्मीकारक जाणुवो. मकर, कुंभ अने कन्यानो चंद्रभा
रथाभवर्णु अने भृत्युकारक जाणुवो. ६५.

॥ प्रथम संज्ञारत्नं समाप्तम् ॥

द्वितीययोगरत्नप्रारंभः ।

सिद्धियोगज्ञान.

आदित्येचाष्टमी हस्ते अश्विनीचौत्तरात्रयम्
मूलं पुष्योधनिष्ठाच मिद्धियोगः प्रकीर्तिः । १॥

रविवारने द्विसे अष्टमी तिथि अने हस्त, आश्विनी, नष्टे
उत्तरा, भूग, पुष्य, धनिष्ठा नक्षत्र होय तो सिद्धियोग क्षेत्रा छे. १.

सोमे च नवमी पुष्ये श्रवणेरोहिणीमृगः ॥
दशम्यां वरुणं भंच सिद्धियोगः प्रकीर्तिः ॥ २॥

सोमवारने द्विसे नवमी, दशमी तिथि अने पुष्य, श्रवण,
रोहिणी, भूगर्थीर्ष, शतभिषा नक्षत्र होय तो सिद्धियोग क्षेत्रा छे. २

भौमेषष्ठीतृतीयाच अष्टमीच त्रयोदशी ॥

मूलाश्विनीमघाश्लेषासिद्धाण्युत्तरभादपात् ॥ ३ ॥

भूगर्थवारने द्विसे ४७ठी, तृतीया, अष्टमी तथा नये। दशी
तिथि अने भूग, अश्विनी, भधा, आश्वेषा, उत्तर भाद्रपद न-
क्षत्र होय तो सिद्धियोग जाणुनो. ३,

**बुधवारे द्वितीयाच सप्तमीदादशीषुच
मृगानुराधापुष्यश्चसिद्धा कृत्तिकरोहिणी ॥ ४ ॥**

बुधवारने दिवसे द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथि
अने भृगरीर्ष, अनुराधा, पुष्य, इतिका, रेहिणी नक्षत्र द्वाय
तो सिद्धियोग जाणुनो. ४.

**गुरौचदशपंचम्यांपौर्णिमास्यांविशाखयोः
पौष्णाश्विन्याऽनुराधाचसिद्धापुष्यपुनर्वर्षसुः ॥ ५ ॥**

गुरुवारने दिवसे दशमी, पंचमी अने भूर्लिभा तिथि;
विशाखा, रेवती, अश्विनी, अनुराधा, पुष्य, पुनर्वर्षसु नक्षत्र
द्वाय तो सिद्धियोग जाणुनो. ५.

**शुक्रेप्रतिपदाष्टयैकादशीचत्रयोदशी ॥
रेवती पूर्वभाश्विन्योश्रुतिश्चित्रादितिःशुभाः ॥ ६ ॥**

शुक्रवारने दिवसे प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी अने नवेदशी
तिथि तथा रेवती, पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, श्रवण, चित्रा, पुन-
र्वर्षसु नक्षत्र द्वाय तो सिद्धियोग जाणुनो. ६.

**शनौ चतुर्थी नवमी चतुर्दशी च रोहिणी ८
श्रवणं च मघा स्वाती पूर्वफाल्गुनि सिद्धिदां ॥ ७ ॥**

(२७)

શનિવારને દિવસે ચતુર્થી, નવમી અને ચતુર્દશી તિથિ તથા રોહિણી, શ્રવણ, મધા, સ્વાત્ત્રી, પૂર્વાકાશગુની નક્ષત્ર હોય તો સિદ્ધીયોગ આણુવો. ૭.

વિરુદ્ધયોગજ્ઞાન.

સૂર્યેવિશાખા ભરણીદ્વાદશી ચ ચતુર્દશી ॥

અનુરાધા મઘા જ્યેષ્ઠા વિરુદ્ધા સપ્તમી સદા ॥ ૮ ॥

રવિવારને દિવસે વિશાખા, ઉત્તરાધી, દ્વાદશી, ચતુર્દશી, અનુરાધા, મધા, જ્યેષ્ઠા અને સપ્તમી હોય તો સદા વિરુદ્ધ યોગ આણુવો અર્થાતું રવિવારને દિવસે એ તિથિ તથા નક્ષત્ર ત્યાખ્ય છે. ૮.

ચન્દ્રે ચિત્રોત્તરાષાઢા પૂર્વાષાઢા વિશાખયો: ॥

એકાદશ્યાંત્રયોદશ્યાંષષીયતનેન વર્જયેત् ॥ ૯ ॥

સોમવારને દિવસે ચિત્રા, ઉત્તરાષાઢા, વિશાખા, એકાદશી, નયોદ્ધી અને ષષ્ઠી હોય તો વિરુદ્ધ યોગ આણુવો. તેને ધત્ન પૂર્વક વર્જિત કરવો. ૯.

મૌમેઆદ્રા ધનિષ્ઠા ચ પ્રતિપત્ત પૂર્વભાદ્રપત્ત ॥

શતમિષક્ ચોત્તરાષાઢા દશમી ચ વિવર્જયેત् ॥ ૧૦ ॥

ભેગળવારને દિવસે આદ્રા, ધનિષ્ઠા, પ્રતિપંદ્તા, પૂર્વાભાદ્ર-પંદ્તા, શાનલિષા ઉત્તરાષાઢા અને દશમી વર્જિત કરવી. ૧૦.

(२८)

बुधे धनिष्ठा भरणी अश्विनी मूल संयुता ॥
तृतीया नवमी चैव प्रतिपदेवती त्यजेत् ॥ ११ ॥

શુક્રવારને દિવસે ધનિષ્ઠા, ભરણી, અશ્વિની, મૂળ, તૃતીયા
નવમી પ્રતિપદા અને રેવતી એ ત્યાગ કરવાં. ૧૧.

જીવેઽષ્મા ચતુર્થ્યાતુ આદ્રા ચોત્તર ફાલ્ગુની
રોહિણી શતભિषકૃષ્ણા કૃત્તિકામૃગવર્જિતા ॥ ૧૨ ॥

ગુરુવારને દિવસે અષ્ટમી, ચતુર્થી, આદ્રા, ઉત્તરાશાલ્યગુની,
રોહિણી, શતભિષા, ષષ્ઠી, કૃતિકા અને મૃગશિર્ષ એ વર્જિત છે.
માર્ગવેરોહિણી જ્યેષ્ઠાદ્રિતીયા સસમીષુચ ॥

પુષ્યાષ્ટલેષામધા ચેવસર્વકર્માણિવર્જયેત् ॥ ૧૩ ॥

શુક્રવારને દિવસે રોહિણી, જ્યેષ્ઠા, દ્વિતીયા, સપ્તમી,
પુષ્ય, આશ્લેષા અને ભધા એ સર્વ કાર્યમાં ત્યાજ્ય છે. ૧૩.

સૌરે ચિત્રોત્તરાષાઢા રેવતી ત્રીણિસસમી ॥
ષષ્ઠી ચોત્તર ફાલ્ગુણ્યાં પૂર્વાષાઢા વિવર્જયેત् ॥ ૧૪ ॥

શનિવારને દિવસે ચિત્રા, ઉત્તરાષાઢા, રેવતી, અશ્વિની,
ભરણી, કૃતિકા, સપ્તમી, ષષ્ઠી, ઉત્તરાશાલ્યગુની અને પૂર્વાષાઢા
વર્જિત છે. ૧૪.

ઇતિશુખાશુભયોગા:

(२६)

सिद्धियोग.

शुक्रेनन्दा बुधेभद्रा जयालौमेप्रकीर्तिता ॥

शनौरिक्ता गुरौपूर्णा सिद्धियोग उदाहृताः ॥ १५ ॥

शुक्रवारने द्विवसे नंदा १-६-११ तिथि, शुक्रवारने द्विवसे भद्रा २-७-१२ तिथि, भगवारने द्विवसे जया ३-८-१३ तिथि, शनिवारने द्विवसे रिक्ता ४-९-१४ तिथि अने गुरुवारने द्विवसे पुष्टि ५-१०-१५ तिथि होय तो सिद्धियोग जाणुने। १५

अमृतसिद्धियोग.

आदित्य हस्ते गुरु पुष्य योगे

बुधानुराधा शनि रोहिणी च ॥

*सोमेच सौम्यं भृगु रेवती च

भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगः ॥ १६ ॥

रविवारने द्विवसे हुस्त, गुरुवारने द्विवसे पुष्य, शुक्रवारने द्विवसे अनुराधा, शनिवारने द्विवसे रोहिणी, सोमवारने द्विवसे भृगशीर्ष, शुक्रवारने द्विवसे रेवती अने भगवारने द्विवसे अश्विनी नक्षत्र होय तो अमृतसिद्धियोग जाणुने। १६.

* सोमेचविष्णुभृगुरेवतीच.

(३०)

संवर्तकयोग.

सप्तम्यां चरवेर्वारोबुधस्य प्रतिपद्हिने ॥
संवर्ताख्यस्तदा योगोवर्जितव्यसदाशुभे ॥ १७ ॥

सप्तभीने द्विसे रविवार अने प्रतिपदाने द्विसे शुध-
वार होय तो संवर्तक नाभनो योग जणुने. आ योग शुभ
कार्यां वर्जित छे. १७

क्रकच (कर्क) योग.

षष्ठीतु शनिवारेण शुक्रेणैव च सप्तमी ॥
अष्टमी गुरुवारेण नवमी चन्द्रजेनतु ॥ १८ ॥
दशमी भूमि पुत्रेण सोमे एकादशी तथा ॥
सूर्येच द्वादशी प्रोक्ताकर्कयोगः प्रकीर्तिताः ॥ १९ ॥

शनिवारने द्विसे षष्ठी तिथि, शुक्रवारने द्विसे सप्तमी,
गुरुवारने द्विसे अष्टमी, शुधवारने द्विसे नवमी, भंगणवारने
द्विसे दशमी, सोमवारने द्विसे एकादशी अने रविवारने द्वि-
वसे द्वादशी होयतो कर्क (कक्ष्य) नाभनो योग क्षेत्रे छे. १८-१९

यमघंटयोग.

मघार्कवारे शशीने विशाखा
आर्द्ध कुजेइन्दुसुते च मूलम् ॥

गुरु कृतिका भृगु रोहिणी च
 शनौ च हस्तो यमधंट योगः ॥ २० ॥
 यमधंटे गते मृत्युः कुलोच्छेदः करण्ठे ॥
 कर्त्तुर्मृत्युः प्रतिष्ठायां शिशुर्जातो न जीवति ॥२१ ॥

२१ विवारने द्विवसे भधा, सोभवारने द्विवसे विशाखा, भं-
 गणारने द्विवसे आद्रा, शुभवारने द्विवसे भूग, शुइवारने द्वि-
 वसे कृतिका, शुठवारने द्विवसे रोहिणी अने शनिवारने द्विवसे
 हस्तनक्षत्र ढाय तो यमधंट नाभनो योग थाय छे. आ यमधंट
 योगमां गाम जय तो भृत्यु पामे, पाणीगृहण करे तो कुण्ठुं
 छेदन थाय, हेवप्रतिष्ठा करे तो भृत्यु थाय अने बाणक जन्मे
 तो तेनो नाश थाय छे. २०—२१.

यमधंट्योग.

मधा धनिष्ठा सूर्येतुचन्द्रेमूलविशाखके ॥
 कृत्तिकाभरणी भौमेसौम्येपुषापुनर्वसुः ॥ २२ ॥
 गुरौऊषाश्विनी शुक्रेरोहिणी चानुराधिका ॥
 शनौविष्णुः शतभिषक्यमदंशप्रकीर्तिता ॥ २३ ॥

२२ विवारने द्विवसे भधा अने धनिष्ठा, सोभवारने द्विवसे
 भूग अने विशाखा, भंगणवारने द्विवसे कृतिका अने भरणी,

યુધવારને દિવસે રેવતી અને પુનર્બંધુ, ગુરુવારને દિવસે ઉત્તરા-
ખાદ્ય અને અશ્વિની, શુક્રવારને દિવસે રોહિણી અને અનુરાધા
તથા શનિવારને દિવસે અત્રણ અને શતભિષા નક્ષત્ર હોય તો
યમદંધ્ર નામનો યોગ થાયછે; તે શુલ્ષ કાર્યભાં વજ્ઞિતછે. ૨૨-૨૩.

મૃત્યુયોગ.

**स्वै भौमे भवेन्नन्दा भद्रा भार्गव चन्द्रयोः ॥
बुधे जया गुरौरिका शनौ पूर्णाच मृत्युदा ॥ ૨૪ ॥**

રવિવાર અને મંગળવારને દિવસે નંદા ૧-૬-૧૧
તિથિ, શુક્રવાર અને સોમવારને દિવસે લદ્રા ૮-૭-૧૨ તિથિ,
યુધવારને દિવસે જ્યા ૩-૮-૧૩ તિથિ, ગુરુવારને દિવસે
રિક્તા ૪-૬-૧૪ તિથિ અને શનિવારને દિવસે પૂર્ણા ૫-૧૦-
૧૫ તિથ હોય તો મૃત્યુયોગ જાણવો. ૨૪.

**त्यजर्वि अनुराधां उत्तराषाढ चन्द्रे
शतभिषमपि भौमे चन्द्रजे चाश्विनौ च ॥
मृगशिरसि सुरेज्ये नागदेवं च शુक्रे
रविसुतमपि हस्ते मृत्युयोगा भवन्ति ॥ ૨૫ ॥**

રવિવારને દિવસે અનુરાધા, સોમવારને દિવસે ઉત્તરાખાદા,
મંગળવારને દિવસે શતભિષા, યુધવારને દિવસે અશ્વિની, ગુરુ-

(३३)

वारने द्विसे भृगथीर्ष, शुक्रवारने द्विसे आश्लेषा अने थनि-
वारने द्विसे हस्त नक्षत्र होय तो भृत्युयोग जाणुवो. २६

दग्धयोग.

बुधे तृतीया कुजे पंचमी च
षष्ठ्यां गुरावष्टमी शुक्रवारे ॥
एकादशी सोम शनिनवम्यां
द्वादश्यथार्केष्विति दग्धयोगः ॥ २७ ॥

शुक्रवारने द्विसे तृतीया, भंगणवारने द्विसे पंथभी,
शुक्रवारने द्विसे ५०ठी, शुक्रवारने द्विसे अष्टभी, शेषवारने
द्विसे अकादशी, शनिवारने द्विसे नवभी अने रविवारने द्वि-
से द्वादशी होय तो दग्धयोग थाय छे. २७.

मुशलवज्रयोग.

चन्द्रे चित्रा भृगौ ज्येष्ठा शनौ चैवतु रेवती ॥
चन्द्रजे तु धनिष्ठोत्तमा रवौ तु भरणी तथा ॥२८॥
ऊषा श्रैव तु भौमे च मुसै चैवोत्तरा तथा ॥
अयं मुशलवज्राल्ययोगो वर्ज्यः शुभे शुद्धैः ॥२९॥

(३४)

सोभवारने द्विसे चित्रा, शुडवारने द्विसे ज्येष्ठा, शनि-
वारने द्विसे रेवती, भुधवारने द्विसे धनिष्ठा, रविवारने द्विसे
भरणी, मंगलवारने द्विसे उत्तरापादा अने गुरुवारने द्विसे
उत्तराश्लयुनी नक्षत्र होय तो मुशगनजू योग जाणुयो. आ
मुशगनजूयोग पंडितोचे शुभकार्यां वर्जित कर्हा छे.२८-२६.

रवियोग.

सूर्यभाद्रेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते ॥
चन्द्रक्षेरवियोगाः स्युर्दोपसंघविनाशः ॥१० ॥

सूर्यना नक्षत्रथी यं द्रभाना नक्षत्र सुधी गणवार्थी ज्ञे चार
नव, छ, दश, तेर अने वीस संघया आवे तो दोषना सभूङ्ने
नाश करनारौ रवियोग जाणुयो. ३०.

त्रिपुष्करयोग.

भद्रा तिथी रविजभूननयाऽर्कवारे
दीशार्यमाजचरणादितिवन्हिवश्वे ॥
त्रैपुष्करो भवति मृयुविनाशवृद्धो
त्रैगुण्डो द्विगुणकृद्धसुक्षचान्दे ॥ ३१ ॥

(૩૫)

ભરત ૨-૭-૧૨ નિષિ, શનિ, મંગળ અને રવિવાર તથા
નિથાખા, ઉત્તરાશાહુની, પૂરો માદ્રપદ, પુનર્સુ, કૃતિકા, અને
ઉત્તરાખાદ નક્ષત્ર આ ત્રણે આપયમાં ભળવાથી ત્રિપુષ્કર નામનો
યોગ થાય છે. આ યોગ મૃત્યુ, નિનાશ અને વૃદ્ધિમાં ત્રણ ધથ્યું
કુળ આપે છે, ભરતાનિષિ શનિ, મંગળ અને રવિવાર તથા
ધનિષ્ઠા, ચિત્રા અને મૃગશીર્ષ નક્ષત્ર હોય તો દ્વિપુષ્કર નામનો
યોગ થાય છે. આ યોગ બધાધ્યું કુળ આપે છે. ૩૧.

જ્વાલામુખીયોગ.

પડિવૈ મૂલું પંચમી ભરણી
અય્મી કૃત્તિ રોહિણી નવમી ॥
અશ્લેષા દરશમી દિનપહિયા
એ યોગ જ્વાલામુખી કહિયા ॥ ૩૨ ॥

જાયે સોજી વિનહી, વસૈસુ ઉજ્જવહોઈ ॥
નારી પહુરૈ ચૂડલો, સૌઆમરગનહોઈ ॥. ૩૩ ॥

પ્રતિપદાને દિવસે ભૂગ, પંચમીને દિવસે ભરણી, અષ્ટમીને
દિવસે કૃતિકા, નવમીને દિવસે રોહિણી, દશમીને દિવસે આ-
શ્લેષા નક્ષત્ર હોય તો જ્વાલામુખી યોગ થાય છે, આ યોગમાં

(३६)

આળક જન્મે તો ભરણુ પામે, વાસ કરે તો ઉજડ થાય અને
ચી ચૂડો પહેરે તો આભરણુ વિનાની થાય. ૩૨-૩૩.

ઉત્પાદાદિયોગ.

વિશાળાદિ ચતુષ્કંતુ ભાસ્કરાદિ ક્રમેણતુ ॥
ઉત્પાત મૃત્યુ કાલાખ્ય સિદ્ધિયોગાઃપ્રકીર્તિતાઃ॥૩૪॥

સૂર્યાદિ સાતવારને વિશે વિશાળાદિ ચાર ચાર નક્ષત્ર અનુ-
વાથી ઉત્પાત, મૃત્યુ, કાલ અને સિદ્ધિ યોગ જાણુના તે ચક-
ાં ૨૫૪ સમજ લેવા. ૩૪.

॥ ઉત્પાદાદિયોગચક્ર ॥

| સ. | ચ. | મં. | બુ. | વૃ. | શુ. | શ. | વાર. |
|------|-------|-------|-----|-----|-------|------|---------|
| વિ. | પૂષા. | ધ. | રે. | રો. | શુ. | ઉફા. | ઉત્પાત. |
| જ્ય. | ઉષા. | શ. | અ. | મૃ. | ઇશ્ય. | હ. | મૃત્યુ. |
| અયે. | ઇધિ. | પૂભા. | ભ. | આ. | મ. | ચિ. | કાલ. |
| મૂ. | શ. | ઉભા. | કુ. | શુ. | શૂફા | સ્વ. | સિદ્ધિ. |

(३०)

आनन्दादियोग.

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो
 धाता सौम्यो ध्वांककेतूं क्रमेण ॥
 श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्ररश्च
 छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ॥ ३५ ॥
 उत्पातमृत्युं किल काणसिद्धी
 शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च ॥
 मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्याः
 प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनामा ॥ ३६ ॥

१ आनंद, २ कालदण्ड, ३ धूम्र, ४ धाता, ५ सौम्य,
 ६ ध्वांक, ७ डेतु, ८ श्रीवत्स, ९ वज्र, १० मुद्रगर, ११ छत्र,
 १२ मित्र, १३ मानस, १४ पद्म, १५ लुंब, १६ उत्पात, १७
 मृत्यु, १८ काण्ड, १९ सिद्धि, २० शुभ, २१ अभृत, २२ मु-
 शण, २३ गद, २४ भातंग, २५ राक्षस, २६ चर, २७ सुस्थिर,
 २८ प्रवर्धमान आ योगोनुं जेवुं नाम छे तेवुं इण
 सभञ्ज लेवुं. ३५-३६

. आनन्दादियोग जाणवानो पकार.

दासादके मृगमदिंदौ सार्पद्वौमे करद्वबुधे ॥

(३८)

मैत्राद्गुरौ भृगौ वैश्वाद्रण्या मंदे च वारुगात् ॥३७॥

रविवारने दिवसे अथिनीथी, सोभवारने दिवसे भृगथी-
धर्थी, भंगणवारने दिवसे आशलेषाथी, भुधवारने दिवसे हस्त-
थी, गुडवारने दिवसे अनुराधाथी, शुक्लवारने दिवसे उत्तराधा-
धाथी अने शनिवारने दिवसे शतभिषाथी अष्टाविस नक्षत्र गण्ड-
वाथी आनंदादियोग जाणुवा. ते यक्ष उपरथी स्पष्ट समझ
लेवा. ३७.

दुष्टयोगपरिहार.

**ध्वांक्षे वज्रे मुद्रे चेषुनाड्यो
वज्या वेदाः पद्मलुंबे गदेऽश्वाः ॥**

**धूमे काणे मूशले भूर्दयं द्वे
रक्षोमृत्युत्पातकालाश्वसर्वे ॥ ३८ ॥**

ध्वांक्ष, वज्र, अने भुद्गर योगनी आदिनी पांच धटी,
पद्म अने लुंभनी चार धटी, गदनी सात धटी, धम्भनी एक
धटी, काणुनी ए धटी, भुशणनी ए धटी, अने राक्षस,
भृत्यु, उत्पात अने क्षुणयोगनी संपूर्ण धटी वर्जित छे. ३८.

(३६)

आनंदादियोगचक्र.

| वाग् | मू | च | मं | बु | बृ | थु | श |
|----------|-------|-------|-------|-------|-------|-----|-------|
| आनंद. | अ | मृ | अङ्गे | ह | अङ्गु | उषा | श |
| कालदंड | भ | आ | म | वि | ज्ये | अभि | पू |
| धूम्र | कु | पु | पू | स्वा | मू | श्र | उ |
| पञ्चापनि | रो | पु | उ | वि | पू | ध | रे |
| सौम्य | मृ | अङ्गे | ह | अङ्गु | उ | श | अ |
| ध्वांश | आ | म | वि | ज्ये | अभि | पू | भ |
| ध्वज | पु | पू | स्वा | मू | श्र | उ | कु |
| श्रीवरतम | पु | उ | वि | पू | ध | रे | रो |
| वज्र | अङ्गे | ह | अङ्गु | उ | श | अ | मृ |
| मुहूर | म | चि | ज्ये | अभि | पू | भ | आ |
| छत्र | पू | स्वा | मू | श्र | उ | कु | पु |
| मित्र | उ | वि | पू | ध | रे | रो | पु |
| मानस | ह | अङ्गु | उ | श | अ | मृ | अङ्गे |
| पद्म | चि | ज्ये | अभि | पू | भ | आ | म |

| लुप | स्वा | मू | श्र | उ | कु | पु | षू |
|------------|------|-----|-----|-------|-------|-------|------|
| उत्पात | वि | पू | ध | रे | रो | पु | उ |
| मृत्यु | ज्ञु | उ | श | अ | मृ | अङ्गे | ह |
| काण | ज्ये | अभि | पू | भ | आ | म | चि |
| सिद्धि | मू | श्र | उ | कु | पु | पूफा | स्वा |
| शुभ | पू | ध | रे | रो | पु | उ | वि |
| अमृत | उ | श | अ | मृ | अङ्गे | ह | ज्ञु |
| मुख्यल | अभि | पू | भ | आ | म | चि | ज्ये |
| गद | श्र | उ | कु | पु | पू फा | स्वा | मू |
| मातंग | ध | रे | रो | पु | उ.फा | वि | पू |
| राक्षस | श | अ | मृ | अङ्गे | ह | ज्ञु | उ |
| चर | पू | भ | आ | म | चि | ज्ये | अभि |
| सुस्थिर | उ | कु | पु | पू | स्वा | मू | श्र |
| प्रवर्धमान | रे | रो | पु | उ | वि | पू | ध |

अयोगः सिद्धि योगश्च द्वावेतौ भवतो यदि ॥
 अयोगो हन्यतेतेन सिद्धियोगः प्रवर्तते ॥ ३९ ॥
 अयोग अने ज्ञायेग अन्ने अङ्ग दिवसमां छेयंते अ-

(૪૧)

યોગનો નાથ કરીને સિદ્ધિ યોગ પ્રવત્તે છે. અર્થાત् અયોગ
વિનષ્ટ થધ જય છે અને સિદ્ધિયોગ પોતાનું શુભ ઇણ આપેછે.

પુષ્કરયોગ.

વિશાળાસ્થો યદા ભાનુઃ કૃત્તિકાસુ ચ ચંદ્રમાઃ ॥
સંયોગઃ પુષ્કરો નામ પુષ્કરેષ્વતિરૂલ્મઃ ॥ ૪૦ ॥

વિશાળા નક્ષત્ર ઉપર સૂર્ય હોય અને કૃત્તિકા નક્ષત્ર ઉ-
પર ચંદ્રમા હોય એવા સંયોગનું નામ પુષ્કર યોગ જાણવું.
આ યોગ પુષ્કરનેત્રમાં પરમહૂર્ચભ છે. ૪૦.

કપિલાષષ્ઠીયોગ.

આશ્વિને કૃષ્ણપક્ષે ચ ષષ્ઠ્યાં ભૌમેઽથરોહિણી ॥
વ્યતીપાતસ્તદા ષષ્ઠી કપિલાનંતપુષ્યદા ॥૪૧॥

આશ્વિનમાસ, કૃષ્ણપક્ષ, ષષ્ઠી નિથિ, ભંગળવાર, રાહિષ્ણી
નક્ષત્ર અને વ્યતીપાત યોગ આ સર્વ એક સાથે હોય તો કપિ-
લાષ્ઠી યોગ જાણનો.. આ યોગ અનંત પુષ્ય આપવાવાળો છે.

અર્ધોદયયોગ.

પौષમાસિ રવી. દર્શો વ્યતીપાતે શ્રવાન્વિતે ॥
અર્ધોદયાભિધો યોગઃ કિંચિન્દ્યુનં મહોદયઃ ॥૪૨॥

(४२)

पौष भासनी अभावास्याने दिवसे रविवार, व्यतीपात
तथा श्रवण नक्षत्र होय तो अर्धोदय नाभनो। योग जाणुवो।
अने आनाथी किंचित् न्यून होय तो भडोदय नाभनो। योग
जाणुवो। ४२.

खर्परयोग.

यस्यान्हे रविसंब्रमो भवति चेत्तद्रायुक्ताकुहुः
योगो खर्परसंज्ञको समुदयत् प्रोक्तं च गर्गादिभिः ॥
पृथ्वि व्याकुलता विलोम गतिभिः सर्वेषु लोकेषु च
दुर्भिक्षं नृप नाशनं च अधुनालक्ष्मी अलोपा भवेत्

जे वारे रवि संक्षेप होय तेज वारे अभावास्या आने-
तो अपर नाभनो। योग जाणुवो। अभ गर्गादि भुनीच्छा। कडे छे।
आ। योगभां पृथ्वी व्याकुण थाय, विद्वाभगति थाय, सर्व
लोकाने विषे दुर्भिक्ष थाय, राजनो नाश थाय तथा अलोप
लक्ष्मी थाय। ४३

राज्यभंगादियोग.

यदि भवति कदाचिच्चाश्विनीनष्टचन्द्रा
शनि रवि कुजवारे स्वातिरायुष्म योगे ॥
गगनचर पश्चनां जंगमस्थावराणां

(४३)

नृपतिजन विनाशो राज्य भंगस्तुत्रोक्तः ॥ ४४ ॥

કદાચિત् શનિ, રવિ, અને ભંગળ આ માંના ગમે તે વાર કરીને યુક્ત અમાવાસ્યાને દિવસે અધિની અથવા સ્વાતી નક્ષત્ર તથા આયુભાન યોગ ઢોય તો પક્ષી, પશુ, જંગમ, સ્થાવર, રાજ અને અનુષ્ઠોનો નાશ તથા રાજ્યભંગ થાય. ४४.

યુગાદિ.

નવમી કાર્તિકે શુક્લાવૈશાખે ચ તૃતીયકા ॥

ત્રયોદશી ભાદ્રપદે માવે દર્શાયુગાદયઃ ॥ ४५ ॥

કાર્તિક શુક્લપક્ષની નવમીએ કૃતયુગનો આરંભ, વૈશાખ શુક્લપક્ષની તૃતીયાએ નેતાયુગનો આરંભ, ભાદ્રપદ કૃષ્ણપક્ષની ત્રયોદશીએ કળિયુગનો આરંભ તથા ભાધ કૃષ્ણ પક્ષની અમાવાસ્યાએ દ્વાપરયુગનો આરંભ જાણુનો. ४५.

દ્વિતીય યોગરત્ન સમાપ્તમ् ॥

॥ તૃતીયમુહૂર્તરત્નપ્રારંભઃ ॥ .

તત્ત્વાદૌત્તર્યયોગ.

સર્વષુ શુભફાર્યેષુ કુર્યોગાન્પરિયજેત् ॥
દગ્ધં વિદ્ધં ચ નક્ષત્રં તિથિ દગ્ધં ચ વર્જયેત् ॥ ॥

(४४)

संपूर्ण शुभ कार्याभां कूरयोगने त्यागः करे ४५ अनि
वेद-शुक्ल नक्षत्र तथा तिथि वर्जित करे छे. १

अर्धप्रहरकस्त्याज्यः कुलिको विष्टिरेव च ॥
एकार्गलं ग्रहक्षं पर्वमेव च ॥ २ ॥

प्रदर्श (अर्धाभ) कुलिक योग, भद्रा, अकार्गल, अहु-
षुनुं नक्षत्र, जन्म नक्षत्र अने पर्व ए सर्व त्याग करे. २
चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावास्या च पूर्णिमा ॥
पुण्यानि पंच पर्वाणि संब्रांतिर्दिनपस्य च ॥ ३ ॥

इष्टपक्षनी चतुर्दशी, अष्टमी, अभावास्या, पूर्णिमा अने
संकातिनो दिवस ए पांच प्रृष्ठ्य पर्व छे.

दुष्ट्योगे तिथौ रिक्ते क्षीणे चंद्रेऽधिमासके ॥
मांगल्ये शुभयात्रा च नकुर्याद्वितमिच्छता ॥ ४ ॥

हुष्टयोग, रिक्तानिथि ४-६-१४, क्षीण चंद्रभा, भज-
भास, ए शुभ कर्म अने उत्तम यात्राभां वर्जित छे, अर्थात्
आभां अंगणकार्य पोताना हीतनी ईच्छाथी नाकरे. ४

घातचंद्र.

चंद्रभूलग्रहनेत्रासदिग्बन्हिसागराः ॥

(४५)

वेदाष्टकशिवादित्याधातचंद्राः प्रकीर्तिताः ॥ ५ ॥

भेष राशिने धातयंद्र पहेलो, वृषभ राशिने पांचमो,
मिथुन राशिने नवमो, कर्क राशिने भीजे, सिंहराशिने छहो,
कन्या राशिने दशमो, तुणा राशिने त्रीजे, वृश्चिंड राशिने सा-
तमो, धनराशिने चाथो, भक्तराशिने आठमो, कुंभराशिने
अग्नीयारम्भो अने भीनराशिने बारम्भो धातिंड हड्डीछो. ५
स्त्रीधातचन्द्र.

**शशीनागरैलंकरागामिवेदः । कराशाशिवापाण्डवा
चित्रभानुः ॥ विवाहेतथान्ये शुभे कामिनीनां ।
क्रमातधातचन्द्राइमेवर्जनीया ॥ ६ ॥**

भेष राशिने पहेलो, वृषभ राशिने आठमो, मिथुन रा-
शिने सातमो, कर्क राशिने नवमो, सिंहराशिने छहो, कन्या
राशिने त्रीजे, तुणा राशिने चाथो, वृश्चिंड राशिने भीजे,
धनराशिने दशमो, भक्त राशिने अग्नीयारम्भो, कुंभ राशिने
पांचमो अने भीनराशिनाणी स्त्रीओने बारम्भो धातयंद्र ज-
ग्नुनो, ते विनाहादि भीज शुभ डार्यमां वर्जित छे. ६

धातचन्द्रपरिहार.

धातचंद्रा इमे वर्ज्या यात्रायां राजदर्शने ॥

(४६)

विवादे वाहनारोहे युद्धेमैषज्यसेवने ॥ ७ ॥

यात्रा, राज्यर्थन, निवास, वाइनना। उपर ऐसती वर्षते
युद्ध तथा आधिक सेवनमां धातयंद्र वर्जित । करते। ७

तीर्थयात्राविवाहाब्राशनोपनगदियु ॥

मांगल्यसर्वकार्येषु धातचंद्रं न विनायेत् ॥ ८ ॥

तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन आदि सर्व
भंगण कार्यमां धातयंद्रनो विचार न करते। ८

चंद्रफल.

निजराशौ स्वोच्चराशो श्रैष्टुं चंद्रबलं सदो ॥

जन्मस्थः कुरुते पुष्टिं द्वितीये च धनागमम् ॥ ९ ॥

तृतीये राज्यसन्मानं चतुर्थे कलहागमम् ॥

पंचमे मतिविभ्रंशो भवेचंद्रे न संशयः ॥ १० ॥

धनधान्यागमं षष्ठे संतोषं स्यात्तप्तसमे ॥

अष्टमे प्रागसंदेहो नवप्रे क्लेशएवव ॥ ११ ॥

दशमे कार्यनिष्पत्ति ध्रुवमेकादशे जयः ॥

द्वादशेन शशकेन मृत्युरेव न संशयः ॥ १२ ॥

(૪૭)

એ ચંદ્રમા પોતાની રાશિ (કર્ક) માં અથવા પોતાની ઉત્ત્યરાશિ (વૃષભ) માં હોય તે સહા ઉત્તમખળી જાણુનો, પહેલો ચંદ્રમા પુષ્ટિકર્તા છે, બીજો ચંદ્રમા ધનનો આગમ કર્તા છે, ત્રીજો ચંદ્રમા રાજ્યભાન કર્તા છે, ચોથો ચંદ્રમા કલહાગમ કર્તા છે, પાંચમો ચંદ્રમા નિઃસંદેહ ઘુંડુંદો નાશ કર્તા છે, છષ્ઠો ચંદ્રમા ધન ધાન્યનો આગમ કર્તા છે, સાતમો ચંદ્રમા સંતોષકર્તા છે, આડમો ચંદ્રમા પ્રાણુનો સંશય કર્તા છે, નવમો ચંદ્રમા કલેશકર્તા છે. દશમો ચંદ્રમા કાર્યનો ઉદ્દ્ય કર્તા છે, અગ્નીઆરમો ચંદ્રમા અવશ્ય જય કર્તા છે અને બા-રમો ચંદ્રમા નિઃસંદેહ મૃત્યુ કર્તા છે. ૮-૧૨

દ્વિતીયः પંचમશ્વન્દો નવમશ્ર શુભપ્રદः ॥

શુફલાક્ષેવિરોષોયંતુઃયમન્યતથોભયોः ॥ ૧૩ ॥

શુફલપક્ષને નિષે આજો, પાંચમો અને નવમો ચંદ્રમા વિ-શેષે કરીને શુભ ઇણને આપતારો છે; તથા બીજ શુફલ અને કૃષ્ણ બન્ને પક્ષને નિષે શુભ ઇણને આપતારા છે. ૧૩.

ગુરુર્ભિગાહેગમનેચશુક્રોજ્ઞાગોદીક્ષણકેચશૌરી ॥
યુદ્ધેચમૌમૌનૃગર્દર્શનેર્કઃસર્વેષુકાર્યેષુબ્રલિશશાંકઃ ૧૪

વિવાહને વિષે ગુરુભ્યણ, પ્રયાણુને વિષે શુફલભ્યણ, જ્ઞાનને

નિષે શુભખણ, અશાની દીક્ષામાં ચનિખણ, યુદ્ધને વિષે અ'ગળ-
ખણ, અને રાજ્ય દર્શનને વિષે સૂર્યખણ તથા સર્વ કાર્યને વિષે
ચંદ્રખણ ખળવાન् છે. ૧૪

તારા જ્ઞાન.

જાન્મભાદ્રગણયેદાદૌ દિનાધિષ્ણાવધિ: કિલ ॥
નવમિસ્તું હરેદ્ભાગં શોષં તારા વિનિર્દિશેત ॥ ૧૫ ॥
જન્મસંપદ્બિપદ્ભેમઃપ્રત્યરિઃસાધકસ્તથા ॥
વધૈમૈત્રાતિમૈત્રેયંતારાનામસહકફલા: ॥ ૧૬ ॥

જન્મ નક્ષત્રથી દિન નક્ષત્ર સુધી ગણી તેમાં નવને। ભાગ
આપવાથી જ શેષ રહે તે તારા સમજવી, એક શેષ રહે તો
જન્મ, બે રહે તો સંપત્ત, ત્રણ રહે તો વિપત્ત, ચાર રહે તો ક્ષેમ,
પાંચ રહે તો પ્રત્યરિ, છ રહે તો સાધક, સાત રહે તો વધ, આડ
રહે તો મૈત્ર અને શૂન્ય રહે તો અતિમૈત્ર તારા સમજવી. આ
તારા ના મુપ્રમાણે કુણ આપનારી જાણવી. ૧૫-૧૬

જન્મતારા દ્વિતીયા વ ષષ્ઠી ચૈવ ચતુર્થિકા ॥
અષ્ટમી નવમી ચૈવ ષટ્કતારા: શુભાવહા: ॥૧૭॥
ગ્રામપ્રિયલંગાંશ્રાન્દ્રસ્તથાપિકલેશદાયિની ॥
કૃતીમાર્પંચમીતારાસસમીચનૃણાંભવેત ॥ ૧૮ ॥

(૪૬)

પહેઢી, બીજી, છઠી, ચોથી, આડમી તર્થા નવમી આ
છ તારા શુભ જાણવી. કૃષ્ણપક્ષમાં જે ખળવાનું ચંદ્ર હોય તો
પણ ત્રીજી, પાંચમી અને સાતમી તારા મનુષ્યોને ક્વેચ આપ-
નારી કહી છે. ૧૭-૧૮

કૃષ્ણેવલવતીતારાશુક્લપઞ્ચતુચન્દ્રમા ॥
સદાગ્રાહ્યાબુદ્ધૈરેવંકૃષ્ણેતારાનચન્દ્રમા ॥ ૧૩ ॥

કૃષ્ણપક્ષને વિષે તારા ખળવાન છે અને શુક્લપક્ષને વિષે
ચંદ્રમા ખળવાન છે, તેથી કરીને પાંડિત લોકોએ હમેશાં કૃષ્ણ-
પક્ષને વિષે તારાઅહણું કરવી, ચંદ્રમા અહણું કરવો નહિ. ૧૬

નૃત્નવસ્ત્રધારણ.

રોહિણીષુકરંચકેઽશિમેત્રુતરેપિચપુનર્વસુદ્યયે ॥
રેવતીષુવસુદૈવતે ચમેનવ્યવસ્ત્રરિધાનમિષ્યતે ॥૨૦॥

શહિષ્ણી, હસ્ત, ચિત્રા, સ્વાતી, નિશાખા, અનુરાધા, અ-
શ્વિની, ઉત્તરાશાલ્ગુની, ઉત્તરાષાઢા, ઉત્તરા ભાડ્રપદ, પુનર્વસ્ત્ર,
પુષ્ય, રેવતી અને ધનિષ્ઠા આ નક્ષત્રોને વિષે પુરુષોએ નવીન
વસ્ત્ર ધારણું કરવાં શ્રેષ્ઠ છે. ૨૦

(५०)

स्त्रीवस्त्रधारण.

हमतादिपंचकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां च पूषणि ॥

गुरौ शुरे बुधे वारे धार्यस्त्रिभर्नवाम्बरम् ॥ २१ ॥

हस्त, चिना, स्त्र.ती, निथाए, अनुराधा, अश्विनी, ध-
निष्ठा अने रेतती आ नक्षत्रो तथा गुरु, शुक्र अने षुष्ठं आ
आ वारोभां स्त्रीये नवीन वस्त्र धारण कर्वां. २१

जीर्ण खौ सततमंबुभिराद्रमिंदौ

भौमे शुरे बुधदिने च भवेद्धनाय ॥

ज्ञानाय मंत्रिणि भृगौ प्रियसंगमाय

मंदे मलाय च नवाम्बरवारं स्यात् ॥ २२ ॥

रनिवारने द्विसे नवुं वस्त्र धारणु करे तो शीत्र अर्हु(जुनु)
थाय, सोभनारने द्विये अशैय निभित स्तानना जणथी
हंभेथां भीनुं रहे, भंगगनारने द्विसे शोडनी पापि, युधनारने
द्विसे धननी पापि, गुरुगारने द्विसे ज्ञाननी पापि, शुक्र-
वारने द्विसे प्रिय आणुभनो संगम तथा शनिवारने द्विसे
नवुं वस्त्र धारणु करे तो हंभेथां भविन (भेदुं) रक्षा करे. २२

देवाऽपादि प्रतिष्ठा मुहूर्ते.

प्रापादा मरयोः कार्या प्रतिष्ठा चोत्तरायणे ॥

तथा जलाशयारामोत्सर्गः शस्तो विचैत्रके ॥ २३ ॥
 शुक्लपञ्चेनुग मांत्ये पुनर्भै रोहिणो मृगे ॥
 श्रवत्रयोतराहस्तत्रये पुष्ट्येव वौ शुभे ॥ २४ ॥
 सोमोबृहस्पतिश्चैव शुक्रश्चैवतथाबुधः ॥
 एतेवारा शुभाऽप्रोक्ताप्रतिष्ठा यज्ञकर्मणि ॥ २५ ॥

ઉत्तरायणुना सूर्यने विषे चैन रहित थीજ अडिनाओने
 निषे, शुक्लपक्षनं निषे, अनुराधा, रेतती, पुनर्वसु, रोहिणी,
 भृगशीर्ष, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरा इव्युनी, उत्तरा-
 पादा, उत्तरा भाद्रपद, हस्त, चित्रा, स्वाती, अने पुष्ट्य आ न-
 क्षत्रोने निषे तथा श्रेष्ठ चंद्रमाने द्विसे देवस्थान, जगाशय
 अने खगीयानी प्रतिष्ठा श्रेष्ठ छे. सोभवार, गुडवार, शुक्लवार
 अने खुंखवार आ वारै देवस्थान, जगाशय अने खगीयानी
 प्रतिष्ठाना कामने विषे शुल इग आपनारा इच्छा छे. २३-२५

गृहारंभे श्रविशयन ज्ञान.

प्रद्योतनात्यंचनाङ्करूपं नवेंदु पद्मिंशमि-
 तानि भानि ॥ शेते महानैव गृहं विघेयं,
 तडागवापखननं न शस्तम् ॥ २६ ॥

(५२)

सूर्यना नक्षत्रथी पांचमुं, सातमुं, नवमुं, खारमुं, ओग-
श्चीसमुं, अने छवीसमुं नक्षत्र होय तो भूभिथयन जाणुमुं.
आने विषे गृहारंभाहि तथा वाव, तणाव अने कूवातुं घोष्टुं
अ॒४ नथी. २६

गृहारंभे वृषचक्र.

**त्रिवेदवेदाग्नियुगाग्निवेदत्रिकेषुभानोः
शशिभंगृहेषु ॥ दाहो विनाशःस्थिरता
धनं श्रीः शून्यं च दाग्निध्यमृतिःक्रमेण ॥ २७ ॥**

सूर्यना भङ्गा नक्षत्रथी चंद्रना नक्षत्र सुधी गणुनाथी त्रणु
नक्षत्रने विषे दाङ, बीज चार नक्षत्रोने विषे विनाश, त्रीज
चार नक्षत्राने विषे स्थिरता, चौथा त्रणु नक्षत्रोने विषे धनो
लाल, पांचमा चार नक्षत्रोने विषे लक्ष्मीनो लाल, छहा त्रणु
नक्षत्रोने विषे शून्यता, सातमा चार नक्षत्रोने विषे दरिद्रता
तथा आठमा त्रणु नक्षत्रोने विषे भृत्यु आ प्रभाष्ये वृषचक्रोने
विचार करीने गृहारंभ करवो. २७

गृहारंभ मुहूर्त.

**मृगे धातृचित्राऽनुरागोत्तरान्त्ये . .
धनिष्ठाकरस्वातिगुष्याम्बुपेषु ॥**

(૫૩)

નમોમાગેવૈશાખપૌરે તપસ્યે

મન્મહદે શુભાહૈ ગૃહારંમણ સત્ત ॥ ૧૮ ॥

મૃગશીર્ષ, રાહિથી, ચિના, અલુરાધા, ઉત્તરા કાંસુની,
 ઉત્તરાધાદા, ઉત્તરાભાડપદ, રેનતી, ધનિષ્ઠા, હર્તા, સ્વાતી,
 પુષ્ય અને શતભિષા આ નક્ષત્રાને વિષે, શ્રાવણ, માર્ગશીર્ષ,
 વૈશાખ, પૌર્ણ અને ક્રાદ્ધગુન આ મહિનાઓને વિષે તથા શનિ-
 વાર સહિત શુભ યદ (ય. યુ. ગુ. શુ.) ના વારને વિષે શુ-
 હારંભ શ્રેષ્ઠ છે. ૨૮

ખાત શુદ્ધત.

હસ્તિવતિતુલાયાંખણ્યતેચાગિનકોણે

અલિધનમકરાર્કેઝશકોણેવદન્તિ ॥

ઘટશફરતથાજેવાબ્યકોણેપિખાતં

વૃષમિથુનકુલીરેનૈક્રિતેખાતમાહુઃ ॥ ૨૯ ॥

સિંહ, કન્યા અને તુલા સંકાંતિને વિષે અસ્તિ ડાણુમાં,
 વૃત્તિક, ધન અને ભકર સંકાંતિને વિષે ધથાન ડાણુમાં, કુંભ,
 મીન, અને મેષ સંકાંતિને વિષે વાબ્યડાણુમાં તથા વૃષભ,
 મિથુન, અને કર્ક સંકાંતિને વિષે નૈક્રિત્યડાણુમાં આત શુદ્ધત
 કૃતું શુભ છે. ૨૯.

(४८)

स्तंभ चक्र.

सूर्याधिष्ठितभद्रं प्रथमतो मध्ये तथा विंशतिः
 स्तंभाग्रे रसंख्यामुनिवै रुक्तोऽहूर्तं शुभः ॥
 स्तंभाग्रे मरगं भवेद् गृहपते मूले वनायं क्षयो ।
 मध्ये चैव तु सर्वसौख्यमतुलं प्राप्नोति कर्ता शुभम् । ३०

सूर्य नक्षत्रथी दिन नक्षत्र सुधी गणीने हमथी प्रथम ऐ
 नक्षत्र स्तंभना भूषणां तेनुं इण धन क्षय, वीजं वीस नक्षत्र
 स्तंभना भृत्यां तेनुं इण सर्वं सौभ्यकारक, अने वीज
 छ नक्षत्र स्तंभना अग्रभां, तेनुं इण भरण जाणुनुं. ए नक्ष-
 त्रोभां शुभइण आवे तेज नक्षत्रोभां स्तंभारोपण शुभ हे. ३०

मोभचक्र.

मूले मोभे त्रिकक्षं गृहपति मरणं पंचगर्भे सुखं स्यात्
 मध्ये देया षट्कक्षं धन सुत सुखदं पुच्छदेशोऽष्टहानिः ॥
 पश्चादेयं त्रिकक्षं गृहपति सुखदं भाग्य पुत्रार्थदेयं
 सूर्यक्षांचान्द्रकक्षं प्रतिदिन गग्ये नमो भवक्रं विलोक्य ॥

सूर्य नक्षत्रथी दिन नक्षत्र सुधी गणीने प्रथम नथ नक्षत्र
 भूषणां तेनुं इण भृत्य, वीज पांच नक्षत्र गर्भाभां तेनुं इण

સુખ, ત્રીજ આડ નક્ષત્ર મધ્યમાં તેનું ઈળ ધન, સુત અને
સુખ, ચોથા આડ નક્ષત્ર પુરુષમાં તેનું ઈળ ભિત્રનાથ, અને
પાંચમા ત્રણ નક્ષત્ર અથમાં તેનું ઈળ ધર બનાવનારને સુખ,
ભાગ્ય, પુત્ર અને ધનદાયક જાણું. આ પ્રકારે મોખ્યક જેઠને
મેભારોપણ કરવું ૩૧

દ્વારશાસ્વાચક.

અર્કાચલારિ કલ્પાણિ ઊર્ધ્વે ચૈવ પ્રદાપયેત् ॥
દ્વૌ દ્વૌ કોણે ષુદ્ધાદૈ શાસ્વાયાં ચ ચતુશ્રતુઃ ॥૩૨॥
અશ્વા ત્રીણિ દેયાનિ મધ્યે ચત્વારિ દાપયેત् ॥
ऊર્ધ્વે તુ લભતે રાજ્યમુદ્રાસં કોળકેષુ ચ ॥ ૩૩ ॥
શાસ્વાયાં લભતે લક્ષ્મી મધ્યે રાજ્યપ્રદં તથા ॥
અયસ્થે મરગ પ્રોક્તં દ્વારચક્તં પ્રક્રિંતમા ॥ ૩૪ ॥

સૂર્ય નક્ષત્રથી દિન નક્ષત્ર સુધી ગળીને પ્રથમ ચાર નક્ષત્ર
ઉદ્વર્ત્ત ભાગમાં તેનું ઈળ રાજ્ય પ્રાપ્તિ; દ્વારના ઘણા ચાર તો
દરેક ઘૂર્ણામાં બ્યાખે નક્ષત્ર તેનું ઈળ ઉદ્વાસ; દ્વારની શાખા બે
તો બનેમાં, ચાર નક્ષત્ર તેનું ઈળ લક્ષ્મીપ્રાપ્તિ; દ્વારના મધ્યે
ચાર નક્ષત્ર તેનું ઈળ રાજ્યપ્રાપ્તિ; નીચે ત્રણ નક્ષત્ર તેનું ઈળ
મરણ; આ પ્રકારે દ્વારચક્ત જાણું, ૩૨-૩૪ . . .

(५६)

कपाठचक्र.

कृताकरो बिध्युग्मराममनकश्च वारिधिः ॥
 करौ समुद्रसूर्यभाहिनक्षके फलं वदेत् ॥
 धनागमं विनाशसैख्यबंधनं मृतिः क्षतिः ।
 शुभं च रोगसौख्यदंशुभं कपाठचक्रयोः ॥ ३५ ॥

सूर्य नक्षत्रथी द्विन नक्षत्र सुधी गण्डीने प्रथम चार नक्षत्र
 धनागम करे, भीज ऐ नक्षत्र विनाश करे, नीज चार नक्षत्र
 सौख्यकारक जाणुवां, चौथा ऐ नक्षत्र अधनकारक जाणुवां, पांच-
 भा त्रणु नक्षत्र भृत्युकारक जाणुवां, छहां ऐ नक्षत्र क्षयकारक
 जाणुवां, सातभां चार नक्षत्र शुभकारक जाणुवां, आठभां ऐ न-
 क्षत्र रोगकारक जाणुवां, अने नवभां चार नक्षत्र सौख्यकारी जाणुवां
 आ छमाँ चढाववान्तुं यह छे ते शुभ अण्डीने चढाववां ३५

वास्तुपूजन मुहूर्त.

श्रावणश्चाथैशाखपौषश्चफालगुनस्तथा ॥
 मासेषुर्मार्गशीर्षश्चास्तुर्कर्मणिशस्यते ॥ ३६ ॥
 चित्राशतभिषास्वातीहस्तःपुष्यःपुनर्वसुः ॥
 रोहिणीरेवतीमूलंश्रवणोच्चरफालगुनि ॥ ३७ ॥

धनिष्ठाचोत्तराषाढातथाभाद्रोत्तरान्विता ॥
 अश्विनीमृगशीर्षव अनुराधातथैवच ॥ ३८ ॥
 वास्तुपूजन मेतेषु नक्षत्रेषु करोतियः ॥
 सप्राप्नोतिनरोलक्ष्मीमितिप्राहपराशरः ॥ ३९ ॥

આવણુ, વैચાખ, પૌષ, ક્રાંતિનું અને ભાર્ગથીર્ષ આ
 મહિનાઓ વાસ્તુ કર્મભાં શુભ છે. ચિત્રા, શતલિધા, સ્વાતી,
 હસ્ત, પુષ્ટ, પુનર્ણસુ, રોહિણી, રેવતી, મૂળ, શ્વાસ, ઉત્તરા-
 ક્રાંતિની, ધનિષ્ઠા, ઉત્તરાષાઢા, ઉત્તરા લાદ્રપદ, અશ્વિની,
 મૃગથીર્ષ તથા અનુરાધા આ નક્ષત્રોને વિષે જે પુરુષ વાસ્તુ
 પૂજન કરશે તે પુરુષ લક્ષ્મીને પાભશે. આ પ્રમાણે પરાશર
 સુની કહે છે. ૩૬-૩૮

गृहमवेशमुहूर्तं.

गृहारंभोदितैर्मासैर्विष्ण्यैर्वारैर्विशेषद् गृहम् ॥
 विशेत्सौम्यायनेहर्म्यकृत्वाप्राग्वास्तुपूजनम् ॥ ૪૦ ॥

ઉત્તરાયશુના સૂર્યભાં ગૃહ પ્રવેશ કરવો તેમાં 'પ્રથમ' વા-
 સ્તુ દેવતાનું પૂજને કરીને ગૃહારંભના શુદ્ધાર્માં કઢેલા ભાસ,
 નક્ષત્ર અને વારના દિવસે ગૃહ પ્રવેશ કરવો. ૪૦

कलशचक्र ।

प्रवेशः कलशोऽर्ककर्त्तात् पंचनागाष्टष्टकमात् ॥

अशुभं च शुभं ज्ञेयमशुभं च शुभं तथा ॥ ४१ ॥

सूर्य नक्षत्रार्थी दिन नक्षत्र सुधी गणीने प्रथम पांच नक्षत्र अशुभ, भीजां आठ नक्षत्र शुभ, त्रीजां आठ नक्षत्र अशुभ, चैथां छ नक्षत्र शुभ जाणुनां. आ इग्याच्छ ऐर्धने अह प्रतेश करने. ४१

जलाशयारंभमुहूर्तं.

अनुराधापघाहस्ते रेव नीषूतरात्रये ॥

रोहिणीयुग्ले पुष्ये धनिष्ठाद्वितये तथा ॥ ४२ ॥

पूर्वाषाढाभिघेभे च शुमे मासि शुमे दिने ॥

वापीकूपतडागानामारंभः कथितो बुधैः ॥ ४३ ॥

अनुराधा, भधा, हस्त, रेवती, त्रेते उत्तरा, रौद्रिणी, भूगर्थीर्ष, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिष्ठा अने पूर्वाषाढा आ नक्षत्रोभां तथा शुभ भास शुभ दिवसभां वाच, कुवा, तणाव आदि जगाशयेनो आरंभ पंडितेअ शुभ क्षेत्रे छे. ४२-४३

रविवारे जलं नास्ति सोमे पूर्णजलं भवेत् ॥

वालुमा भौमवारे तु बुधे बहु जलं भवेत् ॥ ४४ ॥

गुरौ च मधुरं तोयं शुके क्षारं प्रजापते ॥

शनैश्च रे जलं नास्ति कीर्तिं वारजं फलम् ॥ ४५ ॥

रविवारे जगाशयनो आरंभ करे तो जग न नीडणे, च-
द्रवारे पूर्ण जग नीडणे, भंगणवारे रेती नीडणे, युधवारे
घुडु जग नीडणे, गुडवारे भीडु जग नीडणे, शुक्लवारे खाइं
जग नीडणे अने थनिवारे जग न नीडणे. आ प्रकारे वार इण
कहेलुं छे. ४४-४५

कृपचक्र.

सजलखण्डजले सजलाजले

शुभजलं लवणं च शिलाजलम् ॥

लवणमुष्णकरा हिनभावधि

नवफलानिविदुस्त्रितयोद्धुभिः ॥ ४६ ॥

सूर्य नक्षत्रथी दिन नक्षत्र सुधी गणीने प्रथम तथा नक्षत्र-
मां सजग, वीज तथा नक्षत्रमां घंडजग, त्रीज तथा नक्षत्रमां
जग, चौथा तथा नक्षत्रमां निर्जग, पांचमा तथा नक्षत्रमां
उत्तमजग, छठा तथा नक्षत्रमां खाइं जग, सातमा तथा नक्ष-
त्रमां कांकरीअणुं जग, आठमा तथा नक्षत्रमां उत्तम जग तथा
नवमां तथा नक्षत्रमां पाठं भ करे तो खाइं जग नीडणे. ४६

હળપવાહ સુરૂત્ત.

અનુરાવાચતુર્ષક ચ મઘાદિતિયુગે કરે ॥

સ્વાતી શ્રુતિવિધિદ્બન્દે રેવત્યામુત્તરાસુ ચ ॥

મોસ્ત્રીયુગ્મે હલઃ કાર્યા મીને હૈયઃ શનિઃ કુજઃ ॥

ષષ્ઠી રિક્તા દ્વાદશી ચ દ્વિતીયા દ્વયપર્વ ચ ॥૪૮॥

અનુરાધા, જ્યેષ્ઠા, ભૂણ, પૂર્વાખાદા, ભધા, પુનર્વસુ, પુષ્ય, હસ્ત, સ્વાતી, અવણુ, રોહિણી, ભૃગશીર્ષ, રેવતી, ત્રણે ઉત્તરા, તથા વૃષભ, કન્યા, મિથુન અને મીન લગ્નમાં હળપવાહ એક છે. થનિ અને મંગળવાર તથા ષષ્ઠી, રિક્તા, તિથિ, દ્વાદશી, દ્વિતીયા અને અમાવાસ્યા હળપવાહમાં વર્જિત છે. ૪૭-૪૮

હલચક્ર.

ત્રિકંત્રિકંત્રિકંપંચત્રિકંપંચત્રિકંત્રિકમ् ॥

સૂર્યમાહિનભંયાવદ્ધાનિવૃદ્ધિહલેક્રમાત ॥ ૪૯ ॥

સૂર્ય નક્ષત્રથી દિન નક્ષત્ર સુધી ગળ્ણિને પ્રથમ તણુ નક્ષત્રમાં હાનિ, બીજું તણુ નક્ષત્રમાં વૃદ્ધિ, ત્રીજી તણુ નક્ષત્રમાં હાનિ, ચોથા પાંચ નક્ષત્રમાં વૃદ્ધિ, પાંચમા તણુ નક્ષત્રમાં હાનિ, છટ્ઠા પાંચ નક્ષત્રમાં વૃદ્ધિ, સાતમા તણુ નક્ષત્રમાં હાનિ તથા આડમા તણુ નક્ષત્રમાં વૃદ્ધિ આ પ્રમાણે હળચક્રમણ હળપવાહ કરશે. ૪૯

(६१)

बोजोसिष्युहृत्.

हस्ताश्चिपुष्योत्तरोहिणीषु
 चित्रानुराघामृगरेवतीषु ॥
 स्वातौ धनिष्ठासुमघासुमूले
 बीजोसिरुक्तुष्टफलप्रदिष्ठाः ॥ ५० ॥

હસ્ત, અધિની, પુષ્ય, ગણે ઉત્તરા, રેહિણી, ચિત્રા, અ-
 તુરાધા, મૃગશીર્ષ, રેવતી, સ્વાતી, ધનિષ્ઠા, મધા અને મૂળ
 આ નક્ષત્રોમાં ભીજેસિકાર્ય કરવાથી ઉત્કૃષ્ટ પ્રકારે કુળાયક
 થાય છે. ५०

चુલ્હીચક્ર.

सूર्यभાદંગવેદાષ્ટરામશત્રુશુભાશુભમ् ॥
 ચુલ્હીચક્રમાત્જેયશુભાશુભવિચક્ષણમ् ॥ ५१ ॥

સૂર્યનક્ષત્રથી દિન નક્ષત્ર સુધી ગણીને પ્રથમ છ નક્ષત્ર શુભ,
 ખીજ ચાર નક્ષત્ર અશુભ, ત્રીજ આઠ નક્ષત્ર શુભ, ચૈથા નષ્ટ
 નક્ષત્ર અશુભ અને પાંચમા છ નક્ષત્ર શુભ આ પ્રકારે ચક્રાર્થ
 શુભાશુભ કુળ નિયારી ચુલ્હી સ્થાપન કરવાને અર્તાવકું. ५१

કોલ્હૂચક્ર.

સूર्यભાત્યંચંચેષુ તામયુમશરત્રિકમ् ॥

(५२)

न सच्चुभमसह खं क्लेशं शुभमतोऽशुभम् ॥
कोहृचके साभिजिते ज्ञेयमेवं विचक्षणैः ॥ ५२॥

सूर्य नक्षत्रथी दिन नक्षत्र सुधी अभिजित सहित गणीने
प्रथम पांच नक्षत्रोभां डाल यलानवाने आरंभ करे तं अशुभ,
बीज पांच नक्षत्र शुभ, त्रीज पांच नक्षत्र अशुभ, चौथा त्रिंशु
नक्षत्र हुःअ, पांचभा ए नक्षत्र क्लेश, छठा पांच नक्षत्र शुभ
अने सातभा त्रिंशु नक्षत्र अशुभ जाणुवां. ५२

चूडीधारणमुहूर्तं.

नासत्यपौष्णवसुभैः करपंचकेन
मार्तण्डभौमगुरुदानवमंत्रिवौरैः ॥

मुक्तासुवर्णमर्णविद्रुपशंखदन्त

रक्ताम्बराणिविघ्नानि भवंति सिद्धौ ॥ ५३॥

अधिनी, रैवती, धनिष्ठा, हर्षा, चित्रा, स्वाती, विशाखा
अने अनुराधा आ नक्षत्रोभां तथा सूर्य, भग्नि, गुरु अने
शुक्र आ वारैने विषे भोती, सुवर्ण, भणि, विद्रुप, शंख,
हस्तीदंतनो औडो तथा रक्तावस्थ धारणु करवाथी सिद्धी याय. ५३

चूडीचक्र.

यावद्भास्करभुक्तिमानिदिवसेधिष्णानिसंख्यातंथा

वन्हिर्भूतगुणाविसपनयनं पृथ्वीकरेन्दुक्रमात् ॥
 सूर्यार्द्धविसौम्यरातुरविजाजीवःशरीकेनवः
 कूरेऽसच्चशुभेशुभंचकथितं चक्रेकरेभूषणे ॥ ५४ ॥

सूर्य स्थित नक्षत्रथी द्विन नक्षत्र सुधी गणी त्रिषु, पांच,
 त्रिषु, चार, सात, ऐ, अङ्क, ऐ, अने अङ्कमधी सूर्य, भंगण, शुङ्क,
 शुङ्क, राष्ट्रशनि, षट्करपति, चांद्र, उतु आमां शुभ अङ्कमां द्विन
 नक्षत्र होय तो शुभ तथा पाप अङ्कमां होय तो अशुभ अशुवुः.
 आ प्रकारे पंडिताए दीयड कहेलुँ छे. ५४

हवनचक्र.

सूर्यमात्रित्रिमे चान्द्रे सूर्यविचक्तुक्रपंगवः ॥
 चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खलेः ॥५५॥

सूर्य नक्षत्रथी त्रिषु त्रिषु नक्षत्र अमधी सूर्य, शुङ्क, शुङ्क,
 शनि, चांद्र, भंगण, षट्करपति, राष्ट्र, उतुना होय छे तेमां
 शुभअङ्क होय तो होमनी आहुति श्रेष्ठ तथा पापअङ्क होय तो
 होमनी आहुति नेष्ट अशुवी. ५५

विवाहप्राप्तवतगोचरे चूडोपनी तेग्रहणेयुगादैः ॥
 दुर्गाविधानेनसुरप्रसूतोनवामिचक्रं परिचिंतनीयम् ५६

(૬૪)

વિવાહ, ધારા, પ્રતયાતિ, અહોચર, સુંડન, ઉપનથન,
અહણ, યુગાદિ, દુર્ગાવિધાન અને સંતાન પ્રસ્તુતાને વિષે અજિન
ચહની ચિંતા કરવી નહીં અર્થાતું જેવું નહીં. ૫૬

અગ્રિવાસ.

સैકા તિર્થિર્વાખ્યુના કૃતાપ્તા
શેષે ગુણેડ્રમે ભુવિ વન્હિવાસઃ ॥
સૌલ્યાય હોમે શશિયુગ્મશેષે
પ્રાણાર્થનાશૌ દિવિ ભૂતલે ચ ॥ ૫૭ ॥

શુદ્ધપક્ષની પ્રતિપદા તિથિથી ગણીને વર્ત્માન તિથિની
સંઘ્યામાં એક જેડીને રવિવારાદિ વારની સંઘ્યા એડવી અને
આરનો ભાગ આપવાથી જે શેષ નણું અર્થવા પૂર્ણ વધે તો અજિનનો
વાસ પૂર્થીમાં જણુવો, તેનું કેળ સુખ પ્રાપ્તિ, એક શેષ વધે
તો અજિનનો વાસ સ્વર્ગમાં જણુવો તેનું કેળ પ્રાણ નાશ, અને એ
શેષ વધે તો અજિનનો વાસ પાતળમાં જણુનો, તેનું કેળ ધન નાશ.

ભૈષજ્યકર્મસુરૂત.

અકાશિપુષ્ય શ્રવણત્રયે ચ
મૂલાદતિસ્વાતિમગે પૈદળે ॥

(६५)

चित्रासु मैत्रेषु शुभेहि साकै भैषज्यकर्म प्रवरं विरिके ॥ ५८ ॥

हस्त, अक्षिनी, पुण्य, श्रवण, चनिष्ठा, शतभिषा, भूषण,
पुनर्वसु, स्वाती, भृगशीर्ष, रैवती, चित्रा अने अनुराधा आ
नक्षत्रभां तथा रविवार सहित शुभअडोना द्विसोभां, रिक्ता
४-८-१४ तिथि विना वील तिथआभां आषध लेवाथी शुभ छे.

रोगमुक्तस्नान.

इन्दोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु
सार्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ॥
पित्र्ये चांत्ये चैव कुर्यात्कदाचि-
त्रैव स्नानं रोगमुक्तस्य जंतोः ॥ ५९ ॥

यं द्रवार, शुडवार आ वारोने विषे तथा रैहिणी, त्रेषु
उत्तरा, आश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाती, भधा, अने रैवती आ त्य-
त्रोने विषे रागथी भुक्ता थयेदा पुरेषे डैर्ध वर्षत स्नान ।

उत्पन्न रोगे शुभाशुभ विचार. .

स्वात्यश्लेषारौद्र पूर्वात्रयेषु
• शाकेभौमे सूर्यजे सूर्यवारे

(६६)

नन्दारिकास्वेव रोगस्य चासि-
मृत्युज्ञेयः शङ्करो रक्षितापि ॥ ६० ॥

स्वाती, आश्लेषा, आर्दा, नष्टे पूर्वा अने ज्येष्ठा आ
नक्षत्रोने विषे; भंगण, शनि अने रवि आ वारोने विषे तथा
नंदा १-६-११ तिथि अने रिक्ता ४-८-१४ तिथि आ
तिथेओने विषे रोगनी उत्पत्ति थई होय तो ते भनुष्यनी
शंकर रक्षा करे तोपशु मृत्यु थाय. ६०

सर्पदंशे शुभाशुभ विचार.

यः कृत्तिका मूल मधा विशाखा
सार्पान्तकार्द्वासु भुजंग दष्टः ॥
सवैनतेयेनसु रक्षितोऽपि
प्रयाति मृत्योर्विदनं मनुष्यः ॥ ६१ ॥

कृतिका, भूण, भधा, विशाखा, आश्लेषा, भरणी, अने
आर्द्रा आ नक्षोंभां जे भनुष्यने सर्प करडे ते भनुष्यनी
गडड रक्षा करे तोपशु मृत्यु थाय. ६१

वाणिज्यकर्म.

अनुराधोत्तरा पुष्य रेवती रोहिणी मृगे ॥
हस्त चित्राश्विभे कुर्याद्वाणिज्यं दिवसे शुभे ॥ ६२ ॥

(६७)

अनुराधा, नथे उत्तरा, पुण्य, रेवती, राहिणी, मृगधीर्षि,
हस्त, चित्रा अने अक्षिनी आ नक्षत्रोने विषे तथा शुभ दि-
वसने विषे वाणिज्य कर्म शुभ छे. ६२

क्रयविक्रयमुहूर्तं.

पुष्यं भाद्रपदा युग्मं स्वाती च श्रवणाश्विनी ॥
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रंतथाऽश्लेषा च रेवती ॥ ६३ ॥
ग्राह्यानि भानिचैतानि क्रयविक्रयेण बुधैः ॥
चन्द्र भार्गवजीवाश्वत्राराः शकुन उत्तमः ॥ ६४ ॥

पुण्य, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, स्वाती, श्रवण, अक्षि-
नी, हस्त, उत्तराश्लेषुनी, मृगधीर्षि, अनुराधा, आरलेखा
अने रेवती आ नक्षत्रोने विषे तथा चन्द्र, शुक्र अने शुद्धवारने
द्विवसे उत्तम शुड्न ऐर्धने क्रयविक्रय (भरीद्वुः; वेद्यवुः) कर्मशुभछे.

तैलाभ्यंग.

रविस्तापंकानिं वितरति शशिभूमि तनयो
मृतिं लक्ष्मीं सौम्यः सुरपति गुरुर्वर्त्त हरणम् ॥
विपत्तिं दैत्यानां गुरुमखिल भोगानुगमनो
नृणां तैलाभ्यंगात्सपदि कुरुते सूर्य तनयः ॥ ६५ ॥

रविवारे तैलाल्यंग तापप्रद, सोभवारे कान्तिप्रद, भंग-
णवारे भृत्यप्रद, शुधवारे लक्ष्मीप्रद, गुडवारे वित्तविनाशक,
शुडवारे विपत्तिप्रद, तथा शनिवारे तैलाल्यंग स्नान स पति-
दायक जाणुवुः ६५.

पशुक्रयविक्रय मुहूर्त.

चित्रोत्तरा वैष्णव रौहिणीषु
चतुर्दशी दर्शदिवाष्टमीषु ॥
ग्रह प्रवेशं गमनं विदध्या-
द्धीमान् पशूनां न कदाचिदेव ॥ ६६ ॥

थित्रा, त्रिष्ठु उत्तरा, अवस्था अने रौहिणी आ नक्षत्रोभां
तथा चतुर्दशी, अभावास्यानो दिवस अर्थात् प्रातःकाण्ठी सं-
ध्याकाण सुधी अने अष्टमी आ तिथिएभां पशुओने पोताना
धरथी खडार नहीं काढवां अने खडारथी धरभां पशु लाववां
नहीं; अर्थात् आ मुहूर्तभां पशुनो छय विछय करवो नहीं ६६

संक्रान्ति पुण्यकाल.

याम्यायने विष्णुपदेचाश्रामध्यास्तुला जयोः
ष्टुलात्यानने साम्ये परानाडयोऽति पुण्यदाः ६७।।

(६६)

કર્કા, સિંહ, વૃશ્ચિક, વૃષભ અને કુંભ રાયિની સંકાતિમાં
પ્રથમની સોળ ધડી, તુળા અને મેષ રાયિની સંકાતિમાં ભ-
ધ્યની સોળ ધડી અર્થાતું આઠ પહેલી અને આઠ પાછળની,
તથા ભિથુન, ફન્યા, ધન, ભીન અને મકર રાયિની પાછળની
સોળ ધડી પુરુષકાળ જાણુંની. ૬૭

અસ્તમાં વર્જનીય કર્મ.

વાપી કૂપ તડાગ યજ્ઞ ગમનં ક્ષૌરં પ્રતિષ્ઠા બ્રતં
વિદ્યામન્દિર કર્ણવૈધન મહા દાનં ગુરોः સેવનમ् ॥
તીર્થસ્નાન વિવાહ દેવભવનં મંત્રાદિ દેવેક્ષણં
દૂરેણૈવ જિજીવિષુઃ પરિહરેદસ્તે ગુરૌ ભાર્ગવે ॥૬૮

વાવ, કૂપ, તળાવ, યજ્ઞ, યાના, ચૈલ (ક્ષૈલ), દેવમ-
તિષા, યજ્ઞપવીત, વિધારંભ, અહુપ્રવેશ, કર્ણવૈધન, મહાદાન,
ગુરુસેવા, તીર્થસ્નાન, વિવાહ, દેવમંદિર, મંત્રાપહેશ અને દેવનાં
દર્શન આ સર્વ કર્મો જીવનાની ઈચ્છાવાળા પુરુષે ગુરુ તથા
શુક્લના અસ્તમાં વર્જિત કરનાં. ૬૮

શુક્લવિચાર.

એક ગ્રામે પુરે વાપિ દુર્મિક્ષેરાષ્ટ્રવિપ્રવે ॥
‘વિવાહે તીર્થયાત્રાયાં પ્રતિશુક્લો ન વિદ્યતે ॥ ૬૯ ॥

(७०)

गामभांथी गामभां जवुं होय अथवा शहेरभांथी शहेरभां
जवुं होय तेभां, हुर्बिक्ष कणभां, हेशोपद्रवभां, विवाहभां तथा
तीर्थ्यात्राभां सन्मुख शुक्नो होय नथी. ६६

पौष्णदावामि पादांतंयावत्तिष्ठति चंद्रमाः ॥

तावच्छुक्रोमवेदंधः सन्मुखं गमनं शुभम् ॥ ७० ॥

रेवती, अश्विनी, भरणी, अने कृतिका नक्षत्रेना प्रथम च-
२षुभां चंद्रभा आवे तो शुक्र अंध जाणुवो. आ शुक्र यात्राभां
सन्मुख होय तो पशु होय नहीं. ७०

दक्षिणे दुःखदः शुक्रः सन्मुखे हंतिलोचनम् ॥

वामे पृष्ठे शुभोनित्यं रोधयैदस्तगः शुभम् ॥७१॥

यात्राभां शुक्र जमणु भागे होय तो दुःखदायक जाणुवो,
सन्मुख होय तो नेत्रनाशक जाणुवो, दाढा भागे अने पाछला
भागे होय तो भंगण हायक जाणुवो, पूर्वभां अस्त होय तो
पश्चिमभां गमन शुल तथा पश्चिमभां अस्त होय तो पूर्वभां
गमन शुभ जाणुवुं. ७१

हस्तेन्दु मैत्र श्रवणाश्चि पुष्य

पौष्ण श्रविष्ठा श्रि पुर्वसुश्रि ॥

प्रोक्ता निधिष्णानि नव प्रयाणे

त्यक्त्वात्रि पंचादिम सप्त ताराः ॥ ७२ ॥

हुसन, भृगशीर्ष, अनुराधा, श्रवण, अश्विनी, पुष्य, रैवती,
अने धनिष्ठा आ नव नक्षत्रो यात्राभां श्रेष्ठ छे; परंतु त्रील्ल,
पांचभी, पहेली अने सातभी आ ताराओ यात्राभां वर्जितछे.

कृत्तिकाः एकविंशत्या भरण्याः सप्तनाडीकाः

एकादश मध्यायाश्चत्रिपूर्वाणां च षोडश ॥ ७३ ॥

स्वात्यश्लेषा विशाखासु ज्येष्ठायाश्च चतुर्दश ॥

आद्यास्तु घटिकास्त्याज्याः शेषांशे गमनं शुभम् ॥ ७४

कृतिकानी ऐकवीस धडी, भरणीनी सात धडी, भधानी
अग्नीयार धडी, त्रेषु पूर्वानी सोण धडी अने स्वाती, आश्लेषा,
विशाखा तथा ज्येष्ठा आ नक्षत्रोनी प्रथमनी चौह धडी त्याग
करीने शेष धडी यात्राना निभित शुभ जाशुवी. ७३-७४.

अर्केक्षेषमनर्थकं च गमने सोमे च बंधु प्रियं

चाङ्गारेऽनलतस्कर ज्वर भयं प्राप्नोति चार्थं बुधे ॥

क्षेमारोग्य सुखं करोति च गुरौ लाभश्च शुक्रे शुभो
मंहे बंधन हानि रोग मरणा न्युक्तानिगर्गादिभिः ॥ ७५

रविवारे गमन करे तो भाग्मीं क्लेश अने अर्थनी
हानि होय, सोमवारे गमन करे तो बंधु अने प्रिय दर्शन
होय, मंगलवारे गमन करे तो अस्ति, चौर, भय अने ज्वर
होय, शुधवारे गमन करे तो द्रव्य अने सुख प्राप्ति होय,
गुरुवारे गमन करे तो आरोग्य अने सुख होय, शुक्रवारे ग-
मन करे तो लाल अने शुभकृण प्राप्ति तथा शनिवारे गमन
करे तो बंधन, रोग अने भरण प्राप्ति होय. ७५

दिक्षूल.

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वा दक्षिणां च दिशं गुरौ ॥
सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तरम् ७६॥

शनिवार अने अंद्रवारे पूर्व दिशामां, गुरुवारे दक्षिण
दिशामां, रविवार अने शुक्रवारे पश्चिम दिशामां तथा शुधवार
अने मंगलवारे उत्तर दिशामां शूण रहेछे, ते यात्रामांवर्जितछे.

मंगले मारुते शूलं ईशाने बुध मंदयोः ॥
नैऋते शुक्र सूर्याभ्यां आग्रेयां गुरु सोमयोः ७७॥

मंगलवारे वाय०४ डाणुमां, शुधवार अने शनिवारे ईशान
डाणुमां, शुक्रवार अने रविवारे नैऋत्य डाणुमां, तथा गुरुवार
अने अंद्रवारे अस्ति डाणुमां शूण रहे छे. ७७

(७३)

नक्षत्र शूल.

उत्तर हत्था दक्षिण चित्ता
 पूर्वा रोहिणी सुगिरेमिता ॥
 पञ्चम श्रवणा न कर्त्तश गमणा
 हस्तिर ब्रह्म पुरंदर मरणा ॥ ७८ ॥

हे भिन्न-हस्त नक्षत्रने हिवसे उत्तर दिशाभाँ, चित्ता नक्षत्र-
 ने हिवसे दक्षिण दिशाभाँ, शाहिणी नक्षत्रने हिवसे पूर्व दिशाभाँ
 तथा श्रवण नक्षत्रने हिवसे पञ्चम दिशाभाँ गमन करीय नहीं;
 डेमडे ते दिशाभाँ विश्व, भजादेव, अक्षा अने धंद्र गमन करे
 तो तेमनुं पशु भृत्यु थाय छे. ७८

शूलदोष निवारणार्थ भक्षण.

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा
 गुडमांगारकेचैव बुधवारे तिलानपि ॥ ७९ ॥
 गुरुवारे दधिज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि ॥
 माषान् भुक्त्वा शनैर्वर्षारे शूल दोषोपशांतये ॥ ८० ॥

रविवारे धी, चंद्रवारे द्रूध, भगवारे गोण, शुक्रवारे तख,
 शुक्रवारे दही, शुक्रवारे यव अने शनिवारे शूल होपनी शांतिने
 अर्थे अडद लक्षण करीने यात्रा करवी. ७९-८०

(७४)

कालवास.

अर्कोत्तरे वायु दिशा च सोमे
 भौमे प्रतीच्यां बुधनैर्हृते च ॥
 याम्ये गुरौवन्हिदिशा च शुक्रे
 मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालः ॥ ८१ ॥

रविवारे उत्तर दिशाभां, यंद्रवारे वायव्य डाणुभां, अंग-
 गवारे पश्चिम दिशाभां, युधवारे नैऋत्य डाणुभां, गुरुवारे
 दक्षिण दिशाभां, शुक्रवारे अग्निं डाणुभां अने थनिवारे पूर्व-
 दिशाभां काणो। वास जाणुवो अवुं पूर्वाचार्य इहे छे, ते
 यात्राभां वर्जित छे. ८१

कालराहु.

रविदिन गुरु पूर्वे सोम शुक्रे च याम्ये
 वरुणदिशितु भौमे चोत्तरे सौरिसंस्थे ॥
 प्रतिदिभ मितिमत्वाक्ताल राहुर्दिशानां
 सकल गमन कार्ये वामपृष्ठे च सिद्धिः ॥ ८२ ॥

रविवार अने गुरुवारे पूर्व दिशाभां, सेषवार अने शुक्र-
 वारे दक्षिण दिशाभां, अंगगवारे पश्चिम दिशाभां अने थनिवारे

(७५)

उत्तर दिवाभां अभन करे तो छालराहु वाम पृष्ठ भागभां जाणुवो,
तेभां गभन करे तो सर्वकार्यनी सिद्धि होय. ८२

योगीनीवास.

१। तिपन्नवमी पूर्वोद्दितीया दश चोत्तरे ॥
तृतीयैकादशी वन्हौ चतुर्दादशी नैऋते ॥ ८३ ॥
पंचत्रयोदशी याम्ये पृष्ठी भूते च पञ्चिमे ॥
सप्तपूर्णासु वायव्ये अमावास्याष्टमीशिवे ॥ ८४ ॥

प्रतिपदा अने नवभीना दिवसे पूर्वभां, द्वितीया अने
हथभीना दिवसे उत्तरभां, तृतीया अने अङ्कादशीना दिवसे
अजिंडाशुभां, चतुर्थी अने द्वादशीना दिवसे नैऋत्य डाणुभां,
पंचमी अने चत्योदशीना दिवसे दक्षिणभां, षष्ठी अने चतुर्दशीना दिवसे पञ्चिमभां,
सप्तमी अने पूर्णिमाना दिवसे वायव्य डाणुभां तथा अमावास्या अने अष्टमीना दिवसे ईशान डाणुभां
योगिनीनो वास जाणुवो. ८३-८४

योगिनी सुखदावामे पृष्ठे वांछितदायिनी ॥
दक्षिणोधनहंत्री च सन्मुखे मरणप्रदा ॥ ८५ ॥

इषे भागे योगिनी होय तो सुभप्रद जाणुवी, पाषला

(७६)

આગે યોગિની હોય તો વાંછિત કુળ આપનારી જાણવી, જમણા
ભાગમાં યોગિની હોય તો ધનનો નાશ કરનારી જાણવી, તથા
સન્મુખ યોગિની હોય તો મરણપ્રદ જાણવી. ૮૫

चન્દ્રવાસ.

મેષે ચ સિંહે ધનુ પૂર્વમાગે
વૃષે ચ કન્યામકરે ચ યામ્યે ॥
શુગ્મે તુલા કુંભસુ પશ્ચિમાયાં
કર્કાલિમીને દિશિચોત્તરસ્યામ् ॥ ૮૬ ॥

મેષ, સિંહ અને ધનનો ચંદ્રમા પૂર્વ દિશામાં જાણવો,
વૃષભ, કન્યા અને ભકરનો ચંદ્રમા દક્ષિણ દિશામાં જાણવો,
ભિથુન, તુળા અને કુંભનો ચંદ્રમા પશ્ચિમ દિશામાં જાણવો,
તથા કર્ક, વૃશ્ચિક અને ભીતનો ચંદ્રમા ઉત્તર દિશામાં જાણવો. ૮૬
સન્મુખેર્થ લાભાય દક્ષિણે સુખ સંપદઃ ॥
પૂર્ણે ચ પ્રાણનાશાય વામે ચન્દ્રે ધન ક્ષયઃ ॥ ૮૭ ॥

દિશાનુસાર સન્મુખ ચંદ્રમામાં યાત્રા કરે તો અર્થ લાભ
હોય, જમણા ભાગમાં હોય તો સુખ અને સંપત્તિ હોય,
પાછલા ભાગમાં હોય તો પ્રાણવો નાશ કરે તથા ડાબા આગે
હોય તો ધનનો ક્ષય કરે. ૮૭

(૭૭)

કરણ ભગણ દોષં વાર સંચાનિત દોષં
 કુતિથિ કુલિકદોષં વામયામાર્વ દોષમ् ॥
 કુજ શનિ રવિ દોષં રાહુ કેત્વાદિ દોષં
 હરતિ સકલ દોષં ચન્દ્રમા સન્મુખસ્થઃ ॥ ૮૮ ॥

કરણ, નક્ષત્ર, વાર, સંચાનિ, કુતિથિ, કુલિક, વામ, યામાર્વ,
 મંગળ, શનિ, રવિ, રાહુ, ડેતુ આદિના હોષેને સન્મુખસ્થ ચંદ્રમા
 હરણ કરે છે. ૮૮

કાલવેલા વિચાર.

પૂર્વાહેત્રોત્તરાં ગચ્છેત્પ્રાચ્યાં મધ્યાનહકે તથા ॥
 દક્ષિણેચાપરાહેતુ પશ્ચિમેત્વર્ધ રાત્રકે ॥ ૮૯ ॥

દ્વિસના નણુ ભાગ કરવા તેમાં પડેલા ભાગમાં ઉત્તર
 દિશાની યાત્રા, બીજી ભાગમાં પૂર્વ દિશાની યાત્રા, ત્રીજી ભાગમાં
 દક્ષિણ દિશાની યાત્રા તથા અડધી રાત્રે પશ્ચિમ દિશાની યાત્રા
 કરવી શ્રી. ૮૯.

. રુંતીયં સુહૂરતરતં સમાપ્તમ् ॥ ૩ ॥



॥ चतुर्थसंस्काररत्नप्रारंभः ॥

तत्रादौ क्रतुपतीस्नान.

ज्येष्ठानुराधा करोहिणीषु स्वाती धनिष्ठाश्चि
मृगोत्तरासु ॥ रजोवती स्नानविधिं प्रकुर्या-
च्छुभेषु वारेषु शुभे तिथौ च ॥ १ ॥

रोहिणी द्वितये स्वातौ हस्ते वै रेवती द्वये ॥

स्नायातु युवतीगर्भ विधत्ते शीघ्रमेवहि ॥ २ ॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, रोहिणी, स्वाती, धनिष्ठा,
अश्विनी, मृगशीर्ष, अने त्रये उत्तरा आ नक्षत्रोभां तथा शुभ
वार अने शुभ तिथिभां रञ्जेवती स्त्री स्नान करे. रोहिणी,
मृगशीर्ष, स्वाती, हस्त, रेवती अने अश्विनी आ नक्षत्रोभां
रञ्जेवती स्नान करे तो शीघ्र गर्भ वारणु करे. १-२.

गर्भाधान मुहूर्त.

भद्रा पूर्णी पर्व रिक्ताश्च संध्या भौमार्कार्की ना-
द्यरात्रीशतसः ॥ गर्भाधानं त्रयुत्तरेन्द्रकं मैत्रब्राह्मस्वा-
तीविष्णुवस्वं बुपेसत् ॥ ३ ॥

(૭૯)

ભદ્રા, પાઠી, પર્વિન, રિક્તાતીથિ, સંધ્યાસમય, મંગળ,
રનિ, શનિ તથા રજેદર્શન પહેલાંની ચાર રાત્રી વર્જિંત ફરીને
ત્રણે ઉત્તરા, મુગશીર્ષ, હસ્ત, અતુરાધા, રોહિણી, સ્વાતી, શ્રવણ,
ધનિષ્ઠા તથા શતાભિષા આ નક્ષત્રને વિષે ગર્ભાધીન શુભછે. ૩

પુંસવનસીમંતમુહૂર્ત.

આદ્રાત્રયં ભાદ્રયુગમં મૃગઃ પૂષાશ્રુતિઃકરઃ ॥
મુલત્રયં ગુરા સૂર્ય ભૌમે રિક્તાં વિના તિથિઃ ॥ ૪ ॥
આદ્યે દ્વયે ત્રયે માસે લગ્ને કન્યાજ્ઞાષે સ્થિરે ॥
ચાપેપુંસવનંકુર્યાત્સીમન્તંચાષ્મેતથા ॥ ૫ ॥

આદ્રા, પુનર્વસુ, પુષ્ય, પૂર્વાલાદ્રપદ, ઉત્તરાભાદ્રપદ,
મુગશીર્ષ, રેવતી, શ્રવણ, હસ્ત, મૂળ, પૂર્વાખાડા અને ઉત્તરા-
ખાડા આ નક્ષત્રો; ગુરુ, સૂર્ય, અને મંગળ આ વાર તથા રિક્તા
તિથિ વિના અન્યનિથિએભાં સીમંતકર्म શ્રેષ્ઠ છે. ગર્ભથી
પહેલા બીજ અને ત્રીજ માસમાં તથા કન્યા, મીન, વૃષભ,
સિંહ, વૃંશિક અને દુંલ આ લગ્નોભાં પુંસવનકર्म શ્રેષ્ઠ છે.
ગર્ભથી આઠમા માસમાં સીમંત કર્મ શ્રેષ્ઠ છે. ૪-૫

प्रसूतास्नान ब्रह्मर्त.

हस्ताश्विनीत्रयुत्तर रोहिणीषु

मृगाऽनुराधा पवनांयभेषु ॥

स्नायाप्रसूता गुरु भानु भौमे

त्यक्त्वा हरेवासरमष्ट षष्ठीम् ॥ ६ ॥

स्नाता प्रसूताप्यसुता बुधेन

स्नाताच वंध्या भृगुनंदनेन ॥

सौरेष्टिः क्षीरहतिश्च सोमे

पुत्रार्थलाभो रविजीव भौमे ॥ ७ ॥

हस्त, अश्विनी, त्रिषु उत्तरा, रेण्डिष्टी, भृगशीर्ष, अनु-
राधा, स्नाती अने रेवती आ नक्षत्रोने विषे तथा शुक्रवार,
रविवार अने भांगणवार आ वारैने विषे; द्वादशी, अष्टमी
अने षष्ठी आ निथिओनो त्याग करीने भीश्च निथिओने विषे
प्रसूता श्वी स्नान करै. प्रसूता श्वी शुक्रवारने द्विवसे स्नान
करे तो संतान रहित थाय, शुक्रवारने द्विवसे स्नान करे तो
वांश्छानी थाय, शनिवारने द्विवसे स्नान करे तो भृत्यु थाय,
सोमवारने द्विवसे स्नान करे तो स्तनना दूधनो नाश थाय तथा।

(८)

रविवार, गुडवार अने भंगणवारना द्विसे स्नान करे तो पुन
अने धननो लाभ थाय. ६-७

नामकरण मुहूर्त.

चित्राज्ञुरात्रा मृग रेवनीषु धात्राधिनी
त्र्युतर हस्त पुष्टे ॥ पुनर्वसौ च श्रवणत्रि
केषु बुधाकं चन्द्रेज्यसितेषु नाम ॥ ८ ॥
शर्मान्तं ब्राह्मणस्य स्याद्वर्मान्तं क्षत्रियस्य च ॥
वैश्यस्य धनसंयुक्त शूद्रस्य प्रेष्य संयुतम् ॥ ९ ॥

चित्रा, अनुराधा, भूगरीषी, रेवती, रोहिणी, अक्षिनी,
त्रिषु उत्तरा, डूसा, पुष्ट, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा अने शत-
लिषा आ नक्षत्राने विषे तथा धुन, सूर्य, चंद्र, गुड अने शुक्र
आ वारीने विषे नामकर्म शुभ हैं. आक्षर्णुना वाणिक्तुं नाम
शर्मान्त राख्वुं; जेभडे-वृंदावनशर्मा, क्षत्रियना वाणिक्तुं
नाम वर्मान्त राख्वुं; जेभडे-गजादत्तवर्मा; वैश्यना वाणिक्तुं
नाम धनसंयुक्त अर्थवा गुप्तान्त राख्वुं; जेभडे-धनपति चन्द्र-
शुप्त, अने शूद्रना वाणिक्तुं नाम दासान्त राख्वुं; जेभडे राम-
दास, हेवीदास, ईत्यादि. अवकड़डयडभां जे नक्षत्रना जे चरणभां
जे अक्षर जन्म सभये होय ऐज अक्षर उपर नाम पाइवुं.

(८२)

दोलारोहणमुहूर्त.

दोलारोहैर्क्षमात्यंतं शरं पंचेषु सप्तमैः ॥
नैरुज्यं मरगं कार्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिष्ठोः ॥१०॥

सूर्यं नक्षत्रनथी दिन नक्षत्र सुधी गणी प्रथमनां पांच न-
क्षत्रभां बाणकने पारण्याभां अुलावे तो आरोग्य रहे, खीजं
पांच नक्षत्रभां भरण् थाय, तीजं पांच नक्षत्रभां दुर्धण् थाय,
चौथा पांच नक्षत्रभां व्याधि थाय, अने पांचभां सात नक्षत्रभां
सुख् थाय. १०

अन्नप्राशन मुहूर्त.

युग्मेषु मासेषु च षष्ठमासात्सांवत्सरे
वा नियतं शिशूनाम् ॥ अयुग्ममासेषु
च कन्यकानां नवान्नप्राशनमिष्टमेतत् ॥ ११ ॥
रेखतीद्वितये पुज्ये पुनर्वस्वनुराघयोः ॥
श्रवणादित्रये हस्तत्रितये रोहिणी मृगे ॥ १२ ॥
उत्तरायां शुभेलग्ने मीनमेषालि भिन्नगे ॥
अन्नप्राशनकं प्रोक्तं शुभाहे सर्वं संपतम् ॥ १३ ॥

(८)

છ્રા મહિનાથી સમ ભાસમાં અર્થાત् ૬-૮-૧૦ ભાસમાં
અથવા આખા વર્ષમાં સમય નિશ્ચય કર્યો હેઠળ તે સમયે છોક-
રાને તથા પાંચમાં મહિનાથી વિષમ ભાસમાં અર્થાત્ ૫-૭-૮
ભાસમાં કન્યાને નવાજ્ઞપ્રાશન શુભ છે. રેવતી, અખિની, પૃથ્વી,
પુનર્વસુ, અનુરાધા, શ્રવણ, ધનિષ્ઠા, શતભિધા, હૃત્તા, ચિત્રા,
સ્વાતી, રૌહિણી, મૃગીશીર્ષ અને ત્રણે ઉત્તરા આ નક્ષત્રોને
વિષે શુભઅહોનાં લગ્નોને વિષે; ભીજા, મેઘ અને વૃત્તિક આ
સિવાયનાં બીજાં લગ્નોને વિષે શુભઅહોના વારને વિષે અ-
જ્ઞપ્રાશન સર્વની સંભતીથી કહેલું છે. ૧૧-૧૩

પદ્મબંધન ચૌલાન્ન પ્રાશને ચોપનાયને ॥

શુમદં જન્મનક્ષત્રમશુમં ત્વન્ય કર્મणિ ॥ ૧૪ ॥

રાજ્યાલિષેક, મુંડન, અજ્ઞપ્રાશન અને ઉપનયન આ
કુમોભાં જન્મ નક્ષત્ર શુભ ઇણ આપનારં જાણુવું. તથા વિવા-
હાદિ બીજાં કાર્યોમાં અશુભ જાણુવું. ૧૪

હિત્વા રિક્તં તથા નંદાપણીં દ્વાદરીં તથા ॥

તિથેઃક્ષયમમાં વારાન્ન શનિ ભૌમાર્કસંજ્ઞકાન્ન ॥૧૫॥

રિક્તમ ૪-૮-૧૪, નંદા ૧-૬-૧૧, અષ્ટમી, દ્વાદરી,
તિથિક્ષય અને અમાવાસ્યા, આ તિથિઓને તથા શનિ, મંગળ
અને રવિ આ વારોને ત્યાગ કરીને અજ્ઞપ્રાશન કરાવવું. ૧૫

(४)

कर्णवेध मुहूर्त.

रेवती द्वितये पुष्ये पुनर्वस्नुराश्रयोः ॥
 श्रवण द्वितये चित्रा मृगे हस्ते शुभे तिथौ ॥ १६ ॥
 शुभे वारे हि जन्माहाद् द्वादशे पोडशे दिने ॥
 कर्णवेधोऽथवा मास पष्ठे सप्ताष्टमेपि वा ॥ १७ ॥

रेवती, अक्षिनी, पुष्य, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, चित्रा,
 भृगशीर्ष अने हस्त आ नक्षत्रोने विषे, शुभ तिथिओने विषे
 अने शुभअहना वारने विषे ४८ विवस्थी आरभा अथवा
 सोणभा द्विसे अथवा छड्हा, सातभा, आठभा भिन्नाने विषे
 कर्णवेध शुभ छे. १६—१७

न जन्ममासे न च चैत्र पौषे
 न जन्मतारासु ह्रौ प्रसुमे ॥
 तिथावरिक्ते न च विष्टि दुष्टे
 कर्णस्य वेधो न समान वर्षे ॥ १८ ॥

४८ भास, चैत्रभास, पौषभास, जन्मतारा, दरिशयन
 (आषाढ शुक्ल ११ थी कानिंड शुक्ल ११ सुक्ष्मी,) रिक्ता
 ४—८—१४ तिथि, विष्टि अने समवर्ष आ सर्व कर्ण वेधभां
 अशुभ छे. १८

(८५)

શુંદનમુહૃત્.

શ્રવણાત્રિતયે હસ્તત્રિતયે રેવનીદ્રયે ॥

જ્યેષ્ઠાપાં મૃગશર્વે પુનર્વસુદ્રયે તથા ॥

સૌમ્યાયને શુભેવારે ચૂડાકર્મ સ્મરનબુધૈ: ॥ ૧૯ ॥

શ્રવણ, ધનિષ્ઠા, શતભિપા, હસ્ત, ચિત્રા, સ્વાતી, રેવતી,
અધિની, જ્યેષ્ઠા, મૃગશર્વ, પુનર્વસુ અને પુષ્ય આ નક્ષત્રોને
વિષે, ઉત્તરાખણુના સૂર્યભાં શુભબ્રહૂના વારના દિવસે પંડિતોએ
સુંદનકર્મ કહેલું છે. ૧૯

ન જન્મમાસે ન ચ જન્મમે તિથૌ

વિધૌ વિરુદ્ધે શુભતારકાસુ ॥

યુગ્માદ્રમાસે ન ચ કૃષ્ણપશે

ચૂડા ન કાર્યા ખલુ વૈત્રપૌરે ॥ ૨૦ ॥

જન્મમાસ, જન્મતાત્ત્વ, જન્મતિથિ, નેણું ચંદ્રમા, અ-
શુભ તારા, સમવર્ષ, સમભાસ, કૃષ્ણપશ, તથા ચૈત્ર અને પૌર્ણ
ભાસ આ સર્વ સુંદન કર્મભાં વર્જિત છે. ૨૦

ક્ષૌરકર્મમુહૃત્.

પુષ્યે પૌર્ણે ચાશ્વિનીષ્વૈન્દ્રવે ચ શાકે હસ્તાદ્યે

(८६)

**त्रिके भेष्वदित्यः ॥ क्षौरं कार्यं वैष्णवाद्यत्रये
च त्यक्त्वा मौमादित्य पातज्जि वारान् ॥ २१ ॥**

पुष्य, रेवती, अक्षिनी, भृगशीर्ष, नर्येष्ठा, हस्त, चित्रा,
स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धर्मिष्ठा अने शतभिषा आ नक्षत्रोने
विषे भग्न, सूर्य अने शनि आ वार त्याग करीने क्षौर-
कुर्म श्रेष्ठ छे. २१

**मासं हरेत् क्षौरमिहायुषोऽर्कः शनैश्चरः
सप्त कुजस्तथाष्टौ ॥ आचार्यभृगिंदु
बुधाः क्रमेणदद्युर्दशैकादश सप्त पञ्च ॥ २२ ॥**

रविवारने द्विसे क्षौर (हज्जमत) कराववाथी एक भ-
हिनानु आयुष्य नाश थाय, शनिवारने द्विसे क्षौर करावे तो
सात भासनु आयुष्य नाश थाय, भग्नवारने द्विसे क्षौर
करावे तो आठ भासनु आयुष्य नाश थाय, शुक्र, चंद्र
अने शुधवारने द्विसे क्षौर करावे तो अनुकम्थी श्य, अग्नि-
आर, सात अने पांच भासनु आयुष्य वधे छे. २२

**नृपाङ्गया ब्राह्मण संमते च विवाहकाले मृतसूत-
के च ॥ बद्धस्य मोक्षेक्तुदीक्षणासु सर्वेषु भेषु
क्षुरकर्मशस्तम् ॥ २३ ॥**

રાજની આક્ષાથી, બ્રાહ્મણુના કહેવાથી, વિવાહને વિષ,
મૃતાશોચને વિષે, ખંધન (૫૬) થી છૂટ્યાને વિષે તથા યજ્ઞની
દિક્ષાને વિષે સર્વ નક્ષત્ર અને વારને વિષે ક્ષોર કર્મ એઠ છે. ૨૩

અક્ષરારંભ સુહૃત્ત.

સૌમ્યાયને શુમે માસિ સ્વાધ્યાય દિવસે શુમે ॥
ખૌ જીવે બુધે શુક્રે લગ્ને ખેટ્બલાન્વિતે ॥ ૨૪ ॥
રેવતીદ્વિત્યે પુષ્ય પુનર્વસ્વનુરાથ્યો: ॥
આર્ડાખ્યે શ્રવણે હૃસ્તે સ્વાતૌ ચિત્રાભિધે તથા ॥ ૨૫ ॥
હેરમં વિષણુવાગ્દેવિં તથાભ્યર્થેષ્ટદેવતા: ॥
પંચમાઽબ્દે નરઃકુર્યાલિપ્યારંભો સદા બુધ: ॥ ૨૬ ॥

ઉત્તરાયણ, શુભમાસ, સ્વાર્ધ્યાય, શુભદિવિસ, રવિ, ગુરુ, શુક્ર, શુધ અને શુક્લ આ વાર તથા લઘ્નમાં, અહ ખળવાન ડેશ ત્યારે; રેવતી, અશ્વિની, પુષ્ય, પુનર્વસુ, અનુરાધા, ચ્યાદ્રિઃ શ્રવણ
હૃસ્તા, સ્વાતી અને ચિત્રા આ નક્ષત્રોમાં, ગણપતિ, વિષણુ,
સરસ્વતી અને ઈષ્ટ દેવનું પૂજન કરીને પાંચમા વરસે પંહિત
અક્ષરારંભ કરાવે. ૨૪-૨૫

(८८)

विद्यारंभमुहूर्त.

पूर्वान्त्रये पुष्ययुगेन्यमूले
श्रुतेश्च हन्त्यामात्रकेऽश्चे ॥
ब्राह्मगानुगात्रतरभेयु विद्या
रंभःसितार्केजयवुगेषु शस्तः ॥ २७ ॥

विद्यारंभे गुरुःश्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ ॥
कनिष्ठौ भैमसौरी च अविद्या बुधसोमयोः ॥२८॥

તथे पूर्वा, पुष्य, आश्लेषा, रेतती, भूण, श्रवण, हस्त,
चित्रा, स्वाती, अग्नीर्ष, आर्द्धा, पुनर्वसु, अश्विनी, रोहिणी,
अनुराधा अने तथे उत्तरा आ नक्षत्राभां तथा शुक्र, सूर्य,
गुरु अने चुक्र आ वारोभां निवारंभ शुभ छे. निवारंभभां गुरु
श्रेष्ठ छे. शुक्र अने सूर्य नव्यम छे, भांगण अने शनि नेष्ठ
छे तथा चुक्र अने चांद्र अनिवावा । क्र. २७--२८

विद्यारंभमुहूर्त.

गंभीर्यानादष्टैः जन्मानां वा मौत्रीविधं
शस्यते ब्राह्मगानाम् ॥ राजन्यानां नून .
मेकादशेद्वै वैश्यानांच द्वादशे वेदविद्विद्विः ॥२९॥

(८६)

आषोडशाद्रहणस्य सावित्री नाभि वर्तते ॥
आद्रविंशाद्रहवंधोराचतुर्विंशतेर्विंशः ॥ ३० ॥

गर्भान्वानथी अथना जन्मकाणथी आक्षणेने आठभा
वर्षभां; क्षत्रीयेने अगीआरभा वर्षभां तथा वैश्येने खारभा
वर्षभां भैंल्लभंवन (यज्ञापवीत) કરવुં. આ પ્રમાણે વેદને
જણનારા પંડિતોએ કહું છે. સોળવર્ષસુધી આકષણી સાવિત્રી
વર્તભાન રહે છે, અર્થાત અક્ષતેજ રહે છે ત્યાં સુધીભાં યજો-
પવીત સંસ્કાર થવો જરૂરાએ. ખાવીસ વર્ષ સુધીભાં ક્ષત્રીયને તથા
ચૌદીસ વર્ષ સુધીભાં વैશ્યને યજોપવીતસંસ્કાર થવો જરૂરાએ.

बदुकन्याजन्मराशे स्त्रिकोणायद्विसप्तगः ॥
श्रेष्ठोगुरुः स्वपृथ्याद्ये प्रपूज्यान्यत्र निंदितः ॥ ३१ ॥

अક्षयारी અथना કન્યાની રાશિથી પાંચમો, નવમો,
અગીઆરમો, બીજે અને સાતમો ગુરૂ કેષ છે. દથમો, છોટ
નીજે અને પછેલો ગુરૂ પૂજા કરવાથી કેષ છે. તથા ચૌથો
આठમો અને ખારમો ગુરૂ નિંદિત (નેષ) છે. ३१. .

हस्ताऽश्विनी पुष्य भुजंगमाद्रौ
• मूलत्रिपूर्वादतिरेवतीषु ॥

श्रुतित्रये स्वातिमगानुराधा

चित्रासुसाङ्केसदहे व्रतं सत ॥ ३२ ॥

હસ્ત, અશ્વિની, પુણ્ય, આંલેખા, આદ્રા, ભૂળ, નષ્ટે પૂર્વા, પુનર્વસુ, રૈવતી, શ્રવણ, ધનિષ્ઠા, ચનલિષ્ઠા, સનાતી, ભગર્ષિષ્ઠ, અનુરાધા અને ચિત્રા આ નક્ષત્રોને વિષે તથા રવિનાર, ચંદ્રવાર, પુણ્યવાર, ગુરુવાર અને શુક્રવાર આ વારોને વિષે પ્રતખંધ કર્મ શુભછે.

માઘાત્પંચસુ માસેષુ શુક્લપક્ષે ચ પ્રાગદલે ॥

દ્વિતીયા ચ તૃતીયા ચ દશમ્યેકાદશી તથા ॥

દ્વાદશી પંચમી ચૈવ વ્રતબંધે શુભપ્રદા ॥ ३३ ॥

માવ, શાલ્યુન, ચૈત્ર, વૈશાખ અને જીજેણ આ માસને વિષે, શુક્લપક્ષને વિષે અને દિવસના પૂર્વદલને વિષે, દ્વિતીયા, તૃતીયા, દશમી, એકાદશી, દ્વાદશી, અને પંચમી આ તિથિઓ વ્રતખંધમાં શુભકૃષ્ણ આપવાવાળી છે. ૩૩

ચैત્રે માસે ભાસ્કરે મીનસંમ્બે

કુર્યાન્મૌઞ્જી બંધનં બ્રાહ્મણાનાશ ॥

શુક્રસ્યાસ્તં વાક્યતેનર્વિલોક્યં

નૈવગ્રાહ્યા ચન્દ્રગુરોચશુદ્ધિઃ ॥ ३४ ॥

ચૈત્ર માસને વિષે સૂર્ય મીન રાશિમાં દોષ તો આદાણુને
મૈંશુખંધન (યજોપવીત) કરવું છે. આને વિષે શુક અને
ગુરુના અસ્તનો દોષ ન જોવો તથા ચંદ્રમા અને ગુરુની શુહિનો
પણ વિચાર ન કરવો. ૩૪.

વિવાહ મુહૂર્ત.

રેવલ્યુત્તર રોહિણી મૃગ મઘામૂલાનુરાધાકર
સ્વાતીષુ પ્રમદા તુલ મિથુનગોલગને વિવાહઃ શુભમઃ॥
માસાઃ ફાલગુનમાર્ગ માઘ શુચયો જ્યેષ્ઠસ્તથા માધવઃ
શસ્તઃ સૌષ્ટ્વદિનં તથૈવ તિથયો રિક્તા કુહૂ વર્જિતા ॥

રેવતી, ઉત્તરાક્ષાદ્યુની, ઉત્તરાધાઢા, ઉત્તરાલાદ્ર્યુની, રૈ-
હિણી, મૃગશીર્ષ, મધા, મૂળ, અતુરાધા, હસ્ત અને સ્વાતી
આ નક્ષત્રોમાં; કન્યા, તુણા, મિથુન અને વૃષભ આ લગ્નોમાં;
ક્ષાદ્યુન, માર્ગશીર્ષ, માધ, આષાઢ, જ્યેષ્ઠ અને વૈશાખ આ
મહિનાઓમાં; તથા રિક્તા (૪-૯-૧૪) તિથિ, અને અમા-
વાસ્યાનો ત્યાગ કરીને શુલ દિવસમાં વિવાહ શુલ છે. અહીં
એક વાત લખવી પરમાવરય છે કે ઉત્તરાયણ સૂર્ય અર્થાત्
મહારથી મિથુન સંકાંતિ સુધી વિવાહ કરે; ચૈત્રમાસ અર્થાત्
મીન સંકાંતિ ત્યાજ્ય છે. ૩૫

મિથુન કુંભ મૃગાલિ વૃષાજગે
 મિથુગોપિ સૌ ત્રિલવે શુચે: ॥
 અલિમૃગાજગતે કરપીડનં
 ભવતિ કાર્તિક પૈષમધુષ્વપિ ॥ ૩૬ ॥

મિથુન, કુંભ, મકર, વૃશ્ચિક, વૃષભ અને મેષ આ રાશિઓએ
 ઉપર જ્યારે સૂર્ય હોય ત્યારે વિવાહ કરવો શુભ છે. મિથુનના
 સૂર્યને વિષે આખાઠ શુક્લ પ્રતિપદાથી દશમી પર્યંત શ્રેષ્ઠ છે.
 વૃશ્ચિકના સૂર્યને વિષે ડાર્તિક ભહિનામાં, મકરના સૂર્યને વિષે
 પૈષ ભહિનામાં અને મેષના સૂર્યને વિષે ચૈત્ર ભહિનામાં
 વિવાહ કરવો શ્રેષ્ઠ છે. ૩૬

પુનર્વિવાહ મુહૂર્ત.

ઇન્દ્ર રૂદ્રાદિતિશ્લેષા આખેય વરુણસ્તથા ॥
 અશ્વિનીં વસુદૈવત્યંપદ્મકાલેશુભ્ સ્મૃતમ् ॥ ૩૭ ॥

જ્યેષ્ઠા, આર્દ્રા, પુનર્વિસુ, આર્દ્રવેપા, ટૃતીકા, શતલિષા,
 અશ્વિની અને ધનિષ્ઠા આ નક્ષત્રોમાં પુનર્લંજન (નાતરે) શુભછે.

દચકપુત્ર મુહૂર્ત.

હસ્તાદિ પંચકમિષક વસુ પુષ્યમેષ
 સૂર્યક્ષમાજગુરુ ભાર્ગવ વાસરેષુ ॥

रिक्ता विवर्जिततिथिष्ठलि कुंभलगे
सिंहे वृषे भवतिदत्त परिग्रहोयम् ॥ ३८ ॥

હસ્ત, ચિત્રા, સ્વાતી, વિશાખા, અનુરાધા, અશ્વિની, ધ-
નિષ્ઠા, અને પુષ્ય આ નક્ષત્રોમાં, રવિ, મંગળ, શુદ્ધ અને શુક
આ વારોમાં તથા રિક્તા (૪-૬-૧૪) તિથિ અને વૃશ્ચિક
કુંભ આ લગ્નોને ત્યાગ કરીને સિંહ અને વૃષભ આ લગ્નોમાં
છત્રપુત્ર વિધાન શુલ્લ છે. ૩૮

અથ જ્યેષ્ઠ વિચાર.

જन્મમાસિ નચ જન્મભે તિથૌ
નૈવ જન્મદિવસે ઽપિ કાર્યેત ॥
આદ્યગર્મ દુહિતુઃ સુનસ્ય વા
જ્યેષ્ઠ માસિ નચ યાતુ મંગલં ॥ ૩૯ ॥

દ્વાજ્યેષ્ઠૈમધ્યમાપ્રોક્તાવેકજ્યેષ્ઠઃ શુભાવહ:
જ્યેષ્ઠત્રયંનકુર્વીતવિવાહેસર્વસંમતઃ ॥ ૪૦ ॥
अज्येष्ठाकल्यकायत्र ज्येष्ठपुत्रोवरोयदि ॥
व्यत्ययोवातयोस्तत्र ज्येष्ठोमासः शुभप्रदः ॥ ૪૧ ॥

જન્મમાસ, જન્મનક્ષત્ર, જન્મતિથિ અને જન્મવારમાં આધ ગર્ભવાળાં કન્યા અને પુત્રનો વિવાહ જ્યેષ્ઠ માસમાં કરવો નહીં; પુરુષ આધ ગર્ભવાળો અથવા કન્યા આધ ગર્ભવાળી હોય તો જ્યેષ્ઠ માસમાં વિવાહ મર્દ્યમ કરવો છે. એમાંથી એક આધ ગર્ભવાળો હોય તથા કન્યા પણ આધ ગર્ભવાળી હોય અને જ્યેષ્ઠ માસ હોય તો વિવાહ કરવો નહીં. જે કન્યા આધ ગર્ભવાળી ન હોય અને વર આધ ગર્ભવાળો હોય તથા વર આધ ગર્ભવાળો ન હોય અને કન્યા આધ ગર્ભવાળી હોય તો તેમને જ્યેષ્ઠ માસમાં વિવાહ શુલ જાણવો. ૩૬-૪૧

दशवर्षाव्यतिक्रान्ता कन्याशुद्धिविवर्जिता ॥
 तस्यास्तारेंदुलमानां शुद्धोपाणिग्रहोमतः ॥ ४२ ॥
 द्वादशाऽब्दपरेकन्याषोडशाब्दपरे वरे ॥
 व्ययवेदाष्टमेसूर्ये जीवेचैव न दोषभाक् ॥ ४३ ॥

દશ વર્ષ પછી કન્યા શુદ્ધિ રહિત હોય છે તેનો તારા શુદ્ધિ, ચંદ્ર શુદ્ધ અને લગ્ન શુદ્ધ જોઈને વિવાહ કરવો જ્યેષ્ઠ છે, બાર વર્ષ ઉપરાંત કન્યાને તથા સૌણ વર્ષ ઉપરાંત વરને ચોથા, આઠમા અને બારમા સર્વનો અને કન્યાને ચોથા, આઠમા અને બારમા ગુરુનો હોય નથી. ૪૨-૪૩

(६५)

મંગલ વિચાર.

લમેવ્યયે ચ પાતાલે યામિત્રેવાષ્પમે કુજે ॥
પત્નીહન્તિ સ્વભર્તારં ભર્તા ભાર્યા વિનાશયેત ॥૪૪॥

જન્મલગ્નમાં પહેલા, બારમા, ચોથા, સાતમા અને આઠમા સ્થાનમાં ભંગળ હોય તો વિનાષ કરવો નહિ. કન્યાને ઉપર કહેલાં સ્થાનોમાં ભંગળ હોય તો વરને હનન કરે, અને વરને હોય તો કન્યાને હનન કરે. ૪૪

જામિત્રેવ યદા સૌરિલમેવાહિબુકેઽથવા ॥
અષ્પમે દ્વાદર્શેચૈવ ભૌમ દોષો ન વિદ્યતે ॥ ૪૫ ॥

સાતમા, પહેલા, ચોથા, આઠમા અને બારમા સ્થાનમાં શનિ હોય તો ભંગળનો હોય જાણવો નહિ. ૪૫

વરકન્યયોःપ્રીતિવિચાર.

વર્ણોવશ્યં તથાતારા યોનિશ્ચ ગ્રહમैત્રકમ् ॥
ગણમैત્રીભકૃંત્ર નાડીચैતે ગુણાધિકાઃ ॥ ૪૬ ॥

૧વર્ણા, ૨મશ્ય, ૩તારા, ૪યોનિ, ૫ અહ્મૈત્રી, ૬ ગણમैત્રી,
૭ભકૃંત્ર, ૮નાડી, આં આઠ એકથી એક ગુણમાં અધિકાઃ. ૪૬

(६५)

वर्णज्ञान.

मीनालि कर्कटा विःः क्षत्र। मेषो हरिधनुः ॥
 शूद्रोयुग्मं तुलाकुंभौ वैश्यः कन्या वृष्टे मृगः ॥ ४७ ॥
 नोत्तमामुद्दहेतकन्यां ब्राह्मणीं च विशेषणः ॥
 म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मगामदृशो यदि ॥ ४८ ॥
 विप्रवर्णेषु यानारी शुद्रवर्णेष्यः पतिः ॥
 ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिताय दि ॥ ४९ ॥

भीन, वृश्चिक अने ३६ राशिनो आक्षय वर्णु छे; भेष,
 सिंह अने धन राशिनो क्षत्रिय वर्णु छे; भिथुन, तुणा अने
 कुंभराशिनो शूद्र वर्णु छे; तथा कन्या, वृषभ अने भडर राशि-
 नो वैश्य वर्णु छे. उत्तम वर्णनी कन्या डोय अने हीन वर्णनो
 वर डोय तो वरनु मृत्यु थाय, चाहे अक्षा ज्वेवा डोय तो
 पर्यु शुं? आक्षय वर्णनी कन्या डोय अने शूद्र वर्णनो वर
 डोय तो कन्या निश्चय इरीने निश्चवा थाय, चाहे शुद्राचार्यनी
 कन्या डोय तो पर्यु शुं? ४७-४८

प्रस्वरिचार.

सिंहं विनावशाः मर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः
 भक्ष्याजलचरस्तेषां भग्नस्यानेग्रसृपाः ॥ ५० ॥

(४७)

मकरस्यपूर्वभागो मेष सिंह धनुर्वृष्णाः ॥
 चतुष्पदाः कीटसंज्ञः कर्कः सर्पश्चवृश्चिकः ॥ ५१ ॥
 तुलाचमिथुनं कन्या पूर्वार्द्धधनुषश्चयत् ॥
 द्विपदास्तु मृगार्द्धतु कुंभमीनौ जलाश्रितौ ॥ ५२ ॥

द्विपदना वथमां सिंह विना सर्वे वथ छे, अने जणाचर
 द्विपदनु भक्ष्य छे परंतु सर्प भयकारक छे; भकरनो पूर्व भाग
 मेष, सिंह, धन अने वृषभ चतुष्पद हे, कर्क कीट छे, वृश्चिक
 सर्प छे, तुला, भिथुन, कन्या अने धननो पूर्व भाग द्विपद हे.
 भकरनो पश्चिम भाग, कुंभ अने भीन जणाचर छे. ५०-५२

ताराबलविचार.

कन्यकार्द्धरभंयावत्कन्याभं वरभादपि ॥
 गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्विभमसत्स्मृतम् ॥ ५३ ॥

कन्याना नक्षत्रथी वरना नक्षत्र सुधी अने वरना नक्षत्र-
 थी कन्याना नक्षत्र सुधी गणी तेभां पृथक् पृथक् नवनो भाग
 आपवाथी शेष नाश, पांच अने सात रहे तो अथुभ तारा
 समर्पणी. ५३

योनिविचार.

अश्विनीवारुणश्वाशां रेवती भरणी गजः ॥
 पुष्यश्च कृतिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः ॥५४॥
 आद्रामूलमपिश्वाच मूषकः फाल्युनी मघा ॥
 मार्जारोदितिराश्लेषा गोजातिरुत्तराद्यम् ॥ ५५ ॥
 महिषः स्वातिहस्तौच मृगोज्येष्ठानुराधिका ॥
 व्याघ्रश्वित्राविशाखाच श्रुत्याषाढौच मर्कटौ ॥५६॥
 वसुभाद्रपदौसिंहौ नकुलोऽभिजिद्धिश्यः ॥
 योनयःकथिताभानां वैरमैत्री विचार्यताम् ॥ ५७ ॥

अश्विनी अने शतभिषानी अक्षयेानि, रेवती अने भर-
 णीनी गजयेानि, पुष्य अने कृतिकानी भेषयेानि, रोहिणी अने
 मृगशीर्षनी सर्पयेानि, आद्रां अने भूषणी श्वान येानि, पूर्वा-
 फाल्युनी अने भधानी भूषकयेानि, पुनर्वसु अने आश्लेषानी
 भान्जरयेानि, उत्तराफाल्युनी अने उत्तराभाद्रपदनी गौयेानि,
 स्वाती अने हस्तनी भडिषयेानि, ज्येष्ठा अने अनुराधानी
 भृगयेानि, यित्रा अने निशाभानी व्याघ्रयेानि, अवणु अने
 पूर्वाषाढानी वानरयेानि, धनिष्ठा अने पूर्वालाद्रपदनी सिंह-

(८६)

યોનિ, ઉત્તરાખાદા અને અભિજિતની નકુળયોની, આ પ્રમાણે
નક્ષત્રોના આશ્રયથી યોનિ કહી છે. આનાથી વૈર અને મૈત્રી-
નો વિચાર કરવો. ૫૪-૫૭

વૈરયોનિ.

ગોવ્યાંબ ગજસિંહમધમહિં શૈણ ચ બધૂરં
વૈરં વાનરમેષકંચ સુમહત્તદ્વિડાલોન્દુરમુ ॥
લોકાનાંવ્યવહારતોન્યદપિ ચ જ્ઞાત્વા પ્રયત્નાદિં
દંપત્યોર્નૃપભૃત્યયોરપિ સદા વર્જ્યે શુભસ્યાર્થિમિઃ ॥૫૮

ગાય અને વાધને વૈર, હાથી અને સિંહને વૈર, ઘોડા અને
ભેંસને વૈર, થાન અને હરણને વૈર, સર્ફ અને નકુળને વૈર,
વાનર અને મેષને વૈર, માર્જર અને ઊંદરને વૈર, મનુષ્યના
વ્યવહારથી પણ વૈર અને મહાવૈરને યત્ન પૂર્વક જલ્લીને ભી
અને પુરૂષ તથા સ્વામી અને સેવકના નક્ષત્રથી વૈરભાવનો વિ-
ચાર કરવો. શુભાકંક્ષી પુરુષે વૈરયોનિનો પરિત્યાગ કરવો. ૫૮

રાશિસ્વામિ.

મેષવૃદ્ધિકયોર્મૌમઃ શુક્રો વૃષતુલાધિપ:
કન્યામિથુનયોઃ સૌમ્યો ગુરુસ્તુધનમીનયો: ॥૫૯॥

शनिर्नक्ष्यकुंभस्य कर्कस्यैवतु चन्द्रमाः ॥

सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकैः क्रमात् ॥६०॥

राशियेना स्वाभी प्रथम कही चुक्या छीच्च तेथी अहीं
खोां भान लध्या छे. ५८-६०

ग्रहमैत्रीविचार.

- शत्रू मंदसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषारबे
स्तीक्ष्णां शुर्हिमरश्मजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः
॥ जावन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदोङ्गोऽरिः सितार्की
समौ मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे
॥ ६१ ॥ सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतोमध्ये ऽपरेत्व-
न्यथा सौम्यार्कासुहृदौ समौ कुज गुरु शुक्रस्य शेषा-
वरी ॥ शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य त्वन्येऽ
र्खोयेप्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात् तेऽमी मया की-
र्तिताः ॥ ६२ ॥ अन्योन्यमित्रं शस्तं स्यात्सममित्रं तु
मध्यमम् ॥ उदासीनः कनिष्ठस्यान्मृत्युदंशात्रवंस्मृतम्
सूर्यना शनि अने शुक्र शत्रु छे, बुध सुम छे, खाडीना
अंद्र, भंगण अने गुड भिन छे. यंद्रभाना सूर्य अने बुध
भिन छे. खाडीना भंगण, गुड, शुक्र अने शनि सम छे. भं-

(૧૦૧)

ગળના ગુરુ, ચંદ્ર અને સૂર્ય મિત્ર છે, બુધ શત્રુ છે; શુક્ર અને શનિ સમ છે. બુધના સૂર્ય અને શુક્ર મિત્ર છે, ચંદ્રમા શત્રુ છે, બાકીના મંગળ, ગુરુ અને શનિ સમ છે. ગુરુના બુધ અને શુક્ર શત્રુ છે, શનિ સમ છે, બાકીના સૂર્ય, ચંદ્ર અને મંગળ મિત્ર છે. શુક્રના બુધ અને શનિ મિત્ર છે, મંગળ અને ગુરુ સમ છે, બાકીના સૂર્ય અને ચંદ્ર શત્રુ છે. તથા શનિના શુક્ર અને બુધ મિત્ર છે, ગુરુ સમ છે. બાકીના સૂર્ય, ચંદ્ર અને મંગળ શત્રુ છે. અન્ને મિત્ર હોય તો શુભ, સમ અને મિત્ર હોય તો મધ્યમ, અન્ને ઉદ્દાસીન હોય તો કનિષ્ઠ અને અન્ને શત્ર હોય તો મૃત્યુપ્રદ જાણવા. ૬૧-૬૩

ગ્રહમૈત્રી ચક્ર.

| ગ્રહ | સૂ. | ચં. | મં. | બુ. | વૃ. | શુ. | શ. |
|-------|----------------|-------------------|----------------|----------------|----------------|---------|----------------|
| મિત્ર | ચં. વૃ. મં. | સૂ. બુ. બૃ. | સૂ. ચં. બૃ. | સૂ. શુ. બૃ. | સૂ. ચં. મં. | બુ. શ. | બુ. શુ. |
| સમ | બુ. | મં. વૃ. શુ. શ. | શુ. શ. | મં. વૃ. શ. | શ. | મં. વૃ. | વૃ. |
| શત્રુ | શુ. શ. | ૦ ૦ | બુ. | ચં. | બુ. શુ. | સૂ. ચં. | સૂ. ચં. મં. |

(१०२)

गणपैत्रीज्ञान.

अधिनी मृगरेवत्यो हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ॥
 अनुराधाश्रुतिःस्वाती कथ्यतेदेवतागणः ॥ ६४ ॥
 तिसःपूर्वाश्रोत्तराश्रतिस्वोऽप्याद्र्दा च रोहिणी ॥
 भरणी च मनुषाख्योगणश्च कथितो बुधैः ॥ ६५ ॥
 कृतिका च मघाश्लेषा विशाखा शततारकाः ॥
 चित्राज्येष्ठाधनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥ ६६ ॥
 स्वगणे परमाप्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ॥
 मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहोदेवरक्षसोः ॥ ६७ ॥

अधिनी, भृगशीर्ष, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अ-
 नुराधा, अवणु अने स्वाती आ नव नक्षत्रोने देवता गणु जणुवां.
 पूर्वाश्लेषुनी, पूर्वाख्यादा, पूर्वालाद्रपद, उत्तराश्लेषुनी, उत्तरा-
 खादा, उत्तरालाद्रपद, आद्रा, रोहिणी अने भरणी, आ नव
 नक्षत्रोने मन्डितोच्चे भनुष्यगणु कडेलां छे. कृतिका, भधा, आ-
 श्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा अने भूष
 आ नव नक्षत्रोने राक्षस गणु कडेलां छे. जे वर अने कन्यानो
 एकज गणु ढोय तो आधक प्रीति ढोय, हेत्र अने भनुष्य

गणु होय तो भर्यम होय, भनुप्प अने राक्षसगणु होय तो
भृत्यु होय, तथा हेव अने राक्षसगणु होय तो क्लेश होय. ६४-६७
भक्ति विचार.

चतुर्थं दशमश्वैव तृतीयैकादशः शुभः ॥
उभयोः सप्तमः साम्यमेकक्षं शुभमुच्यते ॥ ६८ ॥
षडष्टकेऽपमृत्युः पञ्चमं नवमेऽनपत्यताज्ञेया ॥
द्विद्वादशेनिधनताशेषेषु मध्यमताज्ञेया ॥ ६९ ॥

इन्यानी राशिथी वरनी राशि योथी होय अने वरनी
राशिथी इन्यानी राशि दशमी होय अथवा परस्पर नीज अने
अग्नीआरभी राशि होय तो पशु शुभ जाणुवी, अन्नेनी सातभी
राशि होय तो सभ जाणुवी, अने एक नक्षत्र होय तो शुभ
जाणुवी. छही अने आठभी (षडष्टक) राशि भृत्युआरक जाणुवी,
नवभी अने पांचभी (नवपञ्चक) राशि अनपत्यकारक जाणुवी,
तथा षष्ठी अने बारभी (द्विद्वादश) राशि निर्धनताकारक
जाणुवी. शेषराशि भर्यम जाणुवी. ६८-६९ .

मृत्युषदष्टक.

कन्यामेषौ वृषचापौ कामाली घटकर्कटे ॥
मृगसिंहे तुलामीने त्यजेन्मृत्युषदष्टकम् ॥ ७० ॥

(१०४)

કન્યા અને મેષ, વૃષભ અને ધન, મિથુન અને વૃથિક, કુંભ
અને કર્ક, માઝર અને સિંહ તથા તુળા અને મીન આ રાશિયોના
પડછકને મૃત્યુપડછક કથાં છે, તે વર્જિત છે. ૭૦

પ્રીતિષદષ્ટક.

મેષાલી મકરે યુગમે કન્યાકુંભૌ તુલાવૃષૌ ॥
સિંહે મીને ધનુઃ કર્કે ષટ્કાણ પ્રીતિવર્દ્ધકમ् ॥૭૩॥

મેષ અને વૃથિક, માઝર અને મિથુન, કન્યા અને કુંભ
તુળા અને વૃષભ, સિંહ અને મીન તથા ધન અને કર્ક આ
રાશિયોના પડછકને પ્રીતિવર્દ્ધક પડછક કહેલાં છે. ૭૧

દ્રિદ્રાદશ.

મીનમેષૌ વૃષમિથુના કર્કહરી તૂલકન્યકે ॥
અલિધનુષીમકરકુંભાવેતૌદ્રિદ્રાદશૌ રાશી ॥૭૨॥

મીન અને મેષ, વૃષભ અને મિથુન, કર્ક અને સિંહ, તુળા
અને કન્યા, વૃથિક અને ધન તથા માઝર અને કુંભ આ રાશિ-
યોના દ્રિદ્રાદશ આવે તો શુભ જાણવા. આનુથી મેષ અને
વૃષભ, મિથુન અને કર્ક આદિ રાશિયોના દ્રિદ્રાદશ ડોય તો
મૃત્યુહારક જાણવા. ૭૨

(१०५)

नवपंचक.

मीनालिभ्यां युतेकोटे कुंभे मिथुनसंयुते ॥
मकरेकन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवपंचके ॥ ७३ ॥

भीनथी नवम वृश्चिक अने वृश्चिकथी पंचम भीन तथा
कर्कथी नवम भीन अने भीनथी पंचम कर्क होय तो नवपंचक
होय छे. तेवीज रीते कुंभ अने मिथुन तथा भक्र अने कन्याना
पण नवपंचक वर्जित छे; डेम्हे ते सांताननाशक छे. ७३
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः ॥
एतत्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रं सुखावहम् ॥७४॥

वरनी राशिथी कन्यानी राशि पांचमी होय अने कन्यानी
राशिथी नवमी राशि वरनी होय तो आ नवपंचक (निहाणु)
अहुषु करवुं, ते पुत्र पौत्रादिक्तनुं सुख आपे छे. ७४

नाडी विचार.

अश्विन्याद्वा शतभिषक् ज्येष्ठा हस्तः पुर्वसुः ॥
पूर्वाभाद्रपदा मूलं चोत्तरा त्वाद्यनाडिकाः ॥ ७५ ॥
पूर्वाषाढाऽनुराधा च धनिष्ठा भरणी मृगाः ॥
पूर्वफाल्गुनिका चित्रा पुष्योभा मध्यनाडिकाः ॥ ७६ ॥

(૧૦૬)

કૃતિકા રોહિણી સ્વાતી મધાશ્રેષ્ઠા ચ રેવતી ॥
શ્રવણશ્રોત્રરાષાઢા વિશાળા ત્વંત્યનાડિકા: ॥૭૩॥

અશ્વિની, આર્દ્રા, શતલિખા, જ્યેષ્ઠા, હસ્ત, પુનર્વસુ, પૂર્વાં-
ભાદ્રપદ, મૂળ અને ઉત્તરાશાલિયની, આ નવ નક્ષત્રો આધનાડી
છે. પૂર્વાંખાઢા, અનુરાધા, ધનિષ્ઠા, ભરણી, ભગશીર્ષ, પૂર્વાશા-
લિયની, ચિત્રા, પુષ્ય અને ઉત્તરાભાદ્રપદ આ નવ નક્ષત્રો મર્યા-
દી છે. કૃતિકા, રોહિણી, સ્વાતી, મધા, આશલેખા, રેવતી,
અવણુ, ઉત્તરાખાઢા અને વિશાળા આ નવ નક્ષત્રોની અંત્ય
નાડી કહેલી છે. ૭૫-૭૭

નાડીકળ.

અગ્રનાડીવ્યધે ભર્તા મધ્યનાડીવ્યધે દ્વયમ् ॥
પૃષ્ઠનાડીવ્યધે કન્યા પ્રિયતે નાત્ર સંશય: ॥૭૮॥

સ્ત્રી અને પુરુષની આધ નાડી હોય તો પુરુષને, બંન્નેની
મધ્ય નાડી હોય તો બંન્નેને, અને અંત્ય નાડી હોય તો ક-
ન્યાને ભૃત્યુદાયક જાણુની. ૭૮

કન્યકાદ્વરનક્ષત્રમશુભં નિકટે યદિ ॥
વરક્ષાદ્વદૂરગંસુર્ક્ષે દેવક્ષેક્યે શુભં ભવેત् ॥ ૭૯ ॥
કન્યાના નક્ષત્રથી વરનું નક્ષત્ર નિકટ હોય તો અશુભ

(१०७)

अने वरना नक्षत्रथी कन्यातुं नक्षत्रद्वूर होय अथवा नक्षत्र ओह
होय वा अन्ने राशिनो स्वाभी ओह होय तो शुभकृण जाणुवुः.

वर्गविचार.

अकचटपयशवर्गः स्वगेशमार्जारसिंहशुनाम् ॥
सर्पखुमृगावीनां निजपंचमवैरिणामष्टौ ॥ ८० ॥

अ ई उ ओ ओ, आ पांच अक्षरोना नामवाणीनो ग्रन्थ
वर्ग इत्यादि नीचेना यही समल लेवुं. प्रोताना वर्गथी
पांचभी वर्ग शब्द जाणुवो. ८०

वर्गचक्र.

| गरुड | मार्जार | सिंह | श्वान | सर्प | मूषक | मृग | मेष |
|------|---------|------|-------|------|------|-----|-----|
| अ | क | च | ट | त | प | य | ऋ |
| इ | ख | छ | ठ | थ | फ | र | ष |
| उ | ग | ज | ढ | द | व | ल | सः |
| ए | घ | ঞ | ঢ | ধ | ঘ | ব | হ |
| ও | ঢ | অ | ণ | ন | ম | ০ | ০ |

(१०८)

कर्तरी दोषविचार.

लग्नाचंद्राद् व्यर्थस्थौ पापखेटौ यदा तदा ॥
 कर्तरी वर्जनीया सोद्धाहोपनयनादिषु ॥ ८१ ॥
 नहि कर्तरीजो दोषः सौम्ययोर्यदि जायते ॥
 शुभग्रहयुतं लग्नं कूरयोनास्ति कर्तरी ॥ ८२ ॥

लग्न अथवा चंद्रभाथी भारभा अने खीज स्थानमां
 पापअर्ह जे २હेला होय तो કર्तरीहोષ હोय છે; આ હોષમાં
 વિવાહ યજોપવીત આદિ શુભ કાર્� વજ્રિત છે. કર्तરी હોષમાંગ
 જે ઉપર કહेला સ્થાનોમાં શુભઅર્હ હોય અથવા શુભઅર્હ યુક્ત
 લગ्न હોય તો કૂરાંઘની કર्तરीનો હોષ જાણુંનો નહી. ८१-८२

सूर्यबलविचार.

एकादशे तृतीये वा ષष्ठे वा दशमेपि वा ॥
 वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ ८३ ॥
 जन्मन्यथ द्वितीये वा पंचमे सप्तमेपि वा ॥ .
 नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ ८४ ॥

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ॥

विवाहितो वरो मृत्यु प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥८५॥

वरने अगीआरभो, नीजे, छहुं, अने दथभो सूर्य होय
तो विवाहभाँ शुभ कृष्णायड जाणुनो, पहेलो, बीजे, पांचभो,
सातभो, अने नवभो सूर्य होय तो पूजा कर्याई शुभ जाणुनो.
चाथी, आठभो, अने बारभो सूर्य होय अने विवाह करे तो
भृत्य थाय तेभाँ सहेल नही. ८३-८५

गुरुवलविचार.

एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेषि वा ॥

नवमे च सुरचार्ये कन्यायाः शुभकारकः ॥८६॥

षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये दशमेषि वा ॥

भूरिपूजा पूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ८७॥

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ ॥

पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥८८॥

बे कन्याने अगीआरभो, बीजे, पांचभो, सातभो, अने
नवभो बृहस्पति होय तो विशेष करीने शुभ छे. छहुं, पहेलो
नीजे अने दथभो होय तो पूजानाकिथी शुभ छे. तथा

(११०)

ચોથા, આઠમો અને બારમો હોય તો નેણ છે. તેમાં વિવાહ
કરે તો પ્રાણુનો નાશ થાય. ૮૬-૮૮

ગુરૌ સિંહગતે કાર્યો ન વિવાહઃ કદાચન ॥
મેષસ્થિતે દિવાનાથે સિંહસ્થોર્પિ શુભપ્રદઃ ॥ ૮૯ ॥

સિંહ રાશિ ઉપર ઘૂહસ્પતિ હોય તો વિવાહ ન કરવો પણ
મેષ રાશિ ઉપર સૂર્ય હોય તો સિંહસ્થ ઘૂહસ્પતિ શુભપ્રદ છે. ૮૯

શનૈશ્રરદિને વૈવ યદિ રિક્તા તિર્થિર્ભવેત् ॥
તસ્મિન્વિવાહીતા કન્યા પતિસંતાનવર્ધિનીઃ ॥૯૦॥

જે શનિવારને દ્વિવસે રિક્તા (૪-૬-૧૪) તિર્થિ હોય
તેમાં કન્યાનો વિવાહ કર્યો હોય તો તે કન્યા પતિને સંતાન
વૃદ્ધિ કરવાવાળી જણવી. ૮૦

ભામિનીજન્મનક્ષત્રાદ્દિતીયં પતિજન્મભમ् ॥
ન શુભं ભર્તૃનાશાય કથિતં બ્રહ્મયામલે ॥ ૯૧ ॥

ડન્યાના જન્મનક્ષત્રથી બીજું નક્ષત્ર વરતું જન્મ નક્ષત્ર
હોય તો શુભ જણવું નહીં. તે ભર્તાનો નાશ કરે છે એવું પ્ર-
શયામલમાં છણ્ણું છે. ૮૧

(११)

दशमहादोषविचार.

लत्तापातो युतिर्वेधो यामित्रं बुधपंचकम् ॥

एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं ततःपरम् ॥९३॥

दृग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महावलाः ॥

एतानुदोषान्परित्यज्य लम्बं संशोधयेद्बुधः ॥९३॥

१ लता, २ पात, ३ युति, ४ वेध, ५ यामित्र. ६ बुध
पंचक, ७ एकार्गल, ८ उपग्रह, ९ क्रान्तिसाम्य, १०
दृग्धातिथि आ दश होष भद्रा अणवान् छे, आ होषेनो त्याग
करीने विवाहलभ पंडित संशोधन करे. ८२-८३.

पंचशलाकाचक्र.

पंचोर्ध्वाः स्थापयेद्रेखाः पंच तिर्यङ्गमुखास्तथा ॥

द्वयोश्च कोणयोर्द्वेद्वे चक्रं पंचशलाककम् ॥९४॥

ईशाने कृत्तिका देया क्रमादन्यानि भाज्ञि च ॥

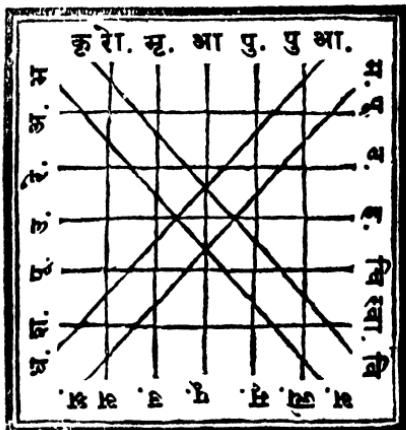
ग्रहास्तेषु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥९५॥

ज्येष्ठस्य निक्कटे या च गता भवति पूर्णिमा ॥

तन्मक्षत्रे स्थितश्चद्वो दातव्यो गणकोत्तमैः ॥ ९६ ॥

પાંચ રેખા ઉલ્લી કાઠવી
અને પાંચ રેખા આડીં
કાઠવી, તથા ખૂણુઓમ
બુધ્યે રેખા કાઠવાથી પં-
ચ રોકાં ચેક થાયછે. આ
ચકના દર્શાન ખૂણુના અથ
આગમાં કૃતિકાદિ નક્ષત્રે
લખવાં. જન્મ લગ્નની
નજીક જે પૂર્ણિમા હોય
તે દિવસના નક્ષત્ર ઉપર
અંદ્રમા ધારણ કરવો એમ
પાંડતોએ કહ્યું છે. ૮૪-૮૬.

પંચશલાકાચક્ર.



લત્તાદોષ.

નક્ષત્રં દ્વારદં ભાનુસ્તૃતીયં લત્તયા કુજઃ ॥
ષષ્ઠં જીવોષ્ટમં મંદો હંતિ દક્ષિણતઃસદા ॥ ૧૭ ॥
વામેન સસમશ્રાંદ્રિનવમં સિંહિકાસુતઃ ॥
હંતિ ર્મ પંચમં શુક્રો દ્વારિંશં પૂર્ણચન્દ્રમાઃ ॥૧૮॥
વિવાહના નક્ષત્રથી ભારમા નક્ષત્ર ઉપર સૂર્ય હોયતો સૂર્યનો
લત્તાહોય જાણવો. ત્રીજ નક્ષત્ર ઉપર ભંગળ હોય તો ભંગળનો
લત્તાહોય જાણવો. છૃષ્ટ નક્ષત્ર ઉપર બૃહર્ષતિ હોય તો બૃહ-

(११३)

स्पतिनो लता होष जाणुवो. आठभा नक्षत्र उपर शनि होय तो
शनिनो लता होष जाणुवो. भुध डाढी वाजुना सातभा नक्षत्र
उपर होय तो भुधनो लता होष जाणुवो. नवभा नक्षत्र उपर राहु
होय तो राहुनो लता होष जाणुवो. पांचभा नक्षत्र उपर शुक्र होय
तो शुक्रनो लता होष जाणुवो. अने पूर्ण चंद्रभा वावीसभा नक्षत्र
उपर होय तो चंद्रभानो लता होष अर्थात् वेद जाणुवो. ६७-६८

लत्ताफल.

रवेर्लता हरेद्वित्तं कुजस्य कुरुते मृतिम् ॥
बृहस्पतेर्व्युनाशं शनेः कुर्यात्कुलक्षयम् ॥ ९९ ॥
बुधस्य कुरुते त्रासं लत्ताराहोर्विनाशयेत् ॥
शुक्रस्य दुःखदा नित्यं त्रासदातु कलानिधेः १००

सूर्यनी लता संपत्तिनो नाश करे, भंगणी लता भत्तु
करे, घृहस्पतिनी लता खंधु नाश करे, शनिनी लता कुणनो
नाश करे, भुधनी लता त्रास करे, राहुनी लता विनाश करे, शु-
क्रनी लता हुमेशां हुःभद्रायक जाणुवी. ६६-१००.,

पातदोष.

सूर्ययुक्ताच नक्षत्रादोषः पातो विधीयते ॥
मघाश्लेषा च चित्रा च सानुराधा च रेवती ॥१०१ ॥

(११४)

श्रवणोपि च षट्कोर्यं पातदोषो निगद्यते ॥
अश्विनीमवधि कृत्वा गणयेलुभभावधि ॥ १०२ ॥

સૂર્ય ને નક્ષત્ર ઉપર હોય તે નક્ષત્રથી પાત હોષ જણુવો.
મધા, આરદેખા, ચિત્રા, અનુરાધા, રેવતી અને શ્રવણ આ છ
પાત કહેલાં છે. આ નક્ષત્ર અને સૂર્યના સંચોગથી છ પ્રકારના
પાત કહેલા છે. અશ્વિની નક્ષત્રથી લગ્નના નક્ષત્ર સુધી ગણ-
વાથી ને પાત હોષવાળા નક્ષત્ર ઉપર લગ્નનું નક્ષત્ર આવે તો
તે નક્ષત્રને પાત હોષ જણુવો. १०१-१०२.

પાતફલ.

પાવકः पवમાનश्च વિકારः કલહોપરः ॥
મૃત્યुः ક્ષયશ્રી વિજ્ઞેયं પાતષટ્કસ્ય લક્ષણમ् ॥ १०३ ॥

હેઠે છ પ્રકારનાં પાતનાં ક્ર્ણ છે. ૧ પાવક, ૨ પવમાન
૩ વિકાર, ૪ કલહ, ૫ મૃત્યુ, ૬ ક્ષય. આ છ પાત અતુક્ખમે
ક્ર્ણ આપે છે. ૧૦૩

પાતેન् પતિતો બ્રહ્મા પાતેન् પતિતો હરિः ॥

પાતેન પતિતः શંભુસ્તસ્માત્પાતં વિવર્જયેત् ॥ १०४ ॥

આ પાત હોષથી બ્રહ્મા, વિષણુ અને દુર્ગ એ પણ જુડ્યા
છે માટે અવરય કરીને પાતહોષ વજયે કરવો. ૧૦૪.

(११५)

युतिदोष.

यत्र गृहे भवेष्वद्वा ग्रहस्तत्र यदा भवेत् ॥

युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्र शुभाशुभाः ॥ १०५ ॥

रविणा संयुतो हानिं भौमेन निधनं शशी ॥

करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ॥ १०६ ॥

જે રાશિનો ચંદ્રમા હોય તેજ રાશિ ઉપર ડાઈ બીજ અહુ
રહેલા હોય તો યુતિહોષ જાણુંનો. પરંતુ શુક્ર વિના અન્ય ડાઇ
પણ પાપઅહુ અથવા શુભઅહુ હોય તેજ યુતિ હોષ હોયછે.
જે સૂર્ય ચંદ્રમાની સાથે હોય તો હાનિ કરે, મંગળ હોય તો
મૃત્યુ કરે અને રાહુ હેતુ તથા શનિ હોય તો ભૂળ નાશ કરે.

વેધવિચાર.

एકरेखास्थितिर्वेदो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ॥

विवाहे तत्र मासं तु न जीवति कदाचन ॥ १०७ ॥

જે નક્ષત્રનું લગ્ન હોય અને તેજ નક્ષત્રની રૈખામાં સૂર્ય
આદ્ધુ ડાઈ અહુ હોય તેજ અહુનો વેધ જાણુંનો. આ વેધમાં વિ-
વાહ કરે તો એક મહિનામાં મૃત્યુ થાય, १०७

(११६)

वेधपरिहार.

लत्तामाल्वके देशे पातश्च कुरुजांगले ॥
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १०८ ॥

लत्ताहोष भालवहेशभां वर्जनीय छे. पातहोष कुरुजांगल
हेशभां वर्जनीय छे. एकार्गल होष काश्मीर हेशभां वर्जनीय
छे, अने वेध होष सर्व हेशभां वर्जनीय छे. १०८

रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयम् ॥
बुधवेधे भवेद्रंध्या प्रव्रज्या गुरु वैधतः ॥ १०९ ॥
अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरेचंद्रे च दुःखिता ॥
परपुरुषरताराहोः केतोस्वच्छंद चारिणी ॥ ११० ॥

सूर्यनो वेध होय तो विधवा थाय, भंगणो वेध होय
तो कुणो क्षय थाय, शुधनो वेध होय तो वंध्या थाय, गुडनो
वेध होय तो सन्यासिनी थाय, शुक्लो वेध होय तो अपुत्र
थाय, शनि अने चंद्रभानो वेध होय तो हुःभी थाय, राहुनो
वेध होय तो परपुरुष गाभिनी थाय अने केतुनो वेध होय
तो स्वच्छंद्यारिणी थाय. १०८—११०.

यामित्रदोष.

चतुर्दशं च नक्षत्रं यामित्रं लग्नभात्समृतम् ॥
शुभयुक्तं तदिच्छन्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥ १११ ॥

(११७)

चंद्रशांदिर्भृगुर्जीवो यामित्रे शुभकारकः ॥

स्वर्भानुभानुमंदारा यामित्रे न शुभप्रदाः ॥ ११२ ॥

लग्नना नक्षत्रथी चैद्वा नक्षत्र उपर डेढ अह छाय तो
 यामित्र छाय जाणुवो, अने जे शुभ अह छाय तो शुभ यामित्र
 जाणुवो. चंद्र, युध, शुक अने गुडनो. यामित्र शुभकारक जाणुवो,
 अने राहु, सूर्य, शनि अने भंगणनो. यामित्र अशुभ जाणुवो.
 चंद्राद्वालमतोवापि ग्रहावर्ज्याश्च सप्तमे ॥

तत्रस्थिता ग्रहानूनव्याधिवैधव्यकारकः ॥ ११३ ॥

चंद्रभा थडी अथवा लग्न थडी सातभी राशि उपर डेढ
 अह छाय तो ते व्याधि अने वैधव्यकारक जाणुवो. ११३.

पंचकविचार.

धार्यातिथिर्मासदशाष्टवेदाः

संक्रांतितो यातदिनैश्च योज्याः ॥

ग्रहैर्विभक्ता यदि पंचशेषे

रोगस्तथामिनृपचौरमृत्युः ॥ ११४ ॥

ब्रूते रोगः पृथेचौरः सेवायां राजपंचकम् ॥

गृहे त्वमिपरित्याज्यं विवाहे मृत्युपंचकम् ॥ ११५ ॥

(११८)

तिथि १५, भास १२, दृश्य १०, अष्ट ८, वेद ४, सूर्य ८
 संकालिना जटला द्विस गया होय ते द्विसना अंकमां
 पूर्वोक्ता अंक युक्त करीने नवनो भाग हेवाथी जे शेष पांच
 रहे तो पंचक जाणुच्च, संकालिना अंकमां १५ युक्त करीने
 नवनो भाग हेवाथी पांच शेष रहे तो रोगपंचक आवे. १२
 युक्त करीने नवनो भाग हेवाथी पांच शेष रहे तो अजिन पंच
 आवे. १० युक्त करीने नवनो भाग हेवाथी पांच शेष रहे तो
 राजपंचक आवे. ८ युक्त करीने नवनो भाग हेवाथी पांच
 शेष रहे तो चौर पंचक आवे. ४ युक्त करीने नवनो भाग
 हेवाथी पांच शेष रहे तो मृत्युपंचक आवे. म्रतधंभमां रोग
 पंचक, यात्रामां चौरपंचक, सेवाकर्ममां राजपंचक, धर घना-
 ववामां अजिनपंचक अने विवाहमां मृत्युपंचक वर्जित छे.

एकार्गलबिचार.

योगांके विषमे चैको देयोऽष्टविंशतिः समे ॥
 अर्द्ध कृत्वाऽश्विनीपूर्वमंकम् मूर्ध्न दीयते ॥ ११६ ॥
 त्रयोदश तिरो रेखा एकोर्ध्वा मूर्ध्न विस्तृता ॥
 योगांके प्रासनक्षत्रे ज्ञेयमेकार्गलं बुधैः ॥ ११७ ॥
 सूर्यचंद्रमसोर्योगे भवेदेकार्गलस्तदा ॥ ११८ ॥

(૧૧૬)

વિવાહને દિવસે જે યોગ હોય તે
વિષમ હોય તો એક યુક્ત કરીએ અને
સમ હોય તો અફાવીસ યુક્ત કરીએ, પછી
તેનું અર્ધ કરીને જે અંક હોય તે અધિ-
નીને આરંભીને એકાગ્રલિ ચકના મહેતાક
ઉપર લખવાં. એકાગ્રલિ ચકની તેર રેખા
આડી અને એક રેખા ઉલ્લી એંચીને યો-
ગના અંક અને નક્ષત્ર કહેલાં છે. તે સૂર્ય
અને ચંદ્રનો યોગ એક રેખા ઉપર હોય
તો એકાગ્રલિ હોય જણવો. ૧૧૬-૧૧૮

| | |
|-------|------------|
| | एકાગ્રલચક. |
| અ | |
| રે | મ |
| ઉ | ઠ |
| પૂ | રો |
| જ | સૃ |
| ધ | આ |
| શ્ર | સુ |
| ર | સૂ |
| પૂ | સેલ |
| મુ | મ |
| જ્યે | સ્રૂ |
| ઉત્તુ | ઉ |
| વિ | હ |
| સ્વા | ચિ |

ઉપગ્રહદોષ.

શરાષ્ટ્રદિક् શક્રનગતિધૃત્ય-
સ્તિથિર્ધૃતિશ્ર પ્રકૃતેશ્ર પંચ ॥
ઉપગ્રહઃ સૂર્યમતોઽબજતારઃ
શુભા ન દેશે કુરુખાલિકાનામ् ॥ ૧૧૯ ॥
સૂર્યના નક્ષત્રથી ચંદ્રમાનું નક્ષત્ર પાંચ, આઠ, દશ, તૈચ,

(१२०)

સાત, જોગળીસ, ૫૬૨, અઢાર, એકવીસ, બાવીસ, તેવીસ,
ચાવીસ અને પચીસમું હોય તો ઉપથહ હોય જણુંબો. આ
વિવાહમાં શુલ્ષ નથી; ૫૨ંતુ દેશભેદના પરિહારથી ઉપથહનો
કુરુ અને બાળિદુક દેશમાં હોય છે. ૧૧૬

ક્રાન્તિસામ્યદોષ.

ઊર્ધ્વાસ્તિસ્તસ્તિરસ્તિસ્તો મધ્યે મીનં લિખેદૃબુધઃ ॥
સૂર્યચંદ્રમસૌદૃષ્ટૌ ક્રાન્તિસામ્યં નિગદ્યતે ॥ ૧૨૦ ॥

ત્રણ રેખા ઉથી અને ત્રણ રેખા આડી ક્રાન્તિસામ્યચક્ર.
એંચીને ભધ્યની રેખા ઉપર મીન લખીને કું મી મે
ક્રાન્તિસામ્ય ચક્ર બનાવવું. પછી સૂર્ય અને મ-
ચંદ્રમા એક રેખા ઉપર હોય તો ક્રાન્તિ- ધ-
સામ્ય હોય જણુંબો. ૧૨૦. વ-
તુ ક સિ

દગ્ધાનિધિ.

મીનેચાપેદ્વિતીયા ચ ચતુર્થી વૃષકુંભયો: ॥

મેષકર્કટયો: ષષ્ઠી કન્યાયુગ્મેષુ ચાષ્ટમી ॥ ૧૨૧ ॥

દશમી વૃશ્ચિકે સિંહે દ્વાદશી મકરે તુલે ॥

એતાસ્તુ તિથયો દગ્ધા: શુભ કર્મણિ વર્જિતા: ॥ ૧૨૨

મીન અને ધનના સૂર્ય વિવાહ સમયમાં હોય તો દ્વિતીયા

(૧૨૯)

દગ્ધા તિથિ જણવી. વૃષભ અને કુંભના સૂર્ય હોય તો બતુથી, મેખ અને કર્કના સૂર્ય હોય તો પછી, કન્યા અને મિથુનના સૂર્ય હોય તો અણ્ટભી, વૃદ્ધિક અને સિંહના સૂર્ય હોય તો દથભી તથા મફર અને તુલાના સૂર્ય હોય તો દ્વાદશી દગ્ધા તિથિ જણવી. આ દગ્ધા તિથિ શુભકર્મભાં વર્જિંત છે. આ દશ મહાદોષ લખેલા છે. ૧૨૧-૧૨૨

ત્યાજ્યા લગે વ્યયે મંદઃ ષષ્ઠે શુક્રેદુલગ્રાપાઃ ॥

રંધે ચન્દ્રાદયઃ પંચ સર્વેસ્તેઽબ્જગુરુ સમૌ ॥૧૨૩॥

વિવાહ લગ્નથી લગ્નભાં તથા ખારમા સ્થાનભાં થનિ; છષ્ટા સ્થાનભાં શુક, ચંદ્ર અને લગ્નનો સ્વાભી; આઠમા સ્થાનભાં ચંદ્ર, મંગળ, યુધ, ગુરુ, શુક, સાતમા સ્થાનભાં સર્વ અહ વર્જિંત છે; પરંતુ ચંદ્ર અને ગુરુ સાતમે હોય તો મધ્યમ જણવા. ૧૨૩

કેન્દ્રે સપ્તમહીને ચ દ્વિત્રિકોણે શુમાઃ શુમાઃ ॥

તૃતીયैકાદશો સર્વે પાપાઃ ષષ્ઠે ચ શોભનાઃ ॥૧૨૪॥

સપ્તમસ્થાનરહિત ચંદ્ર (૧-૪-૭-૧૦) સ્થાનભાં ધીબ અને નિંડાણ (૬-૫) સ્થાનભાં શુભઅહ શુભ છે, નીબ અને અગ્રીઆરમા સ્થાનભાં સ ૧૬ શુભ છે તથા છષ્ટા સ્થાનભાં પાપઅહ શુભ છે. ૧૨૪

(१२२)

किंकुरै नेत ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्र बृहस्पतिः ॥
मत्तमातंगयूथानां शतं हन्ति च केशरी ॥ १२५ ॥

जेना विवाह लभभां भृहस्पति केंद्र (१-४-७-१०)
स्थानभां होय तो अन्य अह शुं करी थडे छे ? जेवी रीते भत्त
हाथीआना टाणाने सिंह विनष्ट करे छे तेवीज रीते केंद्र गत
थ३ सर्वं होषेने विनष्ट करे छे. १२५.

वधु प्रवेश मुहूर्त.

हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मध्यायां पुष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु ॥
मूलाऽनुराधा हयरेवतीषु स्थिरेषु लभेषु वधूप्रवेशः ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, राखिणी, भृगरीर्ष, भधा, पुष्य,
धनिष्ठा, श्रवण, नष्टे उत्तरा, भूषा, अनुराधा, अश्विनी अने
रेवती नक्षत्राभां तथा स्थिर लज्जन (उपभ, सिंह, वृश्चिक अने
कुंभ) भाँ वधूप्रवेश शुभ जाणुवो. १२६

आदित्यवारे प्रभवंति रोगाः भौमेचमृत्यु
र्विधवबुधेच ॥ गुरुभृगुसोमशनिश्चरेण
सिद्धयंतिकार्णणिवधूप्रवेश ॥ १२७ ॥

रविवारने दिवसे वधू ॥ तो रोग उत्पन्न थाय.
भंगणवारने दिवसे भूत्यु थाय, युधे रने दिवसे विधवा थाय,

(१२३)

તथा શુરૂ, શુરૂ, ચંદ્ર અને થનિવારને દિવસે વધુ પ્રવેશ કરે
તો સર્વ કામ સિદ્ધ થાય. ૧૨૭.

દ્વિરાગમનમૃહૂર્ત.

પૈષ્ણાનુરાધોત્તરક્ષરોહિણીમૂલાદિતિસ્વાતિ
મૃગે શ્રુતિત્રયે ॥ પુષ્યાશ્વિ હસ્તેલિઘટાજગે
રવૌ સ્યાદોજવર્ષેસદહે દ્વિરાગમઃ ॥ ૧૨૮ ॥

રેવતી, અનુરાધા, તથે ઉત્તરા, ચિત્રા, રોહિણી, મૃગી,
પુનર્વસુ, સ્વાતી, ભૃગશીર્ષ, શ્રવણી, ધનિષ્ઠા, શતભિષા, પુષ્ય,
અશ્વિની અને હસ્ત આ નક્ષત્રોભાં; વૃત્શિક, કુંભ અને મેષના
સૂર્યોભાં; વિષભ ૧-૩-૫ વર્ષોભાં તથા શુભ દિવસ ચંદ્ર, ષુધિ,
શુરૂ, શુરૂ આ વારોભાં દ્વિરાગમન શુભ છે. ૧૨૮

સાર્ધાષ્ટમાસે ભૃગુજશ્રાપૂર્વે તતોધનેશે
સ્થિતપંચપક્ષઃ ॥ તતઃ પ્રતીચ્યાં નવમાસ
ભુક્તમેકાદશાહાસ્તમુદેતિ પૂર્વે ॥ ૧૨૯ ॥

સાડા આઠ મહિના સુધી શુઠ પૂર્વ દિશાભાં ઉદ્દ્ય રહીને
પાંચ પક્ષ અથર્વત અઢી મહિના સુધી અસ્ત રહે છે. ક્રીથી
પશ્ચિમ દિશાભાં ઉદ્દ્ય થઈને નવ મહિના સુધી ઉદ્દ્ય રહીને અગ્નિ-
આર દિવસ અસ્ત રહે છે, પદ્ધિથી પૂર્વ દિશાભાં ઉદ્દ્ય થાય છે.

• ચંતુર્યસંસ્કાર રત્નં સમાપ્તમ्.

(१२४)

॥ पंचमसिश्ररत्नप्रारंभः ॥

तत्रादौजन्मपत्रलेखनप्रकार ।

प्रथम आशीर्वादात्मक सहित भंगणायरणु श्लोक, संवत्, शाक, संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, चेत, करणु, चंद्रनी राशि, हैवतसहित नवमांशना भान, चैनी, गणु, वर्णु, वर्ग, नाडी, युंज, हंसक, हिनभान, रात्रिभान, सूर्यसंकांति, इष्टधडी, लग्न, शाति, अवटंक, पितानुं नाम, भातानुं नाम, खाणिकनुं नाम. नक्षत्रयरणु, जन्मलग्न, राशिलग्न आ सर्वे छमपूर्वक जन्मपत्रीकामां न्येतिर्विहीने लघ्वान्.

लग्न प्रमाण.

नगश्चिदस्वा वसुबाणदस्वा षडभ्ररामाम्बर
वेदरामा ॥ व्योमाब्धिरामानवदस्सरामा
क्रमोत्क्रमान्मेष तुलादिमानम् ॥ १ ॥

भेष अने भीन राशिनुं प्रभाणु २२७ पॄष्ठ अर्थात् ३ धडी ने ४७ पॄष्ठनुं ज्ञानवुं, वृष्टल अने कुंभ राशिनुं प्रभाणु २५८ पॄष्ठ अर्थात् ४ धडी ने १८ पॄष्ठनुं ज्ञानवुं, भिथुन अने अक्षर राशिनुं प्रभाणु ३०६ पॄष्ठ अर्थात् ५ धडी ने ६ पॄष्ठनुं

(१२५)

અણુવું, કર્દી અને ધન રાશિનું પ્રમાણું ૩૪૦ પળ અર્થात् ૫ ધડી ને ૪૦ પળનું અણુવું, સિંહ અને વૃદ્ધિક રાશિનું પ્રમાણું ૩૪૦ પળ અર્થાત् ૫ ધડી ને ૪૦ પળનું અણુવું, તથા ફન્યા અને તુળા રાશિનું પ્રમાણું ૩૨૬ પળ અર્થાત્ ૫ ધડી ને ૨૬ પળનું અણુવું. આ લગ્ન પ્રમાણું અમદાવાદનાં છે. ૧

| રાશિ | મે | જુ. | મિ. | ક. | સિં. | કં. | તુ. | જુ. | ધ. | મ. | કુ. | મી. |
|------|----|-----|-----|----|------|-----|-----|-----|----|----|-----|-----|
| ઘડી | ૩ | ૪ | ૫ | ૫ | ૫ | ૫ | ૫ | ૫ | ૫ | ૫ | ૪ | ૩ |
| પલ | ૪૭ | ૧૮ | ૬ | ૪૦ | ૪૦ | ૨૯ | ૨૯ | ૪૦ | ૪૦ | ૬ | ૧૮ | ૪૭ |

જન્મપત્રલેખનોદાહરણ.

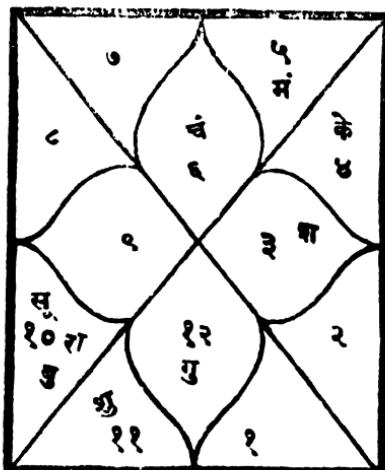
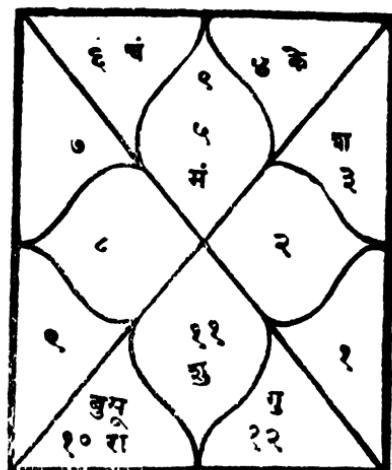
॥ શ્રી ગણેશાયનમઃ ॥ સજયતિ સિંધુખવદનો દેવો-
યત્પાદપદ્બુજસ્મરણમ् ॥ વાસરમણિસ્વિતમસાંરાશીન્ના-
શયતિવિનાનામ् ॥ ૧ ॥ સ્વસ્તિશ્રીમનૃપવિક્રમાર્ક-
રાજ્યસમયાતિત સંવત् ૧૯૭૨ વર્ષે શ્રીમદ્ભૂપતિશા-
લિલાહન શકે ૧૮૩૭ પ્રવર્ત્તમાને ॥ નર્મદાયાઃ ઉ-
ત્તરેમાગે વિભવનામ સંવત્સરે ॥ સૌમ્યાયને ભાસ્ક-
રે ॥ શિશિરતૌ ॥ માસાનાંમાસોત્તમે પૌષમાસે કૃ-
ણપદ્ધતે ૫ ઘટિકાઃ ૨૪ પલાનિ ૨૩ પરં ૬ જન્મ-

तिथौ ॥ भौमवासरे ॥ उत्तराफ़ाल्युनि घटिकाः १७
 पलानि ४९ परं हस्त जन्मनक्षत्रे ॥ अतिगण्ड घटि-
 काः ११ पलानि ५२ परं सुकर्मा जन्मयोगे ॥ ता-
 त्कालिके गरकरणे ॥ कन्याराशिस्थिते चन्द्रे ॥ रा-
 शिर्नवमांशे चतुर्थे मेषाख्ये भौमदैवत्ये ॥ महिषी-
 योनौ ॥ देवगणे ॥ वैश्यवर्णे ॥ मुषकवर्णे ॥ आद्य-
 नाडीस्थिते श्री फणीश्वरचक्रे ॥ मध्यभागयुंजायाम् ॥
 भूमिहंसके ॥ मकरसंक्रान्तेर्गतांशाः ११ एवंपंचाङ्ग-
 शुद्धावत्रदिने श्रीमन्मार्तण्डमण्डलोदयात्गतघटि-
 काः ३२ पलानि २५ समये सिंहलभवहमानायाम-
 स्यां शुभग्रहनिरीक्षित कल्याणवतीवेलायां श्रीगोड
 ज्ञातौ भद्रोपावह माणेकलालात्मजज्योतिर्विद् वृन्दा-
 वन गृहेभार्योभयकुलशुद्धानंदकर्त्री अखंडसौभा-
 ग्यवती दुर्गालक्ष्मीकुक्षेपुत्ररत्नमजीजनतता ॥ स्याभि-
 धानमवकहडचक्रानुसारेण पकाराक्षरादिउकार स्वरा-

नितंहस्तनक्षत्रस्य प्रथम चरणानुगं पुरुषोत्तम इति-
जन्मनाम सुप्रतिष्ठितम् ॥ उल्लापने तु जयंतीलाल
नामेतिलोके प्रसिद्धः ॥ देवद्विजाशीर्वचनाच्चिरंजी-
वी सुखी च भूयात् ॥ श्रीरस्त्वत्र ॥ श्री ॥ श्री ॥

जन्मलग्नम्.

चन्द्रलग्नम्.



यत्सूर्यराश्यंशसमानकोषे
घट्यादिकं स्वेष्टघटीयुतंतत् ॥

(१२८)

तजुल्यघट्यादि भवेद्वियत्र तत्तिर्यगूर्ध्वाकमितंहि लम्म् ॥ २ ॥

लग्न पत्रभां सूर्य स्थित राशि अने अंशना सभान डो-
डाना अङ्गाभां धृष्ट धडी अने पण जेडी हवी, जेडतां जेट्टी
धडी अने पण आवे तेने लग्नपत्रभां जेवी न जे राशि अं-
शना डोडाभां आवे तेज राशि अने अंश लग्न जाणुवुः २

द्वादशभाव.

तनुर्धनं सोदरमित्रपुत्रशत्रुप्रियामृत्यु शुभाः क्रमेण ॥ कर्मायसंज्ञौ व्ययनाम धेयोलम्मादिभावा विबुधैरिहोक्ताः ॥ ३ ॥

१ तनु, २ धन, ३ भ्रातृ, ४ भित्र, ५ पुत्र, ६ शत्रु, ७
भ्री, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ लाभ, १२ व्यय; आ
आर लाव लग्नथी आरभा स्थान सुधी पंडितोऽमे इच्छां छे. ३
यो यो भावः स्वामीहृष्टो युता वा सौम्यैर्वास्यात्तस्य
तस्यास्ति वृद्धिः ॥ पापैरेवं तस्य भावस्य हानि
निर्दिष्टव्यापृच्छतां जन्मतोवा ॥ ४ ॥

-

(૧૨૬)

જે જે ભાવ પોતાના સ્વામીથી યુક્ત અથવા દ્રષ્ટ હોય
તથા શુભ અહોથી યુક્ત અથવા દ્રષ્ટ હોય તો તે ભાવની વૃદ્ધિ
ભણુવી. અને પાપ અહોથી યુક્ત અથવા દ્રષ્ટ હોય તો તે
ભાવની હાનિ ભણુવી. પ્રશ્નસભય અથવા લઘસભય આ
વિચાર કરવો. ૪

દ્રષ્ટિવિચાર.

પાદૈકદસ્ત્રિદ્શમે તૃતીયે દ્વિપાદ
દૃષ્ટિનવપંચમે ચ ॥ ત્રિપાદ દૃષ્ટિ
આતુરષ્ટકેવાસંપૂર્ણદૃષ્ટિ: કિલસસમેવ ॥ ૫ ॥
તૃતીયે દશમે મન્દો નવમે પંચમે ગુરુ: ॥
વિંશતિ વીક્ષ્યતે વિશ્વાંશ્રતુર્થે ચાષ્ટમે કુજ: ॥ ૬ ॥

સૂર્ય, ચંદ્ર બુધ અને શુક્ર દશમા અને ત્રીજ સ્થાનને એક
ચરણથી; નવમા અને પાંચમા સ્થાનને બે ચરણથી; ચોથા અને
આઠમા સ્થાનને ત્રણ ચરણથી તથા સાતમા સ્થાનને ચાર ચર-
ણથી અર્થાત્ સંપૂર્ણ દ્રષ્ટિથી જુઓ છે. ત્રીજ અને દશમા
સ્થાનને ચનિશ્ચર, નવમા અને પાંચમા સ્થાને બૃહસપતિ, તથા
ચોથા અને આઠમા સ્થાનને મંગળ વીસવિશ્વા અર્થાત્ સંપૂર્ણ
દ્રષ્ટિથી જુઓ છે. ૫-૬

ઉચ્ચનીષગ્રહ.

અજ વૃષભ મૂગાઙ્ગના કુલીરા
 ઝષ વળિજૌ ચ દિવાકરાદિ તુંગાઃ॥
 દશ શિસિમનુયુક્ત તિથીંદ્રિયાંશૈ-
 સ્નિવકવિંશતિમિશ્રતેસ્તનીચાઃ ॥ ૭ ॥

મેષ, વૃષભ, મફર, કન્યા, કર્ક, મીન અને તુણા આ
 રાશિઓ કભથી દથ, નણુ, અહાવીસ, ૫ંદર, પાંચ, સત્તાવીસ
 અને વીસ અંશોએ કરી સૂર્યાદિ અહોનાં ઉચ્ચયરથાન જાણુવાં.
 અને ઉપર કહેલી રાશિઓથી સાતમી સાતમી રાશિ કભથી
 ઉપર કહેલા અંશોએ કરી સૂર્યાદિ અહોનાં નીચ સ્થાન જાણુવાં;
 તે નીચેલા અંશોએ સમજુ લેવાં. ૭

| ગ્ર. | સ્ર. | ચ. | મં. | બુ. | વૃ. | શુ. | શ. |
|-------|------|----|-----|-----|-----|-----|----|
| ઉચ્ચ. | ૧ | ૨ | ૧૦ | ૬ | ૪ | ૧૨ | ૭ |
| | ૧૦ | ૩ | ૨૮ | ૧૫ | ૫ | ૨૭ | ૨૦ |

| ગ્ર. | સ્ર. | ચ. | મં. | બુ. | વૃ. | શુ. | શ. |
|------|------|----|-----|-----|-----|-----|----|
| નીચ. | ૭ | ૮ | ૪ | ૧૨ | ૧૦ | ૬ | ૧ |
| | ૧૦ | ૩ | ૨૮ | ૧૫ | ૫ | ૨૭ | ૨૦ |

(१३१)

पुरुषजातक.

तनुस्थानफलम्.

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुते ज्ञं पीडां

पृथ्वीसुतो विननुते रुधिर प्रकोपम् ॥

छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं

जीवेदुभार्गवबुधाः सुखकांतिदाःस्युः ॥ ८ ॥

जे जन्म लग्नमां सूर्य ढाय तो अंग पीडा करे, भंगण ढाय तो रक्तविकार प्रगट करे, शनि ढाय तो अहु हुःअ करे अने युद्ध, चंद्र, शुक्र तथा युध ढाय तो सुख अने कांतिनी वृद्धि करे.

धनस्थान फलम्.

दुःखावहां धनविनाशकराः प्रदिष्टा

वित्ते स्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः ॥

चन्द्रो बुधः सुखुरु भृगुनन्दनो वा

नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः ॥ ९ ॥

धनस्थानमां सूर्य, शनि अने भंगण ढाय तो हुःअ। वधारे तथा धनने। नाश करे, अने चंद्र, युध युद्ध अने शुक्र ढाय तो नाना प्रकारथी धननी वृद्धि करे. ६

सहजस्थान फलम्.

भानुः करोति विरुजं रजनीकराऽपि
 कीर्त्यायुतं क्षितिसुनः प्रचुर प्रकोपम् ॥
 कुद्धिं बुधः सुधिषगं सुविनीत वेषं
 स्त्रीणां प्रियं गुरु कवी रविजस्तृतीये ॥ १० ॥

नीज स्थानभां सूर्य होय तो निरोग करे, चंद्रभा होय
 तो श्रीर्तिवान् करे, भंगण होय तो अति होधि करे, युध होय
 तो सर्व धार्य सिद्ध करे, शुरु, शुक्ल, अने शनि होय तो युद्धि-
 भान, परम चतुर, स्व०३५वान, अने स्त्रीओने प्रिय करे. १०

सुहृत्स्थान फलम्.

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
 कुर्वन्ति जन्मनि नरं सुचिरं चतुर्थं ॥
 सोमो बुध सुखरूर्भगुनंदनो वा
 सौख्यान्वितं च नृपकर्म रतः प्रधानम् ॥ ११ ॥

जन्म सभय चोथा स्थानभां सूर्य, भंगण, शनि २हेला
 होय तो सुखथी वर्जित करे. चंद्र, युध, शुरु तथा शुक्ल २हेला
 होय तो सुखथी युक्त राज्य करभारभां प्रीतिवाणी तथा प्र-
 धान थाय. ११

(१३३)

सुतस्थान फलम्.

पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतं बुधश्च

स्वल्पात्मजं शनिवरातनुजावपुत्रम् ॥

शुक्रेन्दु देव गुरुः सुत धाम संस्थाः

कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुखिनं सुरूपम् ॥ १२ ॥

पांचभा स्थानभां सूर्यं होय तो अहुज केऽधी याय, अुधं
होय तो थाडी संततीवाणो याय, शनि अने भंगण होय तो
संतान रहित होय, शुक्र, यद्र अने गुरु होय तो अहुज सं-
ततीवाणो अने सुभी तथा स्वप्नान होय. १२

रिपुस्थान फलम्.

मातण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाशं

मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम् ॥

शुक्रोबुधो हि कुमतिं सरूजं च जीव-

श्रन्दः करोति विकलं विफलप्रयत्नम् ॥ १३ ॥

अहु रथानभां सूर्यं अने भंगण होय तो गतु पक्षनो नाश करे,
शनि होय तो राज्याने त्यां भान होय, शुक्र अने अुधं होय
तो कुमति करे, गुरु होय तो रोग करे अने यद्रभा होय तो
विकलतां अने प्रयत्नं (उपाय) ने निरूपण करे. १३

(१३४)

जायास्थानफलम्.

तिग्रांशुभौपरविजाः किल सप्तमस्था

जायां कुकर्म निरतां तनुसंतातिं च ॥

जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां

रूपान्वितां जनमनोहररूपशीलम् ॥ १४ ॥

सातभा स्थानभां सूर्य, भंगण अने शनि हોય તો એ
પુરુષની સ્ત્રી કુકર्मी તथા થોડા સંતાનવાળી હોય, ગુરુ, ચંદ્ર,
શુક્ર અને બુધ હોય તો એની સ્ત્રી બહુજ સંતાનવાળી, મનુ-
ષ્યોના મનને હરણ કરવા ચોગ્ય તથા ૩૫ અને શીલવાળી હોય.

मृत्युस्थान फलम्.

सर्व ग्रहा दिनकरप्रमुखा नितान्तं

मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम् ॥

शस्त्राभिघात परिपीडित गात्रभागं

सौख्यैर्विहीनमतिरोगगणैरुपेतम् ॥ १६ ॥

ગ્રામાઠભા સ્થાનભાં સૂર્યાદિ સંપૂર્ણ અહોમાંથી ડોઈધણ
અહુ પડેલો હોય તો તે પુરુષની બુદ્ધિ અછ હોય, ડોઈ ધણ
અંગ શબ્દ લાગવાથી પીડિત હોય, સુખથી રહિત અને બહુ
રોગી હોય. ૧૫

(१३५)

धर्मस्थान फलम्.

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः

कुर्वन्ति धर्मरहितं विमतिं कुशीलम् ॥

चन्द्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमंत्री

धर्मक्रियासु निरतं कुरुते मनुष्यम् ॥ १६ ॥

नवभा स्थानभां सूर्य, शनि अने भंगण होय तो भनुष्यने
धर्म रहित, भतिहीन अने कुशील (नठारा आयरण) કરે છે તथा
चંદ્ર, બુધ, શુક અને ગુર હોय तो ધર्म કિયામાં નિરત કરે છે.

कर्मस्थान फलम्.

आदित्यभौमशनयः किलधर्मसंस्था

कुर्यान्तं बहुकुर्मरतं कुपुत्रम् ॥

चन्द्रः सुकीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तं ॥

रूपान्वितं बुधगुरु शुभकर्मभाजम् ॥ १७ ॥

दશભા સ્થાનભાં સૂર્ય, ભંગળ અને શનિ હોય તો ભનુ-
ષ્યને કુકભી તથા કુપુત્ર બનાવે છે. ચંદ્રભા હોય તો કીર્તિવાન,
શુક હોય તો ધનવાન અને સ્વરૂપવાન કરે તથા બુધ અને ગુર
હોય તો શુભ કર્મ કરવામાં મીતિવાળો હોય છે. १७

(१३६)

लाभस्थान फलम्.

लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभयुक्तरी
 तारापतिर्बहुधनं क्षितिज श्रनारी ॥
 सौम्योविवेक सततं सुभगं च जीवः
 शुक्रः करोतिधनिनं रविजःसुकीर्तिम् ॥ १८ ॥

लाभ स्थानमां सूर्यं होय तो राजथी लाभ करावे, चं-
 द्रभा होय तो अहु धनवान होय, अंगण होय तो श्री सुभ
 अणे, युध होय तो निरंतर ज्ञानि (विवेकी) धनावे, गुरु होय
 तो अैक्ष्यर्थवान करे, शुक्र होय तो धनवान करे तथा शनि होय
 तो श्रीर्तिभान करे. १८

व्यवस्था फलम्.

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशीलं
 कागंशशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम् ॥
 चन्द्रात्मजो गतधनं धिषगः कृशांगं
 शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीब्रम् ॥ १९ ॥

व्यय (खारभा) स्थानमां सूर्यं होय तो हु०८ स्वभाव-
 वाणे। करे, चंद्रभा होय तो काष्ठे। करे, अंगण होय तो पाप

(१३७)

कभी करे, युध होय तो निर्धन करे, वृहस्पति होय हुर्षण
अंग करे, शुक्र होय तो अहु अर्थवाणे। करे, अने शनि होय
तो तीक्ष्ण प्रकृतिवाणे। करे छे. १६

राहुकेतु फलं सर्व मन्दवत्कथितं बुधैः ॥

राहु अने तेतुनुं संपूर्ण इण शनिना भाव इणनी समान
पंडितोऽमे क्षुं छे.

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य यस्य केन्द्र वृहस्पतिः ॥

दशमोऽगारको यस्य सङ्गेयः कुलदीपकः ॥ २०॥

जेना जन्म लज्जनमां शुक्र अने युध होय, डंद्र स्थानमां
वृहस्पति होय, तथा दशमा स्थानमां भंगण होय तो ते आ-
णक पराक्षभी अने कुणमां दीपक समान तेजवाणे। ज्ञावो. २०

लम्बे शुक्रबुधौ नस्तः केन्द्रे नास्ति वृहस्पतिः ॥

दशमोऽगारको नास्ति स जातः किं करिष्यति ॥

जेना लज्जनमां शुक्र अने युध न होय, डंद्रस्थानमां यृ-
हस्पति न होय तथा दशमा स्थानमां भंगण न होय तो ते
आणक शुं करशे अर्थात् ते काँई पणु करी शकशे नही. २१

रिपुस्थाने यदा चन्द्रो लमस्थाने शनिश्चरः ॥

. कुजश्चसमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥२२॥

(१३८)

जेना छहुा स्थानमां चंद्रभा, लघनस्थानमां शनिश्वर तथा
सप्तम स्थानमां भंगण होय तो ते खाणकनो। पिता ज्वे नहीं.

लग्नस्थाने यदा जीवो धनस्थाने शनैश्चरः ॥

राहुश्च सहजस्थाने माता तस्य न जीवति ॥ २३ ॥

जेना लघनस्थानमां घृहस्पति, धन स्थानमां शनिश्वर तथा
त्रीज स्थानमां राहु होय तो ते खाणकनी माता ज्वे नहीं. २३

षष्ठेचभवने भौमो राहुः सप्तम संभवः ॥

अष्टमे च यदासौरीस्तस्य भार्या न जीवति ॥ २४ ॥

जेना छहुा स्थानमां भंगण, सातमा स्थानमां राहु तथा
आठभा स्थानमां शनिश्वर होय तो तेनी झी ज्वे नहीं. २४

चतुर्थेच यदाराहुः षष्ठेचन्द्रोऽष्टमेपिवा ॥

सद्यएवभवेन्मृग्युः शंकरो यदि रक्षति ॥ २५ ॥

जेना चौथा स्थानमां राहु तथा छहुा अथवा आठभा स्था-
नमां चंद्रभा होय तो ते खाणकनी साक्षात् शंकर रक्षा करे
तोपछु शीत्र भृत्यु थाय. २५

अष्टमस्थो निशानाथः केन्द्रेपापेन संयुतः ॥

चतुर्थेच यदा राहुर्वर्षमेकं सजीवति ॥ २६ ॥

(१३६)

જેના આઠમા સ્થાનમાં ચંદ્રમા, ડેંડ્રસ્થાનમાં પાપત્રહ,
ચોથા સ્થાનમાં રાહુ હોય તો તે બાળક એકજ વર્ષ જીવે. ૨૬

ષષ્ઠોષ્મસ્તથામૂર્તૌ જન્મકાલે યદા બુધઃ ॥

ચતુર્થેવર્ષેમૃત્યુશ્ર યદિ રક્ષતિ શંકરઃ ॥ ૨૭ ॥

જન્મ સમય છઠા, આઠમા તથા લગ્ન સ્થાનમાં ખુદ્ધ હોય
તો ચોથા વર્ષમાં મૃત્યુ થાય, સાક્ષાત્ શંકર રક્ષણ કરે તો પણ
જીવે નહીં. ૨૭

શનિક્ષેત્રે યદા સૂર્યો ભાનુક્ષેત્રે યદા શનિઃ ॥

વર્ષે ચ દ્વાદશે મૃત્યુ દર્દો વૈ રક્ષિતા યદિ ॥ ૨૮ ॥

જન્મ સમય શનિના સ્થાનમાં સૂર્ય હોય અને સૂર્યના
સ્થાનમાં શનિ હોયતો તે બાળક દેવતાઓથી રક્ષાએલો હોય
તો પણ બારમા વર્ષમાં મૃત્યુ પામે. ૨૮

દશમોઽપિ યદા રાહુર્જન્મકાલે યદા ભવેત्

વર્ષે તુ ષોડશે જ્ઞેયો બુધૈમૃત્યુર્ન સંશયઃ ॥ ૨૯ ॥

જેના જન્મ સમય દશમા સ્થાનમાં રાહુ હોય નો તે બા-
ળનું બેચુનું નથે મૃત્યુ નથે નથે નથે નથે

ભૌમભાસ્કરમન્દાશ શત્રુક્ષેત્રેષ્મેયદા ॥

• યમેન રક્ષિતોષ્યેવં વર્ષમાત્રં ન જીવતિ ॥ ૩૦ ॥

(१४०)

જન્મ સમય છુટા અથવા આડભા સ્થાનમાં ભંગળ, સૂર્ય અને થનિ હોય તો તે બાળકની યમરાજ રક્ષા કરે તો પણ એક વર્ષ પણ જીવે નહીં. ૩૦

चતુર્થે ચ યદારાહુઃ કેન્દ્રે ભવતિ ચન્દ્રમાઃ ॥

વિંશ વર્ષે ભવેન્મૃત્યુર્જાતકસ્ય ન સંશયઃ ॥ ૩૧ ॥

જન્મ સમય ચોથા સ્થાનમાં રાહુ અને છંદ્રસ્થાનમાં ચંદ્રભા હોય તો તે બાળક વીસ વર્ષની ઉભમરે ભરણું પામે. ૩૧

મૃગુપતિસુરપુઞ્યૌ ચન્દ્રમા કેન્દ્રવર્તી

બહુસુખધનવૃદ્ધિઃ કર્મસાધ્યં નરાણામ् ॥

રવિસુત્તશાશી લગે માનુજીવૌ ત્રિકોણે

ક્ષિતિસુત દશમસ્થે રાજયોગં વદંતિ ॥ ૩૨ ॥

ને પુરુષના જન્મ સમય છંદ્રસ્થાનમાં શુદ્ધ, ગુરુ, અને ચંદ્રભા હોય, અથવા થનિ અને ચંદ્રભા લઘનમાં હોય, અથવા સૂર્ય અને બૃહસ્પતિ ત્રિદ્યાણ સ્થાનમાં હોય અથવા ભંગળ દ્વારા સ્થાનમાં હોય તો તે પુરુષને રાજયોગ જાણુંનો. ૩૨

વર્ષપ્રવેજ્ઞ જ્ઞાન.

સપાદર્મવસાર્દ્ધચ ત્રિસ્થાનસ્થં ગતાબ્દકમ् ॥

વાર નાડા પલેભ્યા જન્મવારાદિ સંયુતમ् ॥ ૩૩ ॥

ગત વર્ષના અંકને નણુ જગાએ સ્થાપન કરી પ્રથમ અંકને સવાયા કરવા તે વાર અણુવા, બીજા અંકને અડધા કરવા તે ધડીએ અણુવી, અને તીજા અંકને હોઢા કરવા તે પળ અણુવી તેમાં જન્મનો વાર ધડી તથા પળ યુક્ત કરવાથી વર્ષ પ્રવેશનો વાર, ધડી તથા પળ આવે. ૩૩

વર્ષદશા.

જન્મક્રીસંસ્યાસહિતા ગતાબ્દાદ્વારનિતા
નંદ હૃતાવશોષાત્ || આચંકુરા જીશબુકે
શુપૂર્વાભવન્તિ મુહ્માદશિકા ક્રમોયમ् ||૩૪||
અષ્ટેન્દુખાગિનરિંદુક્રવેદબાણા: ગજાબ્ધય: ||
શૈલબાણા: કુબાણા શ્રમ્ભૂમિનેત્રવિયદ્રસા: ||૩૫||

જન્મ નક્ષત્રની સંખ્યામાં ગત વર્ષ યુક્ત કરી તેમાંથી બે બાદ કરી નવનો ભાગ આપવાથી જે શેષ રહે તે દશા: અણુવી. એક શેષ રહે તો સૂર્યની, બે શેષ રહે તો ચંદ્રમાની, નણુ શેષ રહે તો મંગળની, ચાર શેષ રહે તો રાહુની, પાંચ શેષ રહે તો શુરુની, છ શેષ રહે તો શનિની, સાત શેષ રહે તો યુધ્ની, આઠ શેષ રહેતો હેતુની તથા નવ શેષ રહે તો શુક્લની દશા અણુવી. સૂર્યની દશા ૧૮ દિવસ, ચંદ્રની ૩૦ દિવસ, મંગ-

(१४२)

ળની २१ દિવસ, રાહુની ५४ દિવસ, શુરૂની ४८ દિવસ,
શનિની ५७ દિવસ, યુધની ५१ દિવસ, કેતુની, २१ દિવસ
તથા શુક્રની ૬૦ દિવસની દથા જણુવી. ૩૪-૩૫
રવિવારકર્મ.

રાજ્યાભિપેકોત્સવ યાનસેવા ગોવન્હ
મંત્રૌषધિશસ્ત્રકર્મ ॥ સુવર્ણતામ્રૌર્ણિક
ર્ચર્મ કાષ્ટસંગ્રામ પણ્યાદિસૌવિદ્ધ્યાત् ॥ ૩૬ ॥

રાજ્યાભિપેક, ઉત્સવકર્મ, યાત્રા, રાજસેવા, ગાય પાળવી,
યજ્ઞયાગાદિહવન, મંત્રોપદેશ, ઐષધ લેવું તથા આપવું, શખ્સ
અનાવવું, સુવર્ણ, ત્રાંબુ, ચિન, ચામડુ, કાષ્ઠ, યુદ્ધમેસંગ તથા
વણિક કર્મ આ સર્વ કર્મ રવિવારને દિવસે શુભ છે. ૩૬

સોમવારકર્મ.

શંક્વાબ્જ મુક્તા રજતેક્ષુભોજ્યસ્ત્રીવૃક્ષ
કક્ષાંભવિમૂષણાદ્યાः ॥ ગાનં ક્રતુક્ષીર
વિકારશૃંગીપુષ્પામ્બરારંભગમિંદુવારે ॥ ૩૭ ॥

શેખ, કાળી, માતી, રંપું, સુદુરલોન, વૃક્ષ, કૃત્યકર્મ,
જગ્યકર્મ, અલંકાર, ગાયન યજ્ઞકર્મ, ગોરસકર્મ, ગોમહિષ્યા-
દિક, પુષ્પ, તથા વસ્ત્ર આ સર્વ કર્મ સોમવારે શુભ છે. ૩૭

(१४३)

भौमवारकर्म.

भेदानन्तस्तेय विषामिशस्त्र वध्याभिघाता
हवशाठ्यदंभान् ॥ सेनानिवेशाकरधातु
हेमप्रवाल स्त्रानि कुजे विदध्यात् ॥ ३८ ॥

બેદ કર્મ, અનૃતકર્મ (ચોરી ઈત્યાદિ) વિષકર્મ, અભિ-
કર્મ, વધ, નાશ, કપ્ટ, દંભ, સૈન્યકર્મ, ખાણુ પોઢવી, ધ્યાતુ,
સુવર્ણ, રત્નાદિ કર્મ મંગળવારે શુભ છે. ૩૮

बुधवारकर्म.

नैપुण्य पुण्याध्ययनं कलाश्च शिल्पादिसे
वालिपिलेखनानि ॥ धातुक्रिया कांचन
युक्ति संधि व्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ ३९ ॥

ચાતુર્ય, પુણ્ય, અર્ધધયન, ડળા, શિદ્વિદ્વિદ્યા, સેવા, લખણ,
ધાતુક્રિયા, સેનાની યુક્તિ, મૈત્રી, વાદવિવાદ, આ સર્વ કર્મ
અખ્રવારે શુભ છે. ૩૯

गुरुવारकर्म.

धર्मક્રિયા પौષ्टિક યજ્ઞવિદ્યા માંગલ્ય
હેમાંબરવેશમયાત્રાઃ ॥ રથાશ્ચ મૈષજ્ય
વિમૂષણાદિકાર્યે વિદध્યાત્સુરમંત્રિવારે ॥ ૪૦ ॥

(૧૪૪)

ધર્માદ્ધિયા, નવ અદ્ભુત પૂજન, યજા, વિધાલ્યાસ, 'માંગળિક
કર્મ, સુવર્ણ, વસ્ત્ર, ગૃહ, યાત્રા, રથ, અથ, આધ્યાત્મિક તથા નાના
પ્રકારનાં આભૂતખુલ્લ ધારણું કરવાં, આ સર્વ કર્મ ગુરૂવારે શુભછે.
શુક્રવારકર્મ.

સ્ત્રીગીતશયયામणિરત્નગંધ વસ્ત્રોત્સવા-
લંકરણાદિકર્મ ॥ ભૂપણ્યગો કોષકૃષિ-
ક્રિયાશ્ર સિધ્યંતશુક્રસ્યદિનેસમસ્તાઃ ॥ ૪૧ ॥

અની પ્રસંગ, ગાયન વિધા, થથ્યા, મણિ, રત્ન, ચંદ્રન, વસ્ત્ર
ઉત્સાહ, અલંકાર, વાણિજ્યકર્મ, પૃથિવ, દુકાન, ભંડારખાતું,
કૃપિકર્મ, આ સર્વ કર્મ શૈક્ષનારે શુભ છે. ૪૧

શનિવારકર્મ.

લોહાશ્મસીસત્રપુશસ્ત્રદાસ પાપાનૃતસ્તેય
વિષાર્કવિદ્યામ् ॥ ગૃહપ્રવેશદ્વિપબંધદીક્ષા
સ્થિરં ચ કર્માર્જકસુતેનિહ કુર્યાત् ॥ ૪૨ ॥

દોષકર્મ, પથથર, સીમું, જરસત, થસ્ત, દીસ, પાપ, અનૃત-
ભાષણું, ચોરી, વિષ, અર્ક બનાવવા, ગૃહપ્રવેશ, હરતીખંધન,
ભંતદીક્ષા તથા સ્થિરકર્મ આ સર્વ શનિવારે શુભ છે. ૪૨

(१४५)

कार्यकार्यप्रभ.

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ॥

अमिभिस्तु हरेद्वागं शेषं सत्वं रजस्तमः ॥ ४३ ॥

सिद्धिस्ताकालिके सत्वे र्जसा तु विलंबना ॥
तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्नकोविदैः ॥

तिथि, प्रहर, नक्षत्र, अने वारनी संभ्याने ज्ञेयीने तथुने।
भाग आपवो, जे १ शेष २हे तो सत्व, २ शेष २हे तो २७,
अने ३ शेष २हे तो तम जणुवुँ. तेनुँ इण सत्वथी तत्काल
कार्यनी सिद्धि कडेवी, २७थी विवंब कडेवो तथा तमथी १न-
०४७ कडेवुँ. आ प्रकारे पंडितोऽप्य प्रश्न जणुवुँ. ४३-४४

पंथापश्च.

तिथिःप्रहर संयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥

वर्तमानं च नक्षत्रं गणयेत्कृतिकादितः ॥ ४५ ॥

सप्तमिस्तु हरेद्वागं शेषं तु फलमादिशेत् ॥

एकशेषे भवेत्स्थाने द्वितीये पथिवर्तते ॥ ४६ ॥

तृतीये चार्धमार्गे तु चतुर्थे ग्रामसन्निधौ ॥

पंचमेषु नरागृत्तिः षष्ठे व्याधियुतं वदेत् ॥ ४७ ॥

शून्यं ज्ञेयं सप्तमे वै चैतत्प्रश्नस्य लक्षणम् ॥

तिथि, प्रहर, नक्षत्र अने वारनी संभ्याने ज्ञेयी कृतिका-

થી વર્તમાન નક્ષત્ર સુધી ગણી તેમાં જોડી સાતનો ભાગ હેવા-
થી જે શેષ રહે તે ક્રિયા જાળવું. એક શેષ રહે તો સ્થાન ઉપર,
એ શેષ રહે તો ભાર્ગભાં, નણું શેષ રહે તો અડ્ધા ભાર્ગભાં, ચાર
શેષ રહે તો ગામના સમીપભાં, પાંચ શેષ રહે તો આવીને પાછેા
ગયો, છ શેષ રહે તો રોગયુક્ત તથા સાત શેષ રહે તો શૃંગ.
ક્રિયા કહેવું. ૪૫-૪૭.

કાર્યસિદ્ધિપ્રભ.

દિશાપ્રહરસંયુક્તા તારકવારમિશ્રિતા ॥

અષ્ટમિસ્તુ હરેદ્રાગં શેષં પ્રશ્નસ્ય લક્ષણમ् ॥૪૮॥

પંચૈકેતારિતા સિદ્ધિઃ ષટ् તુર્યે ચ દિનત્રયમ् ॥

ત્રિસતકે વિલંબથી દ્વૌચાષ્ટોન ચ સિદ્ધિદૌ ॥૪૯॥

પ્રશ્ન કર્તાનું મુખ જે દિશામાં હોય તે દિશા, પ્રહર,
નક્ષત્ર અને વારની સંખ્યાનો સરવાળો કરી આડનો ભાગ
આપવાથી જે શેષ રહે તે પ્રશ્નનું ક્રિયા જાળવું. પાંચ અને એક
શેષ રહે તો તત્કાળ કાર્ય સિદ્ધિ હોય, છ અને ચાર શેષ રહે
તો નણું દિવસભાં કાર્ય સિદ્ધિ હોય, નણું અને સાત શેષ રહે
તો વિલંબથી કાર્ય સિદ્ધિ હોય તથા એ અને આડ શેષ રહે તો
કાર્ય સિદ્ધિ ન હોય. ૪૮-૪૯.

પશુપ્રભ.

દુમણિભાગ્રવમેષુ વને પશું તદનુષ્ટસુ-

(१४७)

च कर्ण पथेस्थितम् ॥ अचलभेषु गतं
गृहमागतं द्वयगतं गतमेव मृतं त्रिषु ॥ ५० ॥

सूर्य नक्षत्रथी दिनीआं नव नक्षत्रभां पशु घोवाई जय
तो वनभां छे एम कडेवुं, भीजां छ नक्षत्रभां घोवाई जय
तो भार्गभां छे एम कडेवुं, त्रीज सात नक्षत्रभां घोवाई जय
तो धरभां आवेलुं एम कडेवुं, चोथा ऐ नक्षत्रभां आवशे
नही एम कडेवुं तथा पांचभा तणु नक्षत्रभां भरणु पाभ्युं
छे एम कडेवुं. ५०

नष्टवस्तुपञ्च.

अंधकं तदनु मन्दलोचनं मध्यलोचनमतः
सुलोचनम् ॥ रोहिणीप्रभृतिभं चतुर्विधं
नूनमत्र गणयेत्पुनः पुनः ॥ ५१ ॥

रोहिणी नक्षत्रने लैठने यार नक्षत्र कभी अंधलोचन,
मंधलोचन, मध्यलोचन, अने सुलोचन संज्ञावाणा जाणुवा ते
नीचेना यक्कभां सप्त सम्भु लेवा. ५१

अंधेसद्यः प्राप्यते वस्तुनष्टं कष्टात्प्राप्यं मंद
नेत्रेचनद्वत् ॥ दूरान्दूराव्यं मध्यनेत्रेनलभ्यं
न श्रोतव्यं नैवलभ्यं सुनेत्रे ॥ ५२ ॥

अंधलोचनना नक्षत्रभां घोवायली वस्तु शीघ्र भणे,

भं द्वीयनना नक्षत्रमां घोवायदी वस्तु कृष्णी भणे, भध्य
दोयनना नक्षत्रमां घोवायदी वस्तु जणु पडे तथा सुलोय-
नना नक्षत्रमां घोवायदी वस्तु जणु पडे नहीं तेमज्ज प्राप्त
पणु थाय नहीं. ५२

| अंधलोचन | रो. | पु. | उ. | वि. | पू. | ध. | रे. |
|----------|-----|-------|-------|---------|------|-----|-----|
| मंदलोचन | मृ. | इश्व. | ह. | इन्द्र. | उ. | श. | अ. |
| मध्यलोचन | आ. | म. | चि. | ज्ये. | अ. | पू. | भ. |
| सुलोचन | पु. | पू. | स्वा. | मू. | श्र. | उ. | कु. |

मघादि चार्यमांतं च समीपे वस्तु दृश्यते ॥

हस्तादि वसुपर्यंतमन्यहस्ते च दृश्यते ॥ ५३॥

शततारायमांतं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते ॥

अग्न्यादिसार्पर्यंतमदृष्टं दूरगं तथा ॥ ५४ ॥

भधा नक्षत्रथी उत्तराकृष्णुनी नक्षत्र सुधीमां घोवायदी
वस्तु सभीपमांज हेघाशे, हस्त नक्षत्रथी धनिष्ठा नक्षत्र सुधीमां
घोवायदी वस्तु खीजना हाथमां हेघाशे, शतभिषा नक्षत्रथी
भरखी नक्षत्र सुधीमां घोवायदी वस्तु घोतानाज धरभां हेघाशे
तथा कृतिका नक्षत्रथी आरवेषा नक्षत्र सुधीमां घोवायदी
वस्तु हेघाशे नहीं तेमज्ज जडश ५३-५४.

(१४६)

तिथि वारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ॥
दिक्संख्यया हतं चैव सप्तमिर्विभजे त्पुनः ॥५५॥
एकेन भूतले द्रव्यं द्रव्यं चेद्गांडसंस्थितम् ॥
तृतीये जलमध्यस्थमंतरिक्षे चतुर्थके ॥ ५६ ॥
तुषस्थं पंचमेतुस्यात्पष्टेगोमय मध्यगम् ॥
सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्पश्च लक्षणम् ॥ ५७ ॥

तिथि, वार, नक्षत्र, प्रहर आ सर्वानी संभ्याने एकत्र
करी दृश्यथी गुणी साठेनो भाग आपवाथी जे शेष रहे ते
ते कृष्ण जाणुवुँ. एक शेष रहे तो पृथ्वीभां, ऐ शेष रहे तो
पात्रभां, त्रिष्ण शेष रहे तो जगभां, चार शेष रहे तो अंतरिक्षभां
पांच शेष रहे तो तटभां, छ शेष रहे तो छाणुभां तथा सात
शेष रहे तो भस्म (राघ)भां वस्तु जाणुवी. ५५-५६-५७.

समर्धमहर्द्विचार.

संक्रान्तिकृक्षं तिथिवारमिश्रं सप्ताहतं
पावकभक्तशेषम् ॥ समेसमर्धं विषमे-
त्यनर्धशून्ये महर्धं मुनयो वदन्ति ॥ ५८ ॥

संक्रान्ति, नक्षत्र, तिथि अने वार आ सर्वानी संभ्याने
एकत्र करी सातथी गुणी त्रिष्णुनो भाग हेवाथी जे शेष सभ

(१५०)

રહે તો સમધા (સાંધુ), વિષમ શેખ રહે તો ધણુંજ મોંધું તથા
શૂન્ય શેખ રહે તો મોંધું જણવું એમ ભુનીઓ કહે છે. ૫૮
ગર્ભિણીપ્રશ્ન.

નહ દ્વયં ગર્ભિણી નામધેયંતિથિ પ્રયુક્તં
રસસંયુતં ચ ॥ એકેન હીનં નવભર્વિભક્તં
સમે કુમારી વિષમે કુમારઃ ॥ ૫૯ ॥

જ વખતે છાઈ પ્રશ્ન કરે કે અસુક સ્થીને છાકરી આવશે કે
છાકરો આવશે, એજ વખતે વીસ, બે, ગર્ભિણીના નામના
અક્ષર, તિથિ તથા છ સર્વને એકઠા કરી તેમાંથી એક હીન
કરી નવનો ભાગ ટેવાથી જે સમ અંક શેખ વધે તો છાકરી
તથા વિષમ અંક શેખ વધે તો છાકરો આવશે એમ કહેવું. ૫૮
નેત્રસ્ફુરણ.

નેત્રસ્યોર્ધ્વं હરતિ સકલં માનસં દુઃખજાલं
નેત્રોપાંતે દિશતિ ચ ધનં નાસિકાંતે ચ મૃત્યુઃ ॥
નેત્રસ્યાધઃ સ્ફુરણમસકૃતસંગરે ભંગહેતુ-
ર્વામે ચैતત્કલમિવફલં દક્ષિણે વैપરીત્યમ् ॥૬૦॥

નેત્રના ઉપર સ્કુરણુ હોય તો ભનના સર્વ હુઃખનો નાથા,
અંતે નેત્રના ઝુણામાં સ્કુરણુ હોય તો ધનપ્રાપ્તિ, નાકના અંત

(१५१)

આગ આગળ સુરણુ હોય તો મૃત્યુ, નેત્રના નીચે સુરણુ હોય
તો સંશોભમાં વારવાર પરાજ્ય હોય, સીઓના નેત્રનું ઇણ
આનાથી વિપરીત કહેવું, અર્થાત્ પુરુષનું દક્ષિણ નેત્ર અને
સીનું વામ નેત્ર સુરણુ હોયતો પૂર્વોક્તા ઇણ કહેવું. ૬૦

અંગસ્ફુરણ.

અંગસ્ય દક્ષિણે ભાગે પ્રશસ્તં સ્ફુરણ ભવેત् ॥

અપ્રશસ્તં તથા વામે પૃષ્ઠસ્ય હૃદયસ્યચ ॥ ૬૧ ॥

પુરુષનો દક્ષિણ ભાગ કરે તો શુભ તથા ડાયો ભાગ,
પીઠ અને હૃદય કરે તો અશુભ જાણવું; તેમજ સીઓનું
આનાથી વિપરીત ઇણ જાણવું. ૬૧

રાશિષધાનતા.

દેશે ગ્રામે ગૃહે યુદ્ધે સેવાયાં વ્યવહારકે ॥

નામરાશે: પ્રધાનત્વં જન્મરાશિં ન ચિંતયેત् ॥૬૨॥

વિવાહે સર્વમાંગલ્યે યાત્રાદૌ ગ્રહગોचરે ॥

જન્મરાશે: પ્રધાનત્વંનામરાશિં ન ચિંતયેત् ॥૬૩॥

દેશ, આભવાસ, ગૃહપ્રવેશ, યુદ્ધ, સેવા, અને વ્યવહાર-
કાર્ય, આ સર્વ કાયોભાં નામ રાશિથી વિચાર કરવો, વિવાહ,
સર્વ શુભકાર્ય, યાત્રા અને ગ્રહગોચર આદિ કાયોભાં જન્મ
રાશિથી વિચાર કરવો. નામ રાશિનો વિચાર કરવો નહીં. ૬૨-૬૩

(१५२)

जन्मस्थचंद्रे वर्जये.

जन्मक्षस्थे शशांकेतु पंचकर्माणि वर्जयेत् ॥
 यात्रा युद्धं विवाहं च क्षौरं च ग्रहवेशनम् ॥ ६४॥
 यात्रा, युद्ध, विवाह, क्षौर तथा ग्रहप्रवेश आ पांच क्षेत्रों
 जन्मना चंद्रभाभां वर्जित छे. ६४

ग्रंथसमाप्ति समय.

रामऋत्वङ्क्लचन्द्रबदे माधवस्यासितेरे ॥

सप्तम्यां सूर्यवारे च ग्रंथः संपूर्णतां गतः ॥ १ ॥

व्याख्येयं रचिता प्रेमणा श्रीवृन्दावनशर्मणा ॥

अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षंतव्यं विबुधैर्नैः ॥ २ ॥

વિડમ્ભીય સંવત ૧૯૬૩ વैશાખ માસના શુક્লપક્ષની સ-
 પ્તમી અને રવિવારને દિવસે આ ગ્રંથ સંપૂર્ણ કચો છે. આ
 ગુજરાતી વિષયાએ પ્રેમથી ભટ વૃદ્ધાવનશર્માએ રચી છે, તેમાં
 ડોઈ ડેકાણે કાઈ પણ અથુદ્ધતા રહી ગઈ હોય તો પંડિત જ-
 નોએ ક્ષમા કરવી એ ભારી હાથ જોડીને પ્રાર્થના છે. ૧-૨

इति श्री गुर्जरमण्डलान्तवर्ति अमदावाद निवासि भट्टोपाद

माणेकलाळसुत ज्योतिर्विंदू वृन्दावनभट्ट लिखित गुर्जर

टीકा सहितः बालबोधज्योतिषसारसंग्रहः समाप्तः ॥

॥ श्री गणाधिपतये नमः ॥

अथ

गुर्जर भाषानुवाद सहित.
ग्रहगोचर ज्योतिष.

॥ मंगलाचरणम् ॥

आदौ गुरुवरं नत्वा श्रीवृन्दावनशर्मणा ॥

बालानां सुखबोधाय प्रोच्यते ग्रहगोचरम् ॥ १ ॥

प्रथम श्रेष्ठ गुड्गुने नभस्कार करीने श्री वृंदावन शर्मा
बाणहोने सहेलथी ओषध थवाने भाटे सूर्यादि अहोनुं शुभाशुभ
इण कहे छे. १.

चन्द्रमा यस्य मूर्द्धनं भुजगो करकंजकम् ॥

अलंकरोति तं देवं नत्वा टीकां करोम्यहम् ॥ २ ॥

ज्ञेना भस्तडने विषे चंद्रमा विराजे छे तथा सर्पो जे-
भना करकभणने त्रिषे कंडणु ३पे छे एवा ते हेव भडाडेवल्लने
नभस्कार करीने हुं वृंदावन शर्मा आ अंथनी टीका कडं हुं. २.

(२)

॥ अथ सूर्यफलम् ॥

सहज दशम पष्ठे लभगे याति सूर्ये
 धनयशनृपमान्यं सर्वकार्येषु सिद्धिः ॥
 शुभमतिमस्तिलार्थं चंधुवर्मेऽपि सौख्यं
 सुतसुखधनलाभं पुण्यवृद्धिं करोति ॥१॥

હરડोાઠ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુતાં ત્રીજે, દથમે,
 છુટો અને અગીઆરમેા સૂર્ય આવે તો તે શ્રેષ્ઠ જાણવેા. તેનું
 કેળ નીચે પ્રમાણે; ધન અને યથનો લાભ, રાખથી ભાન,
 સર્વ કાર્યોભાં ચિદ્ધિ, શ્રેષ્ઠ યુદ્ધિ, નાના પ્રકારના ધનનો લાભ,
 આત્મ વર્ગોભાં સુખ, પુત્રતું સુખ, ધનનો લાભ તથા પુણ્યનો
 વધારો કરે છે. ૧.

जनमांत्य सप्तश्चि चतुर्थं संस्थो
 पंचाष्टके वै नवमेऽपि भानुः ॥
 रोगं च शोकं भयमग्निपिण्डां
 व्याधिप्रवासौ कुरुते ऽर्थहानिम् ॥ २ ॥

હરડોાઠ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુતાં પહેલો, બારમે,
 આતમે, બીજે, ચાથે, પાંચમે, આઠમે અને નવમે સૂર્ય આવે

(३)

तो ते नेष्ट अणुवो। तेनुं इण नीचे प्रभाष्ये; शैग अनेकोऽहं,
अय, अग्निनी पीडा, व्याधि, प्रवास तथा धनभी हानि करे छे.

॥ अथ चंद्रकलम् ॥

जन्म त्रि सप्ताश्वि दशायसंस्थो
ष्ठो विखुश्चापि करोति लाभम् ॥
द्रव्यागमं मित्रसमागमं च
सद्बुद्धिवृद्धिं द्विजदेवभक्तिम् ॥ ३ ॥

हरेकार्थ भाणुसने पेतानी राशिथी गण्यतां पढेलो, अब्जे,
सातभो, धीजे, दशभो, अग्नीआरभो। अने छहो चंद्रभा आवे
तो ते श्रेष्ठ अणुवो। तेनुं इण नीचे प्रभाष्ये; लाभ करे, द्रव्यनी
प्राप्ति, भित्राथी समागम, श्रेष्ठ सात्विक युद्धिनी वृद्धि तथा
आण्य अने देवतानी भक्ति करावे छे. ३.

धर्माद्विगच्छ सुतरंधगतो व्ययस्थो
द्रव्यार्थहानिमखिलं कुरुतेऽपिचंद्रः ॥
चौरामिभीतिवधबंधयुतं करोति
हानिर्वियोगभयदुःखयुतं करोति ॥ ४ ॥

हरेकार्थ भाणुसने पेतानी राशिथी गण्यतां नवभो, शाश्वा,

(४)

ਪਾਂਥਮੋ, ਆਠਮੋ ਅਨੇ ਬਾਰਮੋ ਅੰਦਰਮਾ ਆਵੇ ਤੋ ਤੇ ਨੇਣ ਜ-
ਥੁਵੇ। ਤੇਨੁੰ ਇਣ ਨੀਚੇ ਪ੍ਰਮਾਣੇ; ਸਰਵ ਦ੍ਰਵਧ ਅਨੇ ਅਰਥਨੀ ਛਾਨਿ
ਕਰੇ ਛੇ। ਚੋਡ ਤਥਾ ਅਜਿਨੇਂ ਭਯ, ਸ਼ਖ਼ਨੀ ਪੀਡਾ ਅਨੇ ਅੰਧਨ
ਕਰੇ ਛੇ, ਛਾਨਿ ਅਨੇ ਵਿਧੋਗਨੇ ਭਯ ਤਥਾ ਦੁਖਨੀ ਪ੍ਰਾਪਿ ਕਰੇ ਛੇ। ੪.

॥ ਅਥ ਘੋਸਫਲਮ् ॥

ਤ्रਿ਷ਟੇ ਚ ਲਾਮੇ ਧਰਣੀਸੁਤਃ ਸ्यਾਤ्
ਗੋਮੂਹਿਰਣਾਬੰਖਲਾਮਕਾਰੀ ॥
ਸ਼ਾਨੁਕਥਾਂ ਰਾਜਕੁਪਾਂ ਵਿਧਤੇ
ਚਾਰੋਗਧਸੌਖਧਾਂ ਵਿਵਿਧਾਂ ਕਰੋਤਿ ॥ ੫ ॥

ਛਰਣਾਈ ਮਾਣੁਸਨੇ ਪੋਤਾਨੀ ਰਾਸ਼ਿਥੀ ਗਣੁਤਾਂ ਜੀਅੇ, ਛਛੇ। ਅਨੇ
ਅਗੀਆਰਮੋ ਮੰਗਣ ਆਵੇ ਤੋ ਤੇ ਐਣ ਅਖੁਵੇ। ਤੇਨੁੰ ਇਣ ਨੀਚੇ
ਪ੍ਰਮਾਣੇ; ਗਾਧ, ਪ੍ਰਥਮੀ, ਸੁਵਏਂ ਅਨੇ ਉਤਮੇਤਮ ਵਖੋਨੇ। ਲਾਭ
ਕਰੇ ਛੇ, ਥੜ੍ਹੇ ਨਾਥ, ਰਾਜਧਾਨੀ ਮਹੇਰਭਾਨੀ, ਥਰੀਰੇ ਆਰੋਗਧਤਾ
ਤਥਾ ਨਾਨਾ ਪ੍ਰਕਾਰਨਾ ਸੁਖਨੇ ਪ੍ਰਾਪਿ ਕਰੇ ਛੇ। ੫.

ਜਨਮਾਬਿੰਧਪਂਚਮਦਾਦਸ਼ਸਸਾਣਵਮੇਦਿਤਿਯੇਦਸਮੇਤਪਿ।
ਵਧਾਧਿਂ ਵਿਦੇਸ਼ਗਮਨਂ ਮਿਤਰਵਿਰੋਧਂ ਕੁਜः ਕੁਰੂਤੇ ॥ ੬ ॥

ਛਰਣਾਈ ਮਾਣੁਸਨੇ ਪੋਤਾਨੀ ਰਾਸ਼ਿਥੀ ਗਣੁਤਾਂ ਪਛੇਲੇ, ਚਾਥੀ,
ਪਾਂਥਮੋ, ਬਾਰਮੋ, ਸਾਤਮੋ, ਆਠਮੋ, ਨਵਮੋ, ਬੀਜੇ ਅਨੇ

(५)

દ્ધભો ભંગળ આવે તો તે નેષ્ટ જાણવો. તેતું કુણ નીચે
પ્રમાણે; માનસિક વ્યાધિનો વધારો, પરંહેશ ગમન તથા ભિન્નો-
ની સાથે વિરોધ કરાવે છે. ૬.

॥ અથ બુધફળમ् ॥

લાભે દ્વિ ષષ્ઠે દશમે ચતુર્થે
રંગે બુધશ્રાપિ કરોતિ લાભમ् ॥
સૌમાગ્યસૌર્ખ્યં મનસોऽપિ હર્ષ
ચાર્થાગમં કાંતિવિવર્ધનં ચ ॥ ૭ ॥

હરડોધ માણુસને પેતાની રાશિથી ગણુતાં અગીઆર્ભો,
ખીઅલો, છાંદો, દ્ધભો, ચોથો અને આઠભો. બુધ આવે તો તે
શ્રેષ્ઠ જાણવો. તેતું કુણ નીચે પ્રમાણે; લાલ કરે, ભાગ્યનો
ઉદ્ય, સુખ, મનને વિષે આનંદ, ધનની પ્રાપ્તિ તથા કાતિનો
વધારો કરે છે. ૭.

જન્મ દ્વાદશ પંચમેઽપિ નવમે વ્યૂને તૃતીયેઽપિવા
સૌર્ખ્યસ્યાપિ વિનાશનં પ્રકુરુતે દ્વાર્યાર્થહાનિંબુધઃ ॥
ભ્રાતુશ્રાપિ વિરોધ શોચનભયં ચાંગેપિ કષ્ટ મહત
નાનાશત્રુભયં સદૈવમસુખં વ્યાધિં વિયોગં તથા ॥

હરફાઈ ભાણુર ર્મે પોતાની રાશિથી ગણુતાં પહેલો, આરમો,
પાંચમો, નવમો, સાતમો અને ત્રીજે ખુધ આવે તો તે નેણ
અણુનો. તેનું કુણ નીચે પ્રમાણે; સુખનો નાશ, ધનની હાનિ
કરે છે. તેમજ ભાઈઓની સાથે વિરોધ, શોક, ભય, થરીરને
વિષે મહાન् કણ્ઠ, નાના પ્રકારના શત્રુઓનો ભય, નિરંતર હુઃખ,
વ્યાધ તથા વિયોગની પ્રાસિ કરે છે. ૮.

॥ અથ ગુરુ ફલમ् ॥

દ્વિ ધર્મે ચ લાને સુતે સસમે સ્યાત्
ગુરુલ્લભકારી ક્રયે વિક્રયેપિ ॥
પ્રતિષ્ઠાવિવૃદ્ધિં તથા બુદ્ધિવૃદ્ધિં
કરોત્યર્થલાભं સુખં સંપદશ્રી ॥ ૯ ॥

હરફાઈ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુતાં ખીજે, નવમો,
અગ્રીઆરમો, પાંચમો અને સાતમો ગુરુ આને તો તે શ્રીએ
અણુનો. તેનું કુણ નીચે પ્રમાણે; ક્ષયવિક્ષય (લહેણા ઢેણા)
માં લાલ કરે. પ્રતિષ્ઠાની વિરોધ વૃદ્ધિ તથા બુદ્ધિની વૃદ્ધિ તેમ-
જ ધનનેા લાલ, સુખ અને સંપત્તિની પ્રાસિ કરે છે. ૯.

દ્વાદશ દશમ ચતુર્થો જન્મનિ ષષ્ઠાષ્ટમે તૃતીયેજ ॥
વ્યાધિં વિદેશ ગમનં મિત્રવિરોધં સુરાગુરુઃ કુરુતે ॥

હરકાદ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુતાં બારમો,
દથમો, ચાથો, પહેલો, ભુંડો, આઠમો અને નીંબો ગુરુ આવે
તો તે નેણું અણુંનો. તેનું કુળ નીચે પ્રમાણે; શરીરને વિષે
ધ્યાધિ, પરદેશ ગમન તથા મિત્રાની સાથે વિરાસત કરાવે છે. ૧૦

॥ અથ શુક્રફલમ् ॥

દ્વિર્મ લાભાષ્મગે સુતે ભ્યાત
વ્યયાખ્ય વનિઃ પ્રથમે ઽપિ શુક્રः ॥
ચતુર્થગશ્ચાપિ સમાગમં ચ
સત્પુત્રવર્ગાદિસુખં કરોતિ ॥ ૧૧ ॥

હરકાદ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુતાં બીજો, નવમો,
અગ્રીઆરમો, આઠમો, પાંચમો, બારમો, નીંબો, પહેલો અને
ચાથો શુક્ર આવે તો તે શ્રેણી અણુંનો. તેનું કુળ નીચે પ્રમાણે;
સર્વ ભાણુસોની સાથે મેળાપ કરાવે તથા સત્પુત્રાદિનો લાભ
અને સુખની પ્રાપ્તિ કરે છે. ૧૧.

કર્મ સસ રિપુગો શુભો સ્મર્તાં
રોગશોકમપિ દત્તવાન् ભૃગુઃ ॥
કાર્યનાશનમથો મહાગં
• સ્ત્રોવિરોધમંપિ રોગતાં સદા ॥ ૧૨ ॥

(८)

હરકાઈ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુતાં દ્યામેા,
સાતમેા અને છફો શુક આવે તો તે નેષ્ટ જણુનેા. તેનું ક્રિય
નીચે પ્રમાણે; શરીરને વિષે રોગ અને શોક ઉત્પન્ન કરે છે,
ધારેલા કાર્યનો નાશ, મહા વિપત્તિ, ખાની સાથે વિરોધ તથા
નિરંતર રોગીપણું પ્રાપ્ત કરાવે છે. ૧૨.

॥ અથ શનિ ફળમ् ॥

ત્રિષ્ટે ચ લાભે શનિશ્વાપિ સૌખ્યં
તતો લાભકારો હિરણ્ણાંબરાણિ ॥
નૃપાન્મિત્રપક્ષાજજયં ચાર્થલાભં
કરોત્યર્થલાભં સુખં સંપદંચ ॥ ૧૩ ॥

હરકાઈ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુતાં ત્રીજે, છફો
અને અગીઆરમેા શનિ આવે તો તે શ્રેષ્ઠ જણુનેા. તેનું
ક્રિય નીચે પ્રમાણે; સુખ, સુવળું અને વસ્ત્રનો લાભ, રાજ
અને અત્ર પક્ષથી જય, ધનની પ્રાપ્તિ તથા સુખ અને
સંપત્તિ પ્રાપ્ત થાય છે. ૧૩.

દ્વાદશ જન્મ ચતુર્થ પંચાષ્ટદશ દ્વિસપ્ત નવમેડપિ ॥
સ્વજનેનાપિ કલહં દ્વયાર્થહાનિમર્કજઃકુરુતે ॥ ૧૪

હરડાઈ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુત્તાં ખારમો, પહેલો
ચાથી, પાંચમો, આઠમો, દશમો, બીજો, સાતમો, અને નવમો
થનિ આવે તો તે નેષ્ટ જાણુંબો. તેનું કુળ નીચે પ્રમાણે; સ્વજનો
અર્થાત્ કુદું બીજોની સાથે કલેશ તથા દ્રવ્યની હાની કરે છે.

॥ અથ રાહુફળમ् ॥

ઉપવયો પ્રથમે નવમે તમો
દિશતિં પુત્ર કલત્રધનાગમસ् ॥
દ્વિતીય પંચમરંધ્રમુનિસ્થિતો
હિબુકરિઃ^૧સ્થગતો મરણ ધ્રુવમ् ॥ ૧૫ ॥

હરડાઈ ભાણુસને પોતાની રાશિથી ગણુત્તાં તીજો, છોટો,
દશમો, અગ્નિચારમો, પહેલો અને નવમો રાહુ આવે તો તે
શ્રેષ્ઠ જાણુંબો. તેનું કુળ નીચે પ્રમાણે; પુત્ર, સ્ત્રી, અને ધનનો
લાભ પામે છે. તથા બીજો, પાંચમો, આઠમો, સાતમો,
ચાથી અને ખારમો રાહુ આવે તો તે નેષ્ટ જાણુંબો. તેનું કુળ
તે નિશ્ચય મરણ પ્રાપ્ત કરે છે. ૧૫.

૧ રાહુના કુળની અરાધર કેતુનું કુળ સમજવું.

(१०)

॥ अथ ह्रस्व शनिफलम् ॥

कल्याणी खलु दुःखदा रविसुनो राशौ चतुर्थष्टमे
 व्याधि बंधुविरोधदेशगमनं क्लेशं च चिंगाधिकम् ॥
 मृग्युश्वैव करोति चापिमनुजं दुःखानि वन्हर्भयं
 लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौसर्वदा ॥ १६ ॥

हरडाई भाषुसने पेतानी राशिथी गण्ठ तां शैथा अथवा
 आठमे। थनि आवे तो तेने हुःअ आपनारी। नानी पनेती
 ज्ञानवी, ते शरीरने विषे व्याधि, बांधवोनी। साथे विशेष,
 परदेश गमन, झलेश, अने अत्यंत चिंता उत्पन्न इरे, तेमन्न
 ते भाषुसने नाना प्रकारनां हुःओ, अग्निनो भय अने भृत्यु
 इरे छे तथा लोहादि शस्त्रनो भय, अने हुमेशां हुःअ इरे छे.

॥ अथ दीर्घ शनिफलम् ॥

राशौ द्वादश शीर्ष जन्म हृदये पादौ द्वितीयेशनिः
 नानाक्लेशकरोति दुर्जनभयं पुत्रान् पशून्पिङ्गनम् ॥
 हानिःस्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च सावारणं
 रामारिद्धयविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमेवाथवा ॥ १७ ॥

हरडाई भाषुसने पेतानी राशिथी गण्ठ तां थनि खारमे।

આવે તો ભાથાને વિષે પનોતી જાણુવી, પહેલો આવે તે ।
 છાતીને વિષે પનોતી જાણુવી તથા બીજો આવે તો પગને ।
 વિષે પનોતી જાણુવી. આ મોટી પનોતી જાણુવી ને સાડાસાત
 વર્ષ સુધી રહે છે. તેનું ઇણ-નાના પ્રકારના ફ્લેશ, નઠારા
 ભાણુસોથી ભય, પુત્ર અને પણુને પીડા કરે છે, તથા ચોથેએ
 અથવા આઠમો શનિ આવે તો તે નાની પનોતી જાણુવી તે અઢી
 વર્ષ સુધી રહે છે. તેનું ઇણ-ધનની હાની, ભરણું, પરદેશ-
 ગમન, સાધારણ સુખ તથા ઝી અને સમૃદ્ધિનો નાચ કરે છે.

અથ સર્વગ્રહાણાં ફલસ્ય નિયમઃ

રાશ્યાદિગૌ રવિકુજૌ ફલદૌ સિતેજ્યૌ
 મધ્યે સદા શશિસુતશ્રરમેઽબજમંદૌ ॥
 અધ્વાન્રવનિભયસન્મતિવસ્ત્રસૌર્યં
 દુ ખાનિ માસિ જનિભે રવિવાસરાદૌ ॥ ૧૮ ॥

પૂર્વની પેઠે અનુકૂળે ગણુતાં સૂર્ય અને ભાગ્ય રાશિ
 ઉપર આવ્યા પહેલા ઇણ આપે છે. શુક અને ગુરુ ચાંદિના
 મધ્ય ભાગ ઉપર આવ્યા પછીથી ઇણ આપે છે, યુધ હમેથાં
 ઇણ આપે છે. તથા ચંદ્ર અને શનિ અંતમાં ઇણ આપે છે.
 ફરહાઈ ભાણુસનો જત્તમ જે નક્ષત્રમાં થયો હોય તેજ નક્ષત્ર

के भिन्नाभां रविवारने द्विसे आवे तेज भिन्नाभां परहेश
करावे, सोभवारने द्विसे आवे तो अग्नेना लाल थाय, मंग-
जवारने द्विसे आवे तो अग्निनो लय थाय, युधवारने द्विसे
आवे तो श्रेष्ठ युद्धि थाय, गुडवारने द्विसे आवे तो वस्त्रनी
प्राप्ति थाय, शुक्रवारने द्विसे आवे तो सुष्पनी प्राप्ति थाय
तथा शनिवारने द्विसे आवे तो ते भिन्नाने विषे दुःखनी
प्राप्ति थाय छे. १८.

॥ अथ ग्रहाणां राशिभोगः ॥

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्धमासं तु मंगलः ॥
त्रयोदशगुरुश्चैव सपादद्विदिने शशिः ॥ १९ ॥
राहुरषादशान्मासान् त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः ॥
यथा राहुस्तथाकेतू राशिभुक्ताः प्रकीर्तिताः ॥ २० ॥

युध अने सूर्य दैरेक राशि उपर एक भिन्ना सुधी
रहे छे. मंगल होट भिन्ना सुधी रहे छे, शुक्र तेर भिन्ना
सुधी रहे छे, चंद्रमा सेवाये द्विसे सुधी रहे छे, राहु अढार
भिन्ना सुधी रहे छे तथा शनि तीस भिन्ना सुधी रहे छे.
जेवी रीते राहु अढार भास भोगने छे तेवौज रीते हेतु, पृथ्वी
अढार भास भोगने छे. १८-२०.

॥ अथ इनैश्वर पादविचारः ॥

जन्मेरसे रुद्र सुवर्ण पाद
 द्वि पंच नंदा रजतं शुभं च ॥
 त्रिसप्तदिक् ताप्रपदं वदंति
 चतुष्टमकर्दिति लोह कष्टम् ॥ २१ ॥

प्रथम के हिंसे शनि अद्वातो हेय ते हिंसे के राशिनो
 चंद्र हेय ते लेई निश्चय कर्या। बाद हरहोष माणुसने पेतानी
 राशिथी चंद्रनी राशि सुधी गणतां पहेलो, छहो अने अग्नी-
 आरभो चंद्र आवे तो सेताने पार्थे पनोती जणवी. भीजे,
 पांचभो अने नवभो चंद्र आवे तो इपाने पार्थे पनोती
 जणवी. त्रीजे, सातभो अने दशभो चंद्र आवे तो तांचाने
 पार्थे पनोती जणवी. तथा चोथा, आठभो अने बारभो चंद्र
 आवे तो लोढाने पार्थे पनोती जणवी तेषु अपनारीछे.

॥ अथ सुवर्णपादफलम् ॥

कुटुंबरोधं बहु रोग युक्तं
 क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम् ॥
 द्रव्यार्थं नाशं बहुलं करोति
 सुवर्ण पादे स्वजने विरोधम् ॥ २२ ॥

(१४)

सोनाने पाये धनोती घेठी होय तो ते कुटुंभमां विरोध,
नाना प्रकारना धणा रोगोथी युक्त तथा हमेशां इवेशनो
उद्य करे छे, तेमज धणा प्रकार द्रव्यनो नाश अने संघंधी
वर्गमां विरोध कराने छे. २२.

॥ अथ रौप्यपादफलम् ॥

व्यापारमुग्रं धनधान्य संपत्ति

महत्प्रतापो खलु राज्यमानम् ॥

तद्वर्षमध्ये सुख संपदासिः

स्यात्मंगलनि यदि रौप्यपादम् ॥ २३ ॥

इमाने पाये धनोती घेठी होय तो ते वेपारने विषे धण्डे,
लाल, धन धान्यनी संपत्ति, भोटा प्रताप, राज्य द्वार तरडीशी
भान, तथा ते वर्षने विषे सुख अने संपत्तिनी प्राप्ति अने
भंगण कार्यनी प्राप्ति करे छे. २३.

॥ अथ ताम्रपादफलम् ॥

अनंतलक्ष्मीः प्रकरोति लाभं

कलत्रपुत्रौ सुख संपदासिः ॥

लाभोदयंश्चैव करोति सौख्यं

ताम्रस्यपादो सुखदो भवन्ति ॥ २४ ॥

(१५)

तांचाने पाये पनोती बेठी होय तो । ते वाया । अङ्गारनी
क्षमभीनो । लाभ करे छे. सी अने पुन संबंधी सुखनी प्राप्ति,
लाभनो । उहय अने सुखनी प्राप्ति करे छे, अर्थात् तांचाने
पाये बेठेली पनोती सुखने आपनारी जाणवी. २४.

॥ अथ लोहपादफलम् ॥

शरीरपीडा रुधीर प्रकोपं
कलत्रपुत्रौ पशु पीडनं च ॥
व्यापार नाशं नृपति भयं च
ल्लोहस्यपादे निधनं भवन्ति ॥ २५ ॥

वाढाने पाये पनोती बेठी होय तो । ते शरीरने विषे अङ्गा,
इधिरनो । प्रेडाप, सी, पुन अने पशुने पीडा, व्यापारनो नाय,
राजनो । भय तथा मृत्यु करे छे. २५.

॥ अथ ग्रह दानानि ॥

ये खैचरा गोचरतोऽष्टवर्गाहशाक्रमाद्वाप्य-
शुभा भवन्ति ॥ दानादिना ते सुतरां प्रस-
न्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवच्मि ॥ २६ ॥
• ने सूर्यादि अहो गोचरथी अथवा अष्टक वर्गादी, अथवा

(१६)

દ્વારાઓના કભી અશુભ ક્રણ આપનારા હોય તો તે અહોનું દાનાદિક કરવાથી હમેંશા પ્રસન્ન રહે છે તેથી કરીને તે અહોની દાનવિધિ હાલમાં કહે છે. ૨૬.

॥ અથ સૂર્યદાનમ् ॥

માણિક્ય ગોધૂમસવત્સ ધેનુઃ કૌસુંભવસ્ત્રં ગુડહેમ-
તાસ્ત્રમ् ॥ આરક્તકં ચંદન પંકજં ચ વદંતિ દાનં
હિ પ્રદીપધામ્ને ॥ ૨૭ ॥

ભાષ્યેક, ધર્મ, વાષ્પાસહિત ગાય, રક્ત વન્ધ, જોળ,
સ્તુવર્ણ, તાંયુ, રક્તાચંદન તથા કભળ આ સર્વાનું દાન
સૂર્યના નિભિતથી કહેલું છે. ૨૭.

॥ અથ ચંદ્રદાનમ् ॥

સદ્ધશપાત્રસ્થિતતંડુલાંશ્ કર્પૂરમુક્તાફલ શુભ્રવસ્ત્ર-
મ્ય ॥ ગાવોપયુક્ત વૃષમં ચ રૌપ્યં ચંદ્રાય દદ્યાત વૃત-
પૂર્ણ કુમ્ભમ् ॥ ૨૮ ॥

વાંસના પાત્રમાં ભરીને ચોખા, ક્રૂર, મોતી, શૈત વન્ધ,
ગાય અથવા બળદ, ઝાપુ અને ધીનો ભરેલો ધડો આ સર્વાનું
દાન ચંદ્રના નિભિતથીઆપવું. ૨૮.

(१७)

॥ अथ भौमदानम् ॥

प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषारुणं चापि गुडं सुवर्ण-
म् ॥ आरक्तवस्त्रं कर्वत्पुष्पं ताम्रं हि भौमाय वदंति
दानम् ॥ २९ ॥

प्रवाण, धज्जं, भसुरनी दाण, लाल खण्ड, गोण, सुवर्णी,
रक्ता वस्त्र, करेण्याना कुल तथा कांसानुं पात्र आ सर्वनुं हा
भंगणना निभित्तथी कहेलुं छे. २६.

॥ अथ बुधदानम् ॥

चैलं च नीलं कलधौतकांस्यं मुद्राज्य गारुत्मक
सर्व पुष्पम् ॥ दासी च दंतो द्विरदस्य नूनं वदंति
दानं विधुनंदनाय ॥ ३० ॥

काणुं वस्त्र, सुवर्णी, इपुं, कांसानुं पात्र, भग, धी, पानुं,
सर्व जलनां पुष्प. दासी तथा हाथीदांत आ सर्व भुधना
निभित्तथी दान कहेलुं छे. ३०.

॥ अथ शुरुदानम् ॥

शर्करा च रजनी तुरंगमः पीतधान्यमपि पीत-

मंबरम् ॥ पुष्पराग लवणं स कांचनं प्रीतये सुखुरोः
प्रदीयताम् ॥ ३१ ॥

साक२, हण्ड२, धोडै, पीछुं धान्य (अणानी दाण), पीछुं
वस्त्र, पुष्परागभणि (पोधराज), भीहुं तथा सुवर्षु आ सर्व
गुइनी प्रीतिना अर्थे आपवुं. ३१.

॥ अथ शुक्रदानम् ॥

चित्रांबरं शुभ्रतस्तुरंगो धेनुं श्रवज्ञं रज तंसुवर्णम् ।।
सतण्हुलाज्योत्तम गंधयुक्तं वदंतिदानं भृगुनंद-
नाय ॥ ३२ ॥

चित्र विचित्र वस्त्र, धोणो धोडै, गाय, हीरा, इपुं, सुवर्षु,
चीआ, धी तथा सुगंधीवाणी सुभड आ सर्व दान सुडना
निभितथी कडेहुं छे. ३२.

॥ अथ शनिदानम् ॥

माषाश्च तैलं विमलेद्रनीलं तिलाकुलित्थामहिषी च
लोहम् ॥ सदक्षिणं चेति वदंति नूनं दुष्टाय दानं
रविनंदनाय ॥ ३३ ॥

अड६, तेल, नीलभणि, तल, कंग, लेंथ, क्वोहुं तथा
क्षिणी आ सर्व दान दुष्ट शनिना अर्थे कडेहुं छे. ३३.

॥ अथ राहुदानम् ॥

गोमेदरत्नं च तुरं मं च सुनीलचैलं नीलकंबलश्च ॥
तिलश्च तैलं खलुलोहमश्रं स्वर्भानवे दानमिदं
वदति ॥ ३४ ॥

गोमेदरत्न, काणो, घोडो, काञ्जुं वस, कांभणो, तख, तेल
तथा देहुं आ सर्व दान राहुना अर्थे कहेलुं छे. ३४.

॥ अथ वेतुदानम् ॥

वैद्वर्यरत्नं सतिलश्च तैलं सुक्रंबलं चेति मदो मृगस्य ॥
शस्त्रं च केतोः परितोषद्वेतो श्वागस्य दानं कथितं
मुनीन्द्रैः ॥ ३५ ॥

वैद्वर्यभिषि, तख, तेल, श्रेष्ठ कांभणो, कस्तुरी, शस्त्र तथा
घोडो आ सर्व दान डेतुना संतोषना अर्थे पंडितोअे कहेलुं छे.

॥ अथ ग्रहाणां नवरत्नानि ॥

माणिक्यं तरणं सुजानमवलं मुक्ताफलं शीतगो-
माहैयस्यच विद्रुपंमरकृतं सौम्यस्य गारु मक्म् ॥
देवेजयस्यच पुष्परागमसुरचार्यस्यवज्ञं शने-
रीलं निर्मलमन्ययोश्च गदितं गोमेदवैद्वर्यकम् ॥ ३६ ॥

सूर्यनी प्रीतिना अर्थे भाष्येक, चंद्रनी प्रीतिना अर्थे छે
भाती, मंगળनी प्रीतिना अर्थे प्रवाण, शुधनी प्रीतिना अर्थे
पानुः, शुइनी प्रीतिना अर्थे पोखराज, शुडनी प्रीतिना अर्थे
हीरा, शनिनी प्रीतिना अर्थे शुद्ध नीलभ, राहुनी प्रीतिना
अर्थे गोभेदभणि तथा डेतुनी प्रीतिना॥ अर्थे वैदुर्यभणि आ
प्रभाष्ये ने अહ नभलो होय ते अहनु नंग पहेरवाथी ते अह
पीडा करी शક्तो नथी. आ प्रभाष्ये नंगो धारणु करवानी शक्ति-
ना होय तो नीचे प्रभाष्ये धारणु करवाथी पथ शांति थाय छे.

॥ अथ ग्रहाणां अल्पमूल्यानिरत्नानि ॥

धार्यं तुष्ट्यै विदुमं भौमभान्वो

रूप्यं शुकेन्द्रोश्च हेमेन्दुजस्य ॥

मुक्ता सूरेलोहमकर्त्तमजेन

लाजावर्तःकीर्तिःशेषयोश्च ॥ ३७ ॥

मंगળ अने सूर्यनी प्रीतिना अर्थे प्रवाण, शुक अने
चंद्रनी प्रीतिना अर्थे इपु, शुधनी प्रीतिना अर्थे सेनु, शुइ-
नी प्रीतिना अर्थे भाती, शनिनी प्रीतिना अर्थे लोहु तथा
राहु अने डेतुनी प्रीतिना अर्थे लाजवर्त मणि धारणु करवानु
कडेहु छे. ३७.

अथ ग्रहाणां जप संख्या.

रवेःसप्तसहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैवतु ॥
 मौमेदशसहस्राणि बुधेचाष्टसहस्रकम् ॥
 एकोनविंशतिर्जीवेशुब्रे एकादशैवतु ॥
 त्रयोविंशतिमंदेवराहोरष्टादशैवतु ॥
 केतोःसप्तसहस्राणिजपसंख्याप्रकीर्तिता ॥

सूर्यादि अहोना ७५नी संख्या कहे छे. सूर्यना सात
 ७००० हजार, चंद्रमाना अग्नीआर ११००० हजार, भंग-
 णना दथ १०००० हजार, शुक्रना आठ ८००० हजार, गुडना
 आगणीस १६००० हजार, शुक्रना अग्नीआर ११०००
 हजार, शनिना तेवीस २३००० हजार, राहुना अटार
 १८००० हजार तथा केतुना सात ७००० हजार आ प्रभाष्ये
 सूर्यादि अहोनी ७५ संख्या कही छे.

॥ अथ दशाया दिनसंख्या माह ॥

रविदिननखसंख्या चंद्रमा व्योमबाणैः

क्षितितनयगजाश्वी चंद्रजः पद्मशराश्च ॥

शनिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणै-

र्नयनयुगं च राहुः सप्ततिःशुक्रसंख्या ॥ ३८ ॥

सर्वनी दशा वीस दिवसनी, चांद्रनी दशा पचास दिव-
सनी, भगवनी दशा अहोवीश दिवसनी, युधनी दशा छैपन
दिवसनी, शनिनी दशा छत्रीस दिवसनी, गुडनी दशा अहोवत
दिवसनी, राहुनी दशा ऐंताणीस दिवसनी तथा शुक्रनी दशा
सीतेर दिवसनी जाणुवी. ३८.

जन्मना विंशतिः सूर्ये तृतीये दश चंद्रमाः ॥
चतुर्थे भौम चाष्टै च षष्ठे वेद बुधस्तथा ॥ ३९ ॥
सप्तमे शनिर्दशश्चैव नवमेगुरुरष्टकम् ॥
दशमे विंशती राहुः शेषाः शुक्रदशास्मृता ॥ ४० ॥

हरकोई भाषुसने पेतानी राशिथी गणुतां जन्मना सू
र्यना वीस दिवस सुधी सूर्यनी दशा, तीज सर्वना दश दिवस
सुधी चांद्रनी दशा, चौथा सूर्यना आठ दिवस सुधी भगवनी
दशा, छह सूर्यना आर दिवस सुधी युधनी दशा, सातमा
सूर्यना दश दिवस सुधी शनिनी दशा, नवमा सूर्यना आठ
दिवस सुधी गुडनी दशा, दशमा सूर्यना वीस दिवस सुधी राहु-
नी दशा तथा आरमा सूर्यना संपूर्ण दिवस सुधी शुक्रनी दशा
कहेली छे. ३६-४०

॥ अथ दशाफलम् ॥

सुर्यो वित्तविनाशनं प्रकुरुते धर्मार्थलाभं शशी
 भौमः शस्त्रविघातरोगमरणं चंद्रात्मजः संपदम् ॥
 मंदो मंदगतिर्गुरुस्था विभवं राहुस्तथा बंधनं
 सर्वाभष्टफलप्रदो निगदितः शुक्रो दशासंस्थितः ॥

सूर्यनी दशा धनने। नाश करे, चंद्रनी दशा धर्म अने
 अर्थनी। लाभ करे, भंगणी दशा शस्त्रस्थी धा, रोग अने भरण
 करे, युधनी दशा सूपत्तिने। लाभ करे, शनिनी दशा भंडणति
 करे, गुडनी दशा वेष्वने। लाभ करे, राहुनी दशा वृधन करे
 तथा शुक्रनी दशा सर्व प्रकारनां ईष कृण आपनारी कही छे. ४१

॥ अथ गतवस्तु परिज्ञानपाह ॥

मेरे वृषे दिशोत्पूर्वे आमेयां मिथुने तथा ॥
 दक्षिणे कर्कटे ज्येयो नैऋत्यां मिंह ईक्षते ॥४२॥
 कन्यायामुत्तरेज्येयं प्रतीच्यां तुलवृश्चके ॥
 धने चैव तु वायव्यामुत्तरे मकरे घटे ॥
 मीने ईशामतो ज्येयस्तस्करो दिशि लक्षणम् ॥४३॥
 भेष तथा वृषभ लग्नभां ओवायेली वस्तु पूर्व दियाभां

गर्द छे, मिथुन लज्जनमां घोवायेली वस्तु अग्निष्ठाणुमां गर्द
छे, कर्क लज्जनमां घोवायेली वस्तु दक्षिण दिशामां गर्द छे, सिंह
लज्जनमां घोवायेली वस्तु नैऋत्य डोणुमां गर्द छे, कन्या लज्जन-
मां घोवायेली वस्तु उत्तर दिशामां गर्द छे, तुणा तथा वृश्चिक
लज्जनमां घोवायेली वस्तु पञ्चम दिशामां गर्द छे, धन लज्जनमां
घोवायेली वस्तु वायव्य डोणुमां गर्द छे, भक्त तथा कुंभ
लज्जनमां घोवायेली वस्तु उत्तर दिशामां गर्द छे तथा भीन ल-
ज्जनमां घोवायेली वस्तु इशान डोणुमां गर्द छे. आ प्रभाषे
चारनी दिशानुँ लक्षण् अणुवुँ. ४२-४३.

मेषे च ब्राह्मणश्चौरो वृषे च क्षत्रियो भवेत् ॥
मिथुने वैश्यश्चौरश्च कर्कटे शूद्र एव च ॥
सिंहे तु स्वजनश्चौरः कन्यायां च कुलांगना ॥४४॥
पुत्रो वा यदि वा भ्राता तुलायां तस्करो भवेत् ॥
वृश्चिके म्लेच्छ चौरस्याद्वार्या ड्रेया धनेऽपि च ॥४५॥
मकरे वैश्य श्लोरश्च कुंभे च मुषफस्तथा ॥
मीने भूमिगतं प्रोक्तं नान्यथा तस्करो भवेत् ॥४६॥
मेष लज्जनमां घोवायेली वस्तुनो चार ब्राह्मण् अणुवो,

वृषभ लग्नमां ओवायेली वस्तुनो। चार क्षत्रिय जाणुवो, भिथुन
लग्नमां ओवायेली वस्तुनो। चार वैश्य जाणुवो, कर्क लग्नमां
ओवायेली वस्तुनो। चार शूद्र जाणुवो, सिंह लग्नमां ओवायेली
वस्तुनो। चार पोतानो। माणस जाणुवो, कन्या लग्नमां ओवा-
येली वस्तुनो। चार कुण्ठी क्षी जाणुवी, तुणा लग्नमां ओवा-
येली वस्तुनो। चार पुन अथवा भाई जाणुवो, वृश्चिक लग्नमां
ओवायेली वस्तुनो। चार ऋत्येष्ठ जाणुवो, धन लग्नमां ओवा-
येली वस्तुनो। चार क्षी जाणुवी, भक्त लग्नमां ओवायेली
वस्तुनो। चार वैश्य जाणुवो, कुंभ लग्नमां ओवायेली वस्तुनो।
चार उंटर जाणुवो। तथा भीन लग्नमां ओवायेली वस्तु पृथ्वीमां
गढ़ि छे। आ प्रभाषे कडेवुँ, अन्यथा। चार होय नही। ४४-४६

॥ अथ पित्रादि दोषविचार ॥

पितृजनकृतदोषो दाहतृष्णापि चिंता

ज्वरमनशिरोऽर्ति मेषलग्नेऽङ्गपीडा ॥

द्विजवरकृतभोज्यं तर्पगं पिंडदानं

जलघटदिनपञ्च पिपलः पूजनीयः ॥ ४७ ॥

भेष लग्नने विषे प्रश्न आव ते। पितृआनो। होष जाणुवो;
तथौं शरीरने विषे दाह, तृष्णा, चिंता, ताव, उलटी तथा

માથાને વિષે પીડા વિગેરે શરીરની પીડા થાય છે; તેની શાંતિના ભાટે આખણું ભોજન, તર્ફણું, પીડદાન તથા પાંચ દિવસ સુધી એક ધડા પાણીથી પીપળાની પૂજા કરવાથી પિતૃઓના હોષની શાંતિ થાય છે. ૪૭

વૃષે ગોત્રદોષો જ્વરસ્તાપતૃષ્ણા
બલં નિર્બલં કર્ણનેત્રે વિકારઃ ॥
કૃતે શક્તિપાઠે ચ નૈવેદ્યદાને
કૃતે ક્ષીરહોમાદિકે રોગનાશઃ ॥ ૪૮ ॥

વૃષભ લભને વિષે પ્રશ્ન આવે તો જોત્રનો હોષ જણુવો.
તેથી કરીને શરીરને વિષે તાવ, ભનમાં પરિતાપ, તૃષ્ણા,
ખળનો નાશ તથા કાન અને આંખને વિષે વિકાર થાય છે;
તેની શાંતિના ભાટે સપ્તશતીનો પાઠ, નૈવેદ્યનું દાન તથા
ભીરનો હોમ વિગેરે કરવાથી રોગનો નાશ થાય છે. ॥૪૮॥

સદા દેવિ દોષો યદાયુગ્મલશ્રે
કટૌ ચ વ્યથા અંતર્મંગો ભ્રમશ્રા ॥
પિઃ સ્થાપનં પૂજનં પિંડદાનં
શાશ્વાદુર્ગુણુલઃશાપિ કુર્તાત ॥ ૪૯ ॥

(७)

भिथुन लभ्ने विषे प्रश्न आवे तो सर्वदा हेवीनो हाख
जाणुनो. तेथी करीने कडोने विषे पीडा, शरीरनुं भांगी जवुं
तथा भाभी जवुं विगोरे हुःख थाय छे; तेनी शांतिना भाटे
पीठनुं स्थापन, तेतुं पूजन, पींडान तथा एकसोने आठ
शुगणनी आहुती आपवाथी हेखनो नाश थैजय छे. ॥४६॥

कर्कोदये शाकिनी दोषमुग्रमजीर्णवातै-
मुख शीर्ष पीडा ॥ नैवेद्यदानंपयसापि
माषैर्घृतप्रदीपैः कृत दोषनाशम् ॥ ५० ॥

कृ लभ्ने विषे प्रश्न आवे तो शाकिनो. भडा भयं कर
हेख जाणुनो. तेथी करीने अल्लर्ण तथा वायुथी भुख अने
भाथाने विषे पीडा थाय छे; तेनी शांतिना भाटे धीनो दीवो
करी हूँध अने अडाना नैवेद्यनुं हान करवाथी ते हेखनो नाश
थै जय छे. ॥५०॥

सिंहोदये प्रेत मलीन दोषो

अग्निप्रकोपं वमनातिसारम् ॥

• **दर्मैः कृतं पूतलिका विधानं**
भोज्यं कृतं पिंड तिलर्त्पणं च ॥ ५१ ॥

(२८)

सिंह लभने विषे प्रश्न आवे तो भलिन अवाप्रेतनो हो।
ज्ञानो तेथी करीने अभिनो प्रकाप, उलटी तथा अतिसार
(आडाने रोग) थाय छे; तेनी शांतिना भाटे दर्शकी खुतख
विधान करी ध्राक्षण भोजन, पिंडदान तथा तिलनु तर्फाणु
करवाथी हो। ज्ञानी शांति थाय छे. ॥ ५१॥

कन्याविलग्नेकृतकर्मदोषः

प्रलापमर्ढ्यभ्रमदाहतापम् ॥
षडांगजाप्यं दशमांशहोमं ।

कृताभिषेको खलुदोषनाशः ॥ ॥ ५२ ॥

कन्या लभने विषे प्रश्न आ०युं होय तो कर्मनो हो।
ज्ञानो. तेथी करीने प्रकाप (खु खडवाद) भूर्धा, भ्रम,
दाह अने परिताप थाय छे; तेनी शांतिना भाटे शिव पंचा-
क्षर भंतनो ज्ञप, तेनो दशमांश होम तथा अभिषेक करा-
ववाथी निश्चय हो। ज्ञानो नाश थाय छे. ५२

तुले क्षेत्रपालः कृतोदोषदुष्टो

ज्वरं चांग पीडा तथा नेत्ररक्तम् ॥
घृतैरक्तं पुष्पैश्च सिंदुरयुक्तं

द्विजेद्रायदानं तिलामाष लोहम् ॥ ५३ ॥

તुલા લમ્બને વિષે પ્રશ્ન આવ્યું હોય તો ક્ષેત્રપાળ
સખંધી દુષ્ટ દોષ જણુંનો. તેથી કરીને તાવ, શરીરને વિષે
પીડા તથા રક્ત નેત્ર થાય છે; તેની શાંતિના ભાટે ધી, રક્ત
પુષ્પ, સિંદ્ર, તલ અને લોહું આ સર્વ દાન પ્રાણણુંને
આપવાથી દોષની શાંતિ થાય છે. ૫૩

**વैતાલદોષોऽલિ લમ્પેપ્રકુર્યાત्
જ્વરં પ્રલાપો ભ્રમનેત્ર પીડા ॥**

તસ્યા વિધાનં કરવીર પુષ્પં

સતાષ્ટાહુતિર્ગુલસ્ય પ્રકુર્યાત् ॥ ૫૪ ॥

વૃથિક લમ્બને વિષે પ્રશ્ન આવ્યું હોય તો વैતાળનો દોષ
જણુંનો. તેથી કરીને શરીરને વિષે તાવ, બહુ બકવાદ, ભ્રમ
તથા આંખોને વિષે પીડા થાય છે; તેની શાન્તિના ભાટે તેનું
વિધાન કરી કરેણુંના પુષ્પ સહિત એકસોને આઠ ગુગળની આ-
હુતી આપવાથી દોષનો નાશ થઈ જય છે. ૫૪

મહામારિ દોષો ધનેચૈવ લગ્ને

શર્વેં ચ પીડા જ્વરોગાત્રભર્ગમ् ॥

• તસ્માત् કૃતં પૂતલં ક્ષેત્રપાલં

ચંડી વિધાનં કૃતદોષનાશः ॥ ૫૫ ॥

૩

ધન લગ્નને વિષે પ્રશ્ન આવ્યું હોય તો મહામારીનો
હોષ જણુંબો. તેથી કરીને ભાથાને વિષે પીડા, તાવ તથા
શરીરનો ભંગ થાય છે; તેની શાંતિના ભાટે પુતળું કરી, ક્ષેત્ર-
પાળની પૂજા કરી તથા ચંડીનું વિધાન કરવાથી થયેલા
હોષનો નાશ થઈ જય છે. ૫૫.

મૃગો માર્ગિણી રેફણી ક્ષેત્રપાલઃ
સદા નેત્ર ભંગો જ્વરો દેહભંગમ् ॥

કૃતં પૂતલં રક્તપુષ્પૈર્યુતં ચ
કૃતસ્નાન રૂદ્ધીકૃતો દોષનાશः ॥ ૫૬ ॥

મફર લઘુમાં પ્રશ્ન આવ્યું હોય તો માર્ગિણી, રેખણી
તથા ક્ષેત્રપાળનો હોષ જણુંબો. તેથી કરીને હમેશાં નેત્રને વિષે
પીડા, તાવ અને શરીરનો ભંગ થાય છે; તેની શાંતિના ભાટે
પુતળું કરી રક્ત પુષ્પથી પૂજા કરી તથા ઇદ્રાભિષેક કરવાથી
હોષનો નાશ થાય છે. ૫૬

ઘટે પૂર્વજો ગોત્ર દેવ્યાદિ દોષો
જ્વરોદ્રેગ શોકાતિસારં તથૈવ ॥

(३१)

जलं पिप्पले दियते पिंडानं
तिलंतर्पणं ब्रह्मोज्यादिकं च ॥ ५७ ॥

કुंभ लभेमां प्रश्न आव्युं होय तो पूर्वज अथवा गोत्र
हेत्याहिनो होप जखुवो, तेथी करीने ताव, चिंता, शोष तथा
अतिसार थाय छे; तेनी शांतिना भाटे पींपणे पाखु रेडी,
पींडान आपी, तल तर्पणे करीने आकाश भोजन कराव-
वाथी थांति थाय छे. ५७

मीने शाकिनी कर्कशो दोषउग्रः
हादि जाठरे दाहपीडा ज्वरश्च ॥
कृतं पारणं ब्रह्मोज्यादिकं च
सताष्टाहुतिर्गुगुलस्य प्रकुर्यात् ॥ ५८ ॥

भीन लभने विषे प्रश्न आव्युं होय तो कठीश शाहिनीमो
भयं कर होप जखुवो, तेथी करीने छातीचे तथा पेटम्हुं दाहनी
पीडा अने ताव आवे छे; तेनी शांतिना भाटे आकाश भोजन
तथेडी सहित गुगणनी एकसो ने आठ आहुती आपवाथी
होपनो नाथ थध जय छे. ५८

॥ अथ नवग्रहस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महा-
शुनिम् ॥ तमोर्ग्नि भर्वपापद्वं प्रणतोर्ग्निम् दिवाकरम् ॥ १ ॥ दधि-
शं ग्वतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् ॥ नमामि शशिनं सोयं शंभो-
म्बुकुटभूषणम् ॥ २ ॥ धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ॥
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥ पियं गुकलिका-
इयामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ॥ सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं
प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ देवानां च कृष्णीणां च गुरुं काश्चनसंभि-
भम् ॥ बुद्धिभूतं त्रिलोकशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५ ॥ हिमकुंदमूणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ॥ सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं
प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ॥
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥ अर्धकायं
महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ॥ सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं
प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ॥
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥ इति व्यास-
मुखोद्भीतं यः पठेत्सुममाहितः ॥ दिवा वा यदि वा गत्रौ
विद्यशान्तिर्भविष्यति ॥ १० ॥ नरनारीनृपाणां च भवेदुःस्व-
ग्रनाशनम् ॥ ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥ ११ ॥
ग्रहनक्षत्रज्ञाः पीडासनस्कराग्नि समुद्दवाः ॥ ताः सर्वाः प्रशमं
यान्ति व्याप्तो ब्रूते न संशयः ॥ १२ ॥ .

॥ इति श्रो व्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

त्रियार द.

त. १२ छ.

कर्मकांड नो अहितीय अंथ.

पौराण कर्मवीपिका.

ज्ञेयी वृद्धावा वरचितम्

या काव्यामां हे माद्रिकापा, इश्वरस्तान, अहितीयि,
ग्राहन, भवुपद, निवा संस्कार, ज्ञायु प्रस्तव, एवं देवस्थानि,
ज्येष्ठाशानि, भूगर्भानि, व्यतीभातस्थानि, वास्तुस्थानि, नवअ-
ठारपात्मकप्रयोग, एवं अज्ञाहित नवयदीना भवति, मृत्युंजय-
वर्परिचि, भूत्युर्दीप्ति, ग्राम, लघुरस्त्रयोग, उपेक्षात्वा उद्घापन,
पुराणात्मसास वा प्राप्त, लूट्याट उद्घापन, अंगापूजन, आशी-
नी नामारणी, दारदा, वेदाशास्त्र आद्य विजेते संप्राप्त, अयो-
द्धाशाखाद्य, तथा वा
आपवामां अ, वा छ.
तेवा हड्डावे गुजराती
यजमानधारा करने वा
विद्वान्नोन्न गते वा

तमज्ज्वले उदाशु स्वयंजले ना गते
वीपो आपवामां आवी छ, तेथा कीर्ते
१.२ वाङ्माने, पिपाथर्थिम्बिने तथा अ-
३.४ अव्यादा वैष्णव उ.

कृ. अक इर्दीना.

१. अनि उ व्याना.

प्रदेश अवेदवादी उभेदवादी.

कुर्सेसर, दीना, १—अमावासा।

